लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

‘वन्दे मातरम्’

अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

30वां अंक

2024-25

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल, ट्रेज़री बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

गणतंत्र दिवस-2025 के अवसर पर कार्यालय में ध्वजारोहण कार्यक्रम के दौरान उच्च अधिकारीगण।

सत्यमेव जयते

हिन्दी गृह पत्रिका

'वन्दे मातरम्'

Supreme Audit Institution of India
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'वन्दे मातरम्'

तीसवाँ (30वां) अंक

2024-25

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका परिवार

संरक्षक

- **श्री अनिंद्य दासगुप्ता**
  महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल

परामर्शदातृ समिति

- **श्री अलतमश ग़ाज़ी**, उपमहालेखाकार (पेंशन एवं प्रशासन)
- **श्री शम्भु दयाल**, उप महालेखाकार (निधि)
- **श्री रितेश कुमार**, उप महालेखाकार (लेखा एवं वीएलसी)
- **श्री रेबती रंजन पोद्दार**, व. लेखा अधिकारी (प्रशा. हिंदी सेल)

संपादक

- **श्री अरुण कुमार**, सहायक निदेशक (राजभाषा)

उप-संपादक

- **श्री आशीष कुमार**, कनिष्ठ अनुवादक

सहायक

- **श्री अतुल कुमार**, सहायक लेखा अधिकारी
- **श्री राकेश भारती**, वरिष्ठ अनुवादक
- **श्री अमित कुमार**, वरिष्ठ लेखाकार
- **श्री सचिन प्रसाद**, कनिष्ठ अनुवादक
- **श्रीमती सुनीता राउत**, एमटीएस

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते हैं।

श्री अनिंद्य दासगुप्ता
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल

संदेश

हिंदी गृह पत्रिका 'वन्दे मातरम्' का 30वां अंक राजभाषा हिंदी के प्रति सभी कार्मिकों की निष्ठा को प्रदर्शित करता है। इस अंक में शामिल रचनाओं के अनुशीलन से ये बात स्पष्ट होती है कि परस्पर सहयोग के माध्यम से कार्यालय में राजभाषा हिंदी में कामकाज को राजभाषा विभाग और मुख्यालय की अपेक्षानुसार व्यवहार में लाया जा सकता है। इस अंक की सभी रचनाएँ विविध और व्यक्तिगत अनुभवों को सामासिक रूप से प्रस्तुत करती हैं।

'वन्दे मातरम्' के 30वें अंक के प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों और सम्पादक-मण्डल को ढेर सारी बधाई। आशा करता हूँ कि ये अंक राजभाषा हिंदी की प्रगति में सहायक सिद्ध होगा।

आगामी अंकों की उत्कृष्टता हेतु आप सभी की टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत है।

श्री अलतमश ग़ाज़ी
उप महालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि कार्यालय की गृह पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के 30वें अंक का सफल प्रकाशन हो रहा है। इस अंक की सभी रचनाएँ अलग-अलग सामाजिक परिप्रेक्ष्य को पाठकों के सम्मुख लाती हैं। ये सभी रचनाएँ हमारे जीवन-अनुभव से सार्थक संवाद करती हैं। 'वन्दे मातरम्' के 30वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल और सक्रिय भूमिका के लिए सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

आशा है कि आप सभी पाठकगण अपनी टिप्पणियों और सुझावों से पत्रिका के आगामी अंकों को उत्कृष्ट बनाने में सहयोग करेंगे।

अरुण कुमार
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादकीय

अत्यन्त प्रसन्नता एवं गर्व की बात है कि वर्ष 2024-25 के लिए हमारे कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के 30वें अंक का सफल प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के सभी रचनाकारों, संपादक मंडल के सदस्य एवं राजभाषा सहयोगियों को बहुत–बहुत धन्यवाद। पत्रिका के सफल प्रकाशन में समय-समय पर परामर्शदातृ समिति के सदस्यों का बहुमूल्य सुझाव प्रेरणादायक रहा है।

राजभाषा हिंदी की प्रचार-प्रसार में, उत्तरोत्तर प्रयोग एवं विकास में 'वन्दे मातरम्' पत्रिका का महत्वपूर्ण स्थान है। कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी में सृजनात्मक लेखन प्रतिभा का विकास करने में गृह-पत्रिका की जितना अधिक प्रशंसा की जाए, कम है। पत्रिका हमारे कार्यालय की स्मारिका के रुप में एक अमूल्य धरोहर है। पत्रिका जहाँ एक ओर राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं विकास में सहायक सिद्ध हो रही है, वहीं दूसरी ओर बंगाल की सांस्कृतिक विरासत से परिचित होने का भी एक माध्यम है। पत्रिका में मुद्रित संदेश, विविध प्रकार की रचनाएँ राजभाषा संबंधी प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित कराने में एवं राजभाषा के उत्तरोत्तर, दिनानुदिन विकास में सफल साबित हो रहे हैं।

वर्ष में पत्रिका के दो अंक प्रकशित होना ही हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा के प्रति निष्ठा एवं समर्पण को प्रदर्शित करता है। हिंदीतर भाषी क्षेत्र होने के बावजूद सभी रचनाकारों ने अपनी विद्वता का परिचय दिया है। गृह-पत्रिका कार्य़ालय के कार्मिकों के लिए एक ऐसा सरल एवं सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा वे अपनी लेखन प्रतिभा निखारते हैं और अपने अतिरिक्त समय का सदुपयोग रचनाओं के सृजन में करते हैं।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ को आकर्षक एवं मनमोहक बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। वर्तमान अंक के आवरण पृष्ठ पर सुप्रसिद्ध कुम्भ स्नान एवं गंगासागर स्नान के सुन्दर दृश्यों को शामिल किया गया है। कार्यालय में समय-समय पर आयोजित होने वाले विविध कार्य़क्रमों की झलकियों को भी प्रकाशित किया गया है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में वन्दे मातरम् पत्रिका हमेशा प्रगति की राह में रश्मि बिखेरती रहे, यही हमारी कामना है। मैं अपने समस्त पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ तथा पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ। पाठकों के बहुमूल्य सुझाव एवं मार्गदर्शन का हृदय से स्वागत है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

जय हिंद, जय हिंदी।

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक- हि.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2024-25/1/820116/2024 दिनांक:17-12-2024

सेवा में

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(प्रशासन हिंदी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001

विषय:- अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "वन्दे मातरम्" के 29वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित "वन्दे मातरम्" के 29वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर सुश्री सौमी बंदोपाध्याय की "महिला सशक्तिकरण" श्री धनेश कुमार की "आखिरी सफर(शमशान)" एवं श्री कौशल कुमार की "टूटी चप्पल" आदि रचनाएँ अत्यंत मनोहर हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय

EKTA
(हिंदी अधिकारी)

Digitally signed by
Ekta
Date: 17-12-2024 14:45:02

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 84 दिनांक 11.12.2024

प्रति,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन हिन्दी सेल)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पश्चिम बंगाल

विषय : अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "वन्दे मातरम्" के 29वें अंक की पावती बाबत।
संदर्भ : आपके पत्र संख्या:पीएजी.ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/05/वं.मा./14/2024-25/177 दिनांक 15.10.2024 ।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "वन्दे मातरम्" के 29वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर बलिदान, जाने कहाँ गए वो दिन..., हिन्दी हमारी स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा, अजामिल-वो पापी जिसने स्वर्ग प्राप्त किया, आखिरी सफर (शमशान), डीपफेक, एस्पिरेंट, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

महालेखाकार (ले0 एवं ह0) का कार्यालय
बीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार - 800001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIRCHAND PATEL PATH PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/Letter No.:- हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाव/24-25/94
दिनांक/Date:- 16.12.2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन हिंदी सेल,
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.) पश्चिम बंगाल,
कोलकाता-700001

विषय: कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 29वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "वंदे मातरम्" के 29वें अंक की सॉफ्ट कॉपी हमें प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका विभिन्न विधाओं में लिखी गई स्वरचित रचनाओं का सुंदर संग्रह है, जिसमें संस्मरण, लेख, कविताएँ आदि शामिल हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सुनील कुमार
हिंदी अधिकारी/हिंदी अनुभाग

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Principal Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001

स.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/20/2024-25/जा.क. दिनांक: /11/2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "वंदे मातरम" के 29वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम" के 29वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं |

क्र	नाम	रचनाएँ
1.	श्री अतुल प्रकाश, महालेखाकार	यात्रा वृतांत
2.	सुश्री सौमी बंदोपाध्याय, स.ले.अ.	महिला सशक्तिकरण
3.	श्री पंकज कुमार, वरि.लेखाकार	समोसा भारत का स्नैक्स सम्राट
4.	सुश्री प्रियंका संजीव सिंह, क.अनुवादक	मौन स्वीकृति
5.	सुश्री तापसी आचार्य बसाक, स.ले.अ.	काव्य सुधा

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन से जारी)

भवदीय,
हस्ता./-
प्रभारी हिंदी अधिकारी

आपके पत्र

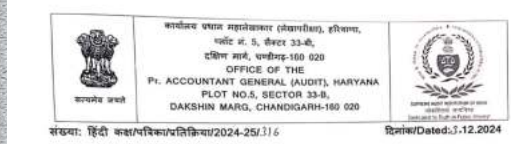

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

सत्यमेव जयते

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2024-25/316 — दिनांक/Dated:3.12.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(प्रशासन हिंदी सैल)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

विषय - अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "वन्दे मातरम्" के 29वें अंक का प्रेषण

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "वन्दे मातरम्" की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा और विषयों का प्रस्तुतीकरण अत्यंत सुन्दर है। पत्रिका की सभी रचनायें सराहनीय और संग्रहणीय है। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय व्यय),
ऑडिट भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली–110002

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL
OF AUDIT (CENTRAL EXPENDITURE),
AUDIT BHAWAN, INDRAPRASTHA ESTATE,
NEW DELHI-110002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2024-25/831 — दिनांक: 06.01.2025

सेवा में

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(प्रशासन/हिन्दी सेल)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ट्रेजरी बिल्डिंग, नं.2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता – 700 001.

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "वंदे मातरम" के 29वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक 20.11.2024 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका **"वंदे मातरम"** के 29वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री सोनू कुमार-II का "डीपफेक", श्री संजय कुमार का "हिन्दी-हमारी स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा", श्री पंकज कुमार का "समोसा:भारत का स्नैक्स सम्राट" एवं श्री कौशल कुमार का "टूटी चप्पल" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त श्री धनेष कुमार की "आखिरी सफर (शमशान)" एवं श्री अभिजित दत्ता की "मोबाईल युग" कविता पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

हिंदी अधिकारी

दूरभाष /Telephone :91-11-23702422, फैक्स / Fax : 91-11-23702271, ई-मेल /E-mail : dgace@cag.gov.in

Admin/HindiCell/SammatiseSambandhit/ 1/845643/2025

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
361, अण्णा सलाई, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI- 600 018
वेबसाइट/Website: https://cag.gov.in/ae/tamil-nadu/en ई-मेल/Email: agaetamilnadu@cag.gov.in
IVRS Phone No.: 044-24325050, टेलीफोन नं/Phone No.: 044-24324500, फैक्स नं/Fax No.: 044-24320562

स. प्रमले/हिंदी कक्ष/प्रशंसा पत्र/2024-25/35355 — दिनांक 28.11.2024

सेवा में,	To,
हिंदी अधिकारी ,	The Hindi Officer,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),	Office of the Accountant General (A&E),
पश्चिम बंगाल,	West Bengal,
ट्रेजरी बिल्डिंग, कोलकाता - 700 001	Treasury Building, Kolkata - 700 001
ईमेल: arunk.bih.ae@cag.gov.in	E-mail: arunk.bih.ae@cag.gov.in

विषय: आपकी हिंदी गृह-पत्रिका "वंदे मातरम" के 29वें अंक की पावती- के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह-पत्रिका "वंदे मातरम" के 29वें अंक की प्राप्ति हुई। सधन्यवाद। पत्रिका का कलेवर बंगाल की प्रकृति, संस्कृति और समृद्ध विरासत को दर्शाता है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च स्तर की हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। विशेषकर **"बलिदान", "हिंदी हमारी स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा", "आखिरी सफर", "स्क्रीन में उलझा बचपन", "जीवन का नया अध्याय", "टूटी चप्पल", "भ्रमण: स्टैच्यू ऑफ यूनिटी" और "मोबाइल युग" सराहनीय हैं।** राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में आपकी पत्रिका अहम् भूमिका निभा रही है।

'अमृत' पत्रिका परिवार की ओर से सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उतरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), मध्य प्रदेश
ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिंदी कार्यान्वयन कक्ष/सम्मति/जावक- — दिनांक:13-01-2025

प्रति,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन, हिंदी सेल),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता ।

विषय – हिंदी पत्रिका 'वन्दे मातरम' के 29वें अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'वन्दे मातरम' के 29वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है । एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है । पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट है । पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय, रोचक एवं उच्चकोटि की है, जिसके लिए सभी रचनाकारों को साधुवाद । सुश्री आस्था गुप्ता द्वारा रचित कहानी 'पछतावा', सुश्री प्रियंका संजीव सिंह द्वारा रचित कहानी 'मौन स्वीकृति', श्री अभिजीत दत्ता द्वारा रचित कविता 'मोबाइल युग' एवं श्री धनेश कुमार द्वारा रचित कविता 'आखिरी सफर (शमशान)' सराहनीय है ।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई ।

भवदीय,

SANJEEV KUMAR JHANJI
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना का नाम	रचनाकार का नाम (सर्व सुश्री / श्री)	पदनाम	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	हमारा नया संसद भवन	जितेंद्र शर्मा	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	1
2.	डिजिटल अरेस्ट: एक कॉल का खेल	आरती शर्मा	लेखाकार	लेख	5
3.	हिंदी	अरुण कुमार	सहायक निदेशक (राजभाषा)	लेख	9
4.	शारदा सिन्हा: लोकगीतों की सरस्वती	संजय कुमार	डीईओ	कहानी	13
5.	मानवाधिकारों की महत्ता	आशीष कुमार	कनिष्ठ अनुवादक	निबंध	16
6.	चलो एक बार फिर से	रेबती रंजन पोद्दार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	लेख	20
7.	दारू ब्रह्म	तापसी आचार्य (बसाक)	सहायक लेखा अधिकारी	कहानी	24
8.	अंडमान यात्रा	सौमी बंद्योपाध्याय	सहायक लेखा अधिकारी	यात्रा-वृतांत	28
9.	सोशल मीडिया के प्रभाव	सुमित कुमार बर्णवाल	एमटीएस	लेख	32
10.	अनोखी दोस्ती	प्रियंका संजीव सिंह	पूर्व कनिष्ठ अनुवादक	कहानी	34
11.	क्या हफ्ते में 70 घंटे काम करना सेहतमंद है?	अतुल कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	38
12.	भारत की विविधता	सुभाष चंद्र मंडल	लेखाकार	लेख	40
13.	आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस की चुनौतियाँ	सुस्मिता सरकार	वरिष्ठ लेखाकार	लेख	42
14.	विकास	शिवम सिन्हा	आशुलिपिक	लेख	46
15.	मित्रता	नीति मुकेश गौरव	डीईओ	संस्मरण	49
16.	मेरे गाँव का सफर	राजेश कुमार	डीईओ	लेख	52
17.	प्रेरणा की स्याही	अनिल कुमार	लेखाकार	कहानी	54
18.	जल संरक्षण शपथ-ग्रहण	राकेश भारती	वरिष्ठ अनुवादक	कहानी	57
19.	उजाले की ओर	अमित कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	कहानी	61
20.	सोशल मीडिया: बच्चों के संदर्भ में	सचिन प्रसाद	कनिष्ठ अनुवादक	लेख	65
21.	नोटिफिकेशन	अंकित कुमार झा	लेखाकार	लेख	69
22.	तारापीठ दर्शन: एक सुखद अनुभूति	सुनीता राउत	एमटीएस	यात्रा-वृत्तान्त	71
23.	चाह मुस्कुराहट की	कौशल कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	कविता	73
24.	जिंदगी का तो यही आलम है	सत्यम कुमार	डीईओ	कविता	74
25.	दो कविताएं	चंद्रशेखर भगत	पर्यवेक्षक	कविता	75
26.	ये नववर्ष हमें स्वीकार नहीं	संध्या कुमारी	पत्नी:राजेश कुमार, डीईओ	कविता	77
27.	वन्दे मातरम्	तुषार बरन मारिक	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	कविता	78

हमारा नया संसद भवन

स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के दौरान एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा नया संसद भवन, विनायक दामोदर सावरकर की जयंती 28 मई, 2023 को राष्ट्र को समर्पित किया गया। भारतीयों द्वारा अभिकल्पित और निर्मित यह उत्कृष्ट भवन सम्पूर्ण देश की संस्कृति, गौरव एवं उमंग को समाहित करता है और एक बड़े संसद भवन की, भारतीय लोकतंत्र की दीर्घकालिक आवश्यकता (जहाँ भविष्य में सीटों और संसद सदस्यों की संख्या में वृद्धि होनी है) की पूर्ति के लिए तैयार है। सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास परियोजना (Central Vista Redevelopment Project) के एक भाग के रूप में विकसित नया संसद भवन, संसदीय कार्य में अवसंरचनात्मक बाधाओं को दूर करने का प्रयास है। प्रधानमंत्री ने नए संसद भवन के अवसर पर अंग्रेजों से भारत को सत्ता हस्तांतरण के प्रतीक 'सेन्गोल' (Sengol) को भी स्थापित किया।

नए संसद भवन की आवश्यकता -

आँकड़ों के अनुसार वर्ष 1927 में निर्मित मौजूदा संसद भवन को एक पूर्ण लोकतंत्र के लिए द्विसदनीय विधायिका को समायोजित करने हेतु डिजाइन नहीं किया गया था। वर्ष 1971 की जनगणना पर आधारित परिसीमन के साथ लोक सभा सीटों की संख्या 545 निर्धारित किए जाने के बाद से संसद भवन में बैठने की व्यवस्था तंग और बोझिल हो गई थी। संयुक्त सत्रों के दौरान बैठने की सीमित क्षमता समस्या को और गम्भीर बना देती थी। इसके अलावा, आवागमन के लिए जगह की कमी उल्लेखनीय सुरक्षा जोखिम उत्पन्न करती थी। वर्ष 2026 के बाद समस्या में व्यापक वृद्धि होने की सम्भावना थी, क्योंकि सीटों की कुल संख्या पर रोक वर्ष 2026 तक के लिए ही लागू है।

वर्ष 1927 में निर्मित पिछला संसद भवन, लगभग एक शताब्दी पुरानी विरासत है, जो हेरिटेज ग्रेड-1 इमारत है। समय के साथ संसदीय गतिविधियों और उपयोगकर्ताओं में पर्याप्त वृद्धि के साथ इस भवन की आयु और सीमित अवसंरचना अब जगह, सुविधाओं एवं प्रौद्योगिकी के सन्दर्भ में वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाती थी। हेरिटेज ग्रेड-1 में राष्ट्रीय या ऐतिहासिक महत्व के ऐसे भवन और परिसर शामिल हैं, जो स्थापत्य शैली, डिजाइन, प्रौद्योगिकी एवं भौतिक उपयोग या सौन्दर्य में उत्कृष्टता रखते हैं। वे किसी महान ऐतिहासिक घटना, व्यक्तित्व, आन्दोलन या संस्थान से सम्बद्ध हो सकते हैं। वे इस भू-भाग के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल या लैंडमार्क रहे हैं। सभी प्राकृतिक स्थल भी ग्रेड-1 के अन्तर्गत शामिल होते हैं।

तदर्थ निर्माण और संशोधनों ने संसद भवन के बुनियादी ढाँचे पर दबाव बढ़ाया था। जल आपूर्ति, एयरकंडीशनिंग और सीसीटीवी कैमरों जैसी आवश्यक सेवाओं को जोड़े जाने से समस्या उत्पन्न हुई थी जिसने भवन के सौंदर्य को प्रभावित किया था। इसके अलावा, पुरानी पड़ चुकी संचार संरचनाएं और अपर्याप्त अग्नि-सुरक्षा उपाय उपस्थित लोगों की सुरक्षा के बारे में चिंताएं उत्पन्न कर रहे थे।

पुरानी संसद भवन का निर्माण उस समय हुआ था जब नई दिल्ली भूकम्पीय क्षेत्र-द्वितीय (Seismic Zone-II) में शामिल थी, लेकिन अब नई दिल्ली भूकम्पीय क्षेत्र-चतुर्थ में शामिल है। इस परिवर्तन ने उल्लेखनीय संरचनात्मक सुरक्षा सम्बन्धी चिंताओं को जन्म दिया और आधुनिक भूकम्पीय मानकों को पूरा करने वाले एक नए भवन के निर्माण की आवश्यकता महसूस हो रही थी।

समय के साथ आन्तरिक सेवा गलियारों (Inner Service–Corridors) के कार्यालयों में रूपांतरण के

परिणामस्वरूप खराब गुणवत्ता के कार्यस्थलों का निर्माण हुआ। उप-विभाजन ने पहले से ही सीमित जगह को और कम कर दिया, जिससे कर्मियों की दक्षता और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था।

नए संसद भवन की प्रमुख विशेषताएं– पुराने भवन के समीप निर्मित नया संसद भवन लगभग 65,000 वर्ग मीटर निर्मित क्षेत्र को दायरे में लेता है। इसका त्रिकोणीय आकार उपलब्ध स्थान के कुशल उपयोग को सुनिश्चित करता है और एक विकासशील राष्ट्र की उभरती आवश्यकताओं को समायोजित करता है। नए भवन में 888 सीटों वाला एक बड़ा लोक सभा हॉल और 384 सीटों वाला एक बड़ा राज्य सभा हॉल शामिल है। संसद के संयुक्त सत्र अब लोक सभा हाल में आयोजित होंगे जिसकी कुल क्षमता 1,272 सीट हैं, जो समावेशी और सुव्यवस्थित लोकतांत्रिक कार्यवाही की सुविधा प्रदान करते हैं।

अत्याधुनिक संवैधानिक हॉल भारतीय लोकतंत्र के हृदय के रूप में कार्य करेगा जहाँ नागरिकों को शासन के केन्द्र में रखा गया है। नव-निर्मित भवन अत्याधुनिक संचार प्रौद्योगिकी से सुसज्जित अति-आधुनिक कार्यालय स्थल भी प्रदान करता है, जो दक्षता एवं सुरक्षा को बढ़ावा देता है। नया संसद भवन 'प्लैटिनम-रेटेड ग्रीन बिल्डिंग' के रूप में स्थापित है, जो पर्यावरणीय संवहनीयता के प्रति भारत के समर्पण को प्रदर्शित करता है। नया संसद भवन क्षेत्रीय कलाओं, शिल्पों एवं सांस्कृतिक तत्वों को शामिल करते हुए आधुनिक भारत की जीवंतता और विविधता को प्रदर्शित करता है। अभिगम्यता के महत्व को समझते हुए, नए संसद भवन में दिव्यांगजनों को प्राथमिकता दी गई है। समावेशिता और समान भागीदारी को बढ़ावा देते हुए यह सुनिश्चित किया गया है कि दिव्यांगजन परिसर के भीतर स्वतंत्र रूप से आवागमन कर सकें।

सार्वजनिक प्रवेश द्वार तीन दीर्घाओं की ओर ले जाते हैं- संगीत गैलरी, जो भारत के नृत्य, गीत एवं संगीत परम्पराओं को प्रदर्शित करती है; स्थापत्य गैलरी, जो देश की स्थापत्य विरासत को दर्शाती है और शिल्प गैलरी विभिन्न राज्यों की विशिष्ट हस्तकला परम्पराओं को प्रदर्शित करती है। लोक सभा और राज्य सभा कक्षों में प्रभावी विधायी कार्यवाही सुनिश्चित करने के लिए एक डिजिटल मतदान तंत्र, सु-अभियांत्रिक

ध्वनिकी और अत्याधुनिक दृश्य-श्रव्य तंत्रों की स्थापना की गई है। भवन की त्रिकोणीय सीमा के समानांतर विस्तृत गलियारों के माध्यम से मंत्री कक्षों तक पहुँचा जा सकता है।

लोक सभा कक्ष की आन्तरिक साज-सज्जा भारत के राष्ट्रीय पक्षी मोर से प्रेरित है, जबकि राज्य सभा कक्ष को राष्ट्रीय पुष्प कमल की प्रेरणा से सुसज्जित किया गया है। ये राष्ट्र की समृद्ध प्रतीकात्मकता को प्रकट करते हैं। सत्ता हस्तांतरण के प्रतीक 'सेन्गोल' की स्थापना के साथ भारत को सत्ता-हस्तांतरण के प्रति प्रतीकात्मक श्रद्धांजलि दी गई है। संसद के छह प्रवेश द्वार प्राचीन वास्तु कला से प्रेरित हैं। संसद के जिस द्वार से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उद्घाटन के लिए प्रवेश किया था उसे गज (हाथी) द्वार नाम दिया गया है। इस द्वार के दोनों ओर पत्थर के दो हाथियों की प्रतिमा स्थापित की गई हैं, जो वनवासी (कर्नाटक) के 9वीं शताब्दी मधुकेश्वर मन्दिर से प्रेरित है। अश्व द्वार के दोनों ओर स्थापित अश्वों की प्रतिमा ओडिशा के कोणार्क स्थित 13वीं शताब्दी के सूर्य मन्दिर से प्रेरित है। शार्दूल, हंस एवं मकर द्वार पर स्थापित प्रतिमाएं क्रमशः ग्वालियर स्थिर गूजरी महल, हम्पी (कर्नाटक) स्थित विजय विट्ठल मन्दिर तथा होयसलेश्वर मन्दिर से प्रेरित हैं।

गरूण द्वार पर विष्णु भगवान के वाहन गरूण की प्रतिमा स्थापित की गई है। इस प्रकार गज द्वार और अश्व द्वार भूमण्डल (धरती माता), हंस द्वार एवं मकर जलमण्डल तथा शार्दूल और गरूण नभ मण्डल को समर्पित है। संविधान हाल के बीचों-बीच फॉकौल्ट पेण्डुलम लटकाया गया है, जो ब्रह्माण्ड के साथ भारत के सम्बन्ध को जोड़ता है।

सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास परियोजना–

सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास परियोजना ऐसी परियोजना है, जिसका उद्देश्य रायसीना हिल, नई दिल्ली के पास स्थित भारत के केन्द्रीय प्रशासनिक क्षेत्र 'सेंट्रल विस्टा' का पुनरुद्धार करना है। यह क्षेत्र मूलरूप से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान सर एडविन लुटियंस एवं सर हर्बर्ट बेकर द्वारा डिजाइन किया गया था और स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार द्वारा इसे बनाए रखा गया था। परियोजना के पुनर्विकास की देखरेख वास्तुविद् बिमल पटेल द्वारा की जा रही है। नई दिल्ली के सेंट्रल विस्टा में राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, नॉर्थ एवं साउथ ब्लॉक, इंडिया गेट, राष्ट्रीय अभिलेखागार आदि अवस्थित हैं। दिसम्बर 1911 में किंग जॉर्ज पंचम ने आयोजित दिल्ली दरबार में भारत की राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने की घोषणा की थी। सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास परियोजना में नए संसद भवन का निर्माण, सामान्य केन्द्रीय सचिवालय का निर्माण, राष्ट्रपति भवन से इंडिया गेट के बीच 3 किमी लम्बे राजपथ (जिसे अब कर्तव्य पथ कहा जाता है) का पुनरुद्धार, नॉर्थ और साउथ ब्लॉक का संग्रहालयों के रूप में विकास, उप-राष्ट्रपति निवास एवं कार्यालय, प्रधानमंत्री आवास एवं प्रधानमंत्री कार्यालय का कार्य शामिल हैं।

'सेन्गोल'का ऐतिहासिक महत्व -

'सेन्गोल' शब्द तमिल शब्द 'सेम्मई' से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है 'नीति-परायणता' (Righteousness)। यह स्वर्ण और चाँदी का बना था और चोल साम्राज्य में अपने अधिकार का प्रतिनिधित्व करने के लिए औपचारिक अवसरों के दौरान शासकों द्वारा धारण किया जाता था। इसे उत्तराधिकार एवं वैधता के निशान के रूप में एक राजा द्वारा दूसरे राजा को सौंपा जाता था। चोलों ने 9वीं से 13वीं शताब्दी ईस्वी में तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा और श्रीलंका के कुछ हिस्सों पर शासन किया था। समारोह आमतौर पर एक उच्च पुरोहित या गुरु द्वारा सम्पन्न किया जाता था, जो नए शासक को आशीर्वाद देते थे और उसे 'सेन्गोल' सौंपते थे। स्वतंत्रता से पहले यह प्रश्न मौजूद था कि अंग्रेजों से सत्ता हस्तांतरण के प्रतीक के रूप में किस समारोह का पालन किया जाना चाहिए? तब सी. राजगोपालाचारी ने सत्ता हस्तांतरण के लिए उपयुक्त समारोह के रूप में 'सेन्गोल' सौंपने के चोल अनुष्ठान का सुझाव दिया, क्योंकि यह भारत की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के साथ-साथ विविधता में इसकी एकता को प्रतिबिंबित करता है।

थिरुवदुथुराई आधीनम (500 वर्ष पुराना एक शैव मठ) ने प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू को सेन्गोल भेंट किया था। सुनहरा

राजदंड वुम्मिडी बंगारुचेट्टी द्वारा मद्रास (अब चेन्नई) में एक प्रसिद्ध जौहरी द्वारा तैयार किया गया था। नंदी, 'न्याय' के धारक के रूप में अपनी अदम्य दृष्टि के साथ शीर्ष पर हाथ से उत्कीर्ण किया गया है।

वर्ष 1947 में सेन्गोल प्राप्त करने के बाद नेहरू ने इसे कुछ समय के लिए दिल्ली में अपने आवास पर रखा और फिर इसे इलाहाबाद (प्रयागराज) में आनंद भवन संग्रहालय को दान कर दिया। यह सात दशकों से भी अधिक समय तक आनंद भवन संग्रहालय में पड़ा रहा। वर्ष 2021-22 में जब सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास परियोजना चल रही थी, सरकार ने एक ऐतिहासिक घटना को पुनर्जीवित करने और नए भवन में सेन्गोल स्थापित करने का निर्णय लिया। इसे नए संसद भवन में स्पीकर की सीट के पास स्थापित किया गया है, जिसके पास एक पट्टिका भी रखी गई है, जो इसके इतिहास और अर्थ को प्रकट करेगी। नए संसद भवन में सेन्गोल की स्थापना सिर्फ एक सांकेतिक मुद्रा नहीं है, बल्कि एक सार्थक संदेश भी है। यह दर्शाता है कि भारत का लोकतंत्र अपनी प्राचीन परम्पराओं एवं मूल्यों में निहित है और यह भी कि यह समावेशी है और इसकी विविधता एवं बहुलता का सम्मान करता है।

पुराना संसद भवन अस्तित्व में कैसे आया?–

पुराने संसद भवन का निर्माण कार्य वर्ष 1921 में शुरू हुआ था और यह वर्ष 1927 में पूरा हुआ। इसे आर्किटेक्ट एडविन लुटियंस और हर्बर्ट बेकर ने डिजाइन किया था। इस भवन को मूलरूप से 'काउंसिल हाउस' कहा जाता था और इसमें इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल, ब्रिटिश भारत की विधायिका आदि मौजूद थे। पुराने संसद भवन का गोल आकार रोमन ऐतिहासिक स्मारक कोलोसियम -(Colosseum) से प्रेरित था। कुछ विचारकों का मानना है कि पुराना संसद भवन मुरैना (मध्यप्रदेश) जनपद स्थित चौंसठ योगिनी मन्दिर की डिजाइन से मेल खाता है। डिजाइन में जाली एवं छतरी जैसे कुछ भारतीय तत्व भी जोड़े गए थे।

भारत का नया संसद भवन एक अत्याधुनिक प्रतिष्ठान है, जो प्रभावी विधायी कार्यवाही के लिए आधुनिक सुविधाएं प्रदान करते हुए भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है। सरकार की योजना है कि संसदीय कार्यों के सुचारू संचालन के लिए दोनों भवनों को संयोजन में उपयोग किया जाए। यह न केवल भारत की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है, बल्कि एक समावेशी एवं कुशल लोकतांत्रिक प्रक्रिया का मार्ग भी प्रशस्त करता है। चूँकि राष्ट्र इस नए अध्याय की ओर आगे बढ़ा है, नया संसद भवन आशा एवं एकता का प्रकाश स्तम्भ बन गया है, जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

जितेंद्र शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

डिजिटल अरेस्ट - एक कॉल का खेल

"डिजिटल परिवर्तन आज व्यवसायों के लिए एक मौलिक वास्तविकता है "- वारेन बफेट

डिजिटल क्रांति अभी शुरू ही हुई है लेकिन यह स्पष्ट हो चला है कि यह औद्योगिक क्रांति से भी अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होने जा रही है। जीवन और समाज की दशा एवं दिशा बदलकर रख देने में उसकी भूमिका रेलवे से भी अधिक महत्वपूर्ण होगी। परंतु कल्पना करें कि बड़े पैमाने पर सर्वर डाउन या पावर फेल की स्थिति में क्या होगा? या अगर विध्वंसक इरादों वाले किन्हीं उन्मादियों ने डिजिटल तंत्र पर कब्जा कर लिया तो क्या परिणाम होंगे? डिजिटल क्रांति निश्चित तौर पर बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन इसकी सबसे बड़ी समस्या यह है कि इसके कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था का केंद्र उत्पादन के स्थान पर वितरण की ओर खिसक रहा है। अर्थशास्त्र प्रोफेशनल बेयान ऑथर कहते हैं कि "डिजिटल क्रांति वैकल्पिक अर्थव्यवस्था की तरह है और महज कुछ वर्षों के अंतराल में यह मौजूदा अर्थ तंत्र की तरह सशक्त हो जाएगी"।

डिजिटल दुनिया का हमारे जीवन में हस्तक्षेप दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। आर्किटेक्ट्स इसी की मदद से बिल्डिंगों की डिजाइन तैयार करते हैं, इसी की मदद से वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाया और ले जाया जाता है, इसी की मदद से कारोबार के सौदे होते हैं और बैंकिंग का समूचा तंत्र संचालित होता है। निर्माण से लेकर परिकलन और स्वास्थ्य तक कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो इस डिजिटल क्रांति से अछूता रह गया हो। आर्थर इसकी व्यापकता और प्रभावशीलता के कारण ही इसे वैकल्पिक आर्थिकी कहते हैं। साथ ही यह इन अर्थों में स्वायत्त भी है कि भले ही डिजिटल तंत्र का निर्माण मनुष्य द्वारा किया गया है लेकिन इसके संचालन में मनुष्यों की कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं होती। इसके लिए एक खास शब्द "कन्करंट" का इस्तेमाल किया जाना चाहिए जिसका अर्थ है कि डिजिटल जगत समवर्ती है और इसमें हर चीज समानांतर रूप से घटित हो रही है।

भौतिक वैश्विक अर्थव्यवस्था का निर्माण औद्योगिक क्रांति के बाद हुआ था और अब वह डिजिटल क्रांति के मार्फत एक ऐसी निरपेक्ष प्रणाली विकसित कर रही है जो कि औद्योगिक क्रांति से भी अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। यह परिवर्तन की एक ऐसी गुणात्मक प्रक्रिया है जिसमें कोई सर्वोच्च सीमा नहीं है। ऐसा कोई बिंदु नहीं है जहां जाकर पूर्ण विराम लगता हो। आर्थर अनुमान लगाते हैं कि यदि युद्धों और महामारियों को छोड़ दिया जाए तो आने वाली सदी की एक ही केंद्रीय कहानी होगी और वह है डिजिटल क्रांति। यह क्रांति एक ऐसी भूमिगत अर्थव्यवस्था का निर्माण करती है, जिसके कारण हम एक बेहतर जीवन स्तर को प्राप्त करते हैं। साथ ही यह एक आभासी संसार भी रचती है। भारत की डिजिटल क्रांति हमारे लोकतंत्र, हमारी जनसांख्यिकी और हमारे अर्थव्यवस्था के पैमाने में निहित है। यह हमारे युवाओं के उद्यम और नवाचार द्वारा संचालित है। आज तकनीक का सबसे बड़ा उत्पाद डेटा है।

भारत में हमने डेटा संरक्षण, गोपनीयता और सुरक्षा का एक मजबूत ढांचा तैयार किया है। दुनिया भी बहुत ही तेजी से डिजिटाइजेशन की तरफ बढ़ रही है। जैसे-जैसे जीवन आसान बनाने वाली तकनीकें विकसित हो रही हैं वैसे-वैसे इन तकनीकों का गलत इस्तेमाल करने के मामले भी बढ़ रहे हैं। देश में डिजिटल क्रांति ने जहां लोगों का काम सुविधाजनक बनाया है तो वहीं दूसरी ओर इससे खतरे भी

बढ़े हैं। साइबर अपराधियों के हौसले भी काफी बुलंद हुए हैं। इस डिजिटल जमाने में साइबर अटैक बहुत ही आम बात है। ये साइबर अपराधी आम लोगों को किसी न किसी बहाने से अपने जाल में फंसाने की कोशिश करते हैं। कुछ इसमें बुरी तरह फंस जाते हैं तो कुछ उनकी चालाकी समझ जाते हैं। अब हमें साइबर अटैक के भी अलग-अलग प्रकार देखने को मिल रहे हैं और इनमें सबसे खतरनाक डिजिटल अरेस्ट है। इसके तहत साइबर अपराधी अब डिजिटल अरेस्ट कर लोगों को अपना शिकार बना रहे हैं। लोगों को इस बात की जानकारी नहीं होती कि वह ठगी के शिकार हो रहे हैं। ऐसे में इस डिजिटल युग में आसानी से डिजिटल अरेस्ट कर उन्हें ठगा जा रहा है।

कुछ दिनों पहले दिग्गज उद्योगपति एस पी ओसवाल के साथ सात करोड़ रुपये की ठगी होने की खबर सामने आई थी। साइबर ठगों ने उद्योगपति से कहा कि वह डिजिटल अरेस्ट हो गए हैं और अपनी बात को सही साबित करने के लिए उन्होंने नकली वर्चुअल कोर्ट रूम भी बनाया। पैसे अपने बैंक में ट्रांसफर करवाने के लिए ठगों ने फर्जी सीबीआई और नकली चीफ जस्टिस के आर्डर तक पेश कर दिए। इसी तरह डिजिटल अरेस्ट की वजह से दिल्ली के एक पचास वर्षीय पत्रकार को 1.86 करोड़ रुपये गंवाने पड़े। वहीं कुछ दिनों पहले ही साइबर अपराधियों ने अहमदाबाद की एक सत्ताईस साल की महिला से पाँच लाख रुपए की जबरन वसूली की। इन सभी मामलों में एक बात समान है। सभी मामलों में पीड़ितों को डिजिटल अरेस्ट किया गया था।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (NCRB) के आंकड़ों के मुताबिक पिछले कुछ सालों में साइबर अपराधों में बेतहाशा वृद्धि हुई है। फरवरी में तत्कालीन गृह राज्य मंत्री अजय कुमार मिश्रा ने एक प्रश्न के जवाब में लोकसभा को बताया था कि 2023 में वित्तीय साइबर धोखाधड़ी की 11 लाख से ज्यादा शिकायतें दर्ज कराई गई थीं। देश में इंटरनेट यूजर्स की बढ़ती संख्या के बीच साइबर फ्रॉड के नए-नए तरीके भी सामने आ रहे हैं। डिजिटल अरेस्ट भी इन्हीं में से एक है।

क्या है डिजिटल अरेस्ट?

डिजिटल अरेस्ट के दौरान ऑडियो या वीडियो कॉल के जरिए अपराधी फर्जी अधिकारी बनकर लोगों को डराते हैं और गिरफ्तारी की झूठी धमकी से उन्हें उनके घर में रहने पर मजबूर करते हैं। इस दौरान वह उन्हें छोड़ने के बदले में उनसे पैसे ऐंठते हैं। मार्च 2024 में गृह मंत्रालय ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की थी। इसके जरिए सरकार ने लोगों को सचेत किया था कि किस तरह अपराधी फर्जी पुलिस अधिकारी सीबीआई, नारकोटिक्स विभाग, आरबीआई, प्रवर्तन निदेशालय और दूसरी कानून प्रवर्तन एजेंसियों का रूप धारण करके लोगों को ब्लैकमेल करते हैं और उन्हें डिजिटल गिरफ्तारी की धमकी देते हैं।

इस तरह के मामलों में अपराधी आमतौर पर पीड़ितों से संपर्क करते हैं और आरोप लगाते हैं कि पीड़ित ने या तो अवैध सामान जैसे ड्रग्स, नकली पासपोर्ट या अन्य प्रतिबंधित सामान वाला पार्सल भेजा है या उसे प्राप्त होने वाला है। कुछ मामलों में वह आरोप लगाते हैं कि पीड़ित का कोई करीबी रिश्तेदार या दोस्त किसी अपराध में शामिल रहा है और अब हिरासत में है। तथाकथित मामले को सुलझाने के लिए धोखेबाज पैसे की मांग करते हैं। कुछ मामलों में पीड़ितों को कहा जाता है कि उन्हें डिजिटल अरेस्ट कर लिया गया है और जब तक अपराधियों की मांगे पूरी नहीं हो जाती तब तक उन्हें स्काइप या अन्य वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग प्लेटफार्म के जरिए लगातार निगरानी में रखा जाता है। ठग पुलिस स्टेशनों और सरकारी दफ्तरों की तर्ज पर स्टूडियो का इस्तेमाल करते हैं और असली दिखने के लिए वर्दी भी पहनते हैं।

आमतौर पर यह स्कैम पुलिस, सीबीआई या अन्य कानून प्रवर्तन संगठन सहित किसी सरकारी संस्था के प्रतिनिधि के रूप में पेश किए जाने वाले किसी व्यक्ति के अनचाहे फोन कॉल या वीडियो कॉल से शुरू होता है। ये ठग अपने लक्ष्यों में डर पैदा करने के लिए कई तरह की रणनीतियों का इस्तेमाल करते हैं। जिनमें से कुछ निम्न हैं:

1. **झूठे आरोप:** कॉल करने वाले झूठा दावा करते हैं कि पीड़ित ने वित्तीय धोखाधड़ी ड्रग तस्करी या मनी लांड्रिंग जैसे महत्वपूर्ण अपराध किए हैं।
2. **गिरफ्तारी की धमकी:** अगर पीड़ित उनकी बात नहीं मानता है तो जालसाज तत्काल गिरफ्तारी की धमकी देकर उसे तत्काल कार्रवाई की भावना से भर देते हैं।
3. **अलगाव और धमकी:** चीजों को नियंत्रण में रखने के लिए पीड़ितों को अक्सर वीडियो कॉल पर बहुत समय बिताने के लिए कहा जाता है। इससे वह सहायता मांगने या जानकारी की दोबारा जांच करने से बचते हैं।
4. **वित्तीय माँग:** इस तरह की कॉल्स का पीड़ित से पैसे लेना अंतिम उद्देश्य होता है। घोटालेबाज अक्सर जमानत के लिए जल्दी भुगतान चाहते हैं, नकारात्मक प्रचार से बचते हैं, जिस कारण साइबर अपराधियों का उद्देश्य आसानी से पूरा हो जाता है।
5. **मनोवैज्ञानिक हेरफेर:** धोखेबाज पीड़ित की भावनात्मक स्थिति का इस्तेमाल करते हैं और पृष्ठभूमि के लिए नकली रोने की आवाज या परिवार के सदस्यों के रूप में प्रस्तुत होने जैसी तकनीक का उपयोग करके उन्हें मानसिक तौर पर कमजोर बनाते हैं। वे पीड़ित की भावनात्मक स्थिति से खिलवाड़ करते हैं और इससे प्रभावित होकर आम लोग आसानी से उनकी बातों में आ जाते हैं और साइबर फ्रॉड के शिकार हो जाते हैं।
6. **पार्सल घोटाला:** पीड़ित को सूचित किया जाता है कि अवैध वस्तुओं वाले पार्सल को पकड़ा गया है और इस पार्सल के लेनदेन में उन्हें दोषी पाया गया है। ऐसी सूचनाओं के कारण आम लोग आसानी से डर से ग्रसित हो जाते हैं और सामने वालों की बातों पर विश्वास कर लेते हैं। पीड़ित को यह विश्वास दिलाया जाता है कि अवैध वस्तुओं वाले पार्सल के हेरफेर में उन्हें फँसाया गया है और इससे बाहर निकलना बहुत मुश्किल है।
7. **परिवार के सदस्यों की संलिप्तता:** घोटालेबाज दावा करते हैं कि पीड़ित के परिवार का कोई सदस्य किसी अपराध में शामिल पाया गया है और उसे कैद कर लिया गया है। अतः उसे जमानत दिलाने के लिए वित्तीय

सहायता की तत्काल आवश्यकता है। ऐसे बहानों से वे अपने शिकार को आसानी से जाल में फंसा लेते हैं।

8. **आधार या फोन नंबर का दुरुपयोग:** अक्सर साइबर अपराधी पीड़ित पर उनके अपने आधार या फोन नंबर का अवैध गतिविधियों के लिए उपयोग करने का आरोप लगाते हैं, जिसके कारण लोग घबराकर उनकी बातों में आ जाते हैं और उनके बताए अनुसार कार्य करने लगते हैं और फ्रॉड के शिकार हो जाते हैं।

डिजिटल अरेस्ट को लेकर भारत सरकार ने अखबारों में विज्ञापन दिया है। इस विज्ञापन की मदद से लोगों को डिजिटल अरेस्ट के खिलाफ जागरुक किया गया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने अपने विज्ञापन में कहा है कि घबराने की नहीं बल्कि सावधान रहने की जरूरत है। आगे लिखा है कि सीबीआई, ईडी, पुलिस, जज आपको वीडियो कॉल की मदद से अरेस्ट नहीं कर सकते। ऐसे मामलों के लिए लोग www.cybercrime.gov.in पर अपनी रिपोर्ट दर्ज करा सकते हैं। सरकार ने संकट के समय पर 1930 नंबर पर डायल कर मदद मांगने को भी कहा है। गृह मंत्रालय ने साथ ही एक उदाहरण के जरिए समझाने की कोशिश भी की है जिससे लोग ऐसे मामलों से खुद को बचा सकें।

देश में बढ़ रहे साइबर क्राइम और डिजिटल अरेस्ट के मामले को देखते हुए गृह मंत्रालय लगातार लोगों को सतर्क और सावधान रहने की सलाह दे रहा है। इस क्रम में गृह मंत्रालय की साइबर सिक्योरिटी अवेयरनेस ब्रांच साइबर दोस्त लगातार अपने पोस्ट के जरिए लोगों को डिजिटल अरेस्ट के खिलाफ जागरूक कर रहा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट शेयर कर साइबर दोस्त ने बताया कि डिजिटल अरेस्ट सिर्फ एक स्कैम है और कोई भी लीगल अधिकारी कभी भी कॉल या वीडियो कॉल पर गिरफ्तारी नहीं करता है।

डिजिटल अरेस्ट से बचाव

स्कैमर्स पीड़ितों को डराने-धमकाने के लिए ऐसे हालात बनाते हैं जिस पर लोग आसानी से भरोसा कर लेते हैं। ऐसे में तुरंत कोई प्रतिक्रिया देने से पहले शांति से सोचने के लिए कुछ समय निकालें। अगर कोई कानून प्रवर्तन एजेंसी से होने का दावा करता है, तो भी उनके वीडियो कॉल न उठाए और न ही किसी तरह का कोई अमाउंट उन्हें ट्रांसफर करें। उनकी अच्छे से जांच-पड़ताल करें और ऑफिशियल सोर्स की भी अच्छे से जांच करें। फोन या वीडियो कॉल पर अपनी कोई संवेदनशील व्यक्तिगत या फाइनेंशियल स्टेटस से जुड़ी जानकारी बिल्कुल भी शेयर न करें। खासकर किसी भी अनजान नंबर के साथ ऐसे करने से बचें। सही और लीगल सरकारी एजेंसियां किसी भी तरह की आधिकारिक बातचीत या गिरफ्तारी के लिए व्हाट्सएप या स्काइप जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल नहीं करेंगी। इसलिए ऐसे कॉल आने पर बचकर रहें। अगर आपको कोई संदिग्ध कॉल आती है, तो तुरंत अपनी लोकल पुलिस या नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल (cybercrime.gov.in) को इसकी रिपोर्ट करें।

आरती शर्मा
लेखाकार

हिंदी

14 सितम्बर, 2024 को राजभाषा हिंदी के 75 वर्ष पूरे होने पर भारत मंडपम्, नई दिल्ली में चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में हीरक जयंती समारोह मनाया गया। राजभाषा हिंदी किसी राज्य या क्षेत्र-विशेष की भाषा नहीं रह गई है, यह पूरे हिंद मानस की भाषा बन गई है। हिंदी, अब हिंदुस्तान की नहीं पूरे विश्व स्तर की भाषा बन गई है। हिंदी संयुक्त राष्ट्र में भी अपना स्थान बनाने में प्रयासरत है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को स्थान दिलाने में भारत सरकार पूरी कोशिश कर रही है।

अब हिंदी प्रत्येक जनमानस के जीवन की आवश्यकता बन गई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि राजभाषा हिंदी के अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार में किसी न किसी रुप में हमारा भी एक छोटा-सा निरंतर प्रयास होना चाहिए। हमारी कार्यालयीन स्मारिका का भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण स्थान है। स्मारिका में लेखापित हिंदी में रचनाएँ या राजभाषा हिंदी संबंधी किसी प्रकार के लेख हिंदी के प्रचार-प्रसार में छोटा ही सही परन्तु महत्वपूर्ण प्रयास हैं। वर्तमान लेख राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित है एवं इसमें केवल हिंदी का ही गुणगान किया गया है।

14 सितम्बर, 1949 का वो दिन बड़ा ही गौरवपूर्ण दिन था, जब संविधान सभा द्वारा भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 में हिंदी को राजभाषा के रुप में दर्जा दिया गया। हिंदी एक ऐसी सशक्त और जीवंत भाषा है, जो राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। हमारे विशाल बहुभाषी राष्ट्र के नागरिकों को एक मंच पर लाने में, संपर्क भाषा के रुप में हिंदी के प्रयोग का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संविधान के महान निर्माता, भारत के किसी अन्य भाषा को भी राजभाषा का दर्जा दे सकते थे परन्तु हिंदी को ही राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। क्योंकि हिंदी सुबोधपरक भाषा है। हिंदी हमारी धात्री भाषा है। स्वतंत्रता

प्राप्ति के पूर्व से ही महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, राजा राममोहन रॉय, स्वामी दयानंद सरस्वती आदि अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने भी अपने विचार के प्रचार-प्रसार में हिंदी का सहारा लिया। महात्मा गाँधी, लोकमान्य तिलक जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों ने भी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपने भाषणों में राष्ट्रभाषा की आवश्यकताओं पर बल देते हुए कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रुप में अपनाया जा सकता है। लोकमान्य तिलक ने भी यह स्पष्ट घोषित कर दिया था कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी। स्वतंत्रता-संग्राम में भी हिंदी महत्वपूर्ण भाषा रही जो हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को पूरे भारत में अपने विचार, संदेश का संचार करने में सहायक सिद्ध हुई। सारे पहलूओं पर विचार करने के बाद ही संविधान सभा द्वारा हिंदी को ही राजभाषा का दर्जा दिया गया। संपूर्ण भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली सरल, सुबोध, सर्व समावेशी यदि कोई भाषा है तो वो है केवल हिंदी। अन्य कोई दूसरी भाषा नहीं।

हिंदी मध्य काल से ही संपूर्ण भारत में सामान्य जन के पारस्परिक सम्पर्क की भाषा रही है। भारत के आचार्यों, महान संतों ने भी हिंदी भाषा के माध्यम से ही अपने मतों का प्रचार-प्रसार किया। हिंदीतर भाषी क्षेत्रों के महान संतों, कवियों, विचारकों ने भी अपनी कृतियों, विचारों, भावों के प्रचार–प्रसार में हिंदी को भी सहारा बनाया।

भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रुप में अपनाया जा सकता है। हिंदीतर भाषी क्षेत्रों के सुदूर गाँवों, देहातों में आम-जन से संपर्क करने में हिंदी एक महत्वपूर्ण संपर्क भाषा है। हिंदी किस प्रकार एक सम्पर्क भाषा के रुप में सहायक सिद्ध हो रही है, इसका अनुभव मुझे स्वयं असम-मेघालय, बंगाल जैसे हिंदीतर भाषी राज्यों में हुआ। शुद्ध गाँव-देहात के रहने वाले लोग भी अच्छी हिंदी बोलते हैं। इस प्रकर हिंदी सबकी भाषा है, किसी क्षेत्र विशेष की नहीं। भारत में संपर्क भाषा के रुप में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसका उपयोग किया जा सकता है। हिंदी भाषा, राष्ट्रीय पहचान और एकता

की मजबूत कड़ी के रुप में लगातार विशेष भूमिका निभाती आ रही है। जिस प्रकार प्राचीन भाषाओं में संस्कृत अपना विशिष्ट स्थान रखती है, उसी प्रकार आधुनिक भाषाओं में कई दृष्टियों से हिंदी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। हिंदी सम्पूर्ण हिंद की भाषा है किसी स्थान विशेष की नहीं। यह अन्य भारतीय भाषाओं की तरह किसी स्थान विशेष का बोध नहीं कराती।

इन विशेषताओं से हिंदी को ही राजभाषा का दर्जा मिला। फिर भी, अपने ही देश में हिंदी के प्रचार-प्रसार में अनेक योजनाओं को लागू करना पड़ता है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए इतने सारे प्रयास किए जा रहे हैं। हिंदी न हमारी, न आपकी भाषा है, यह तो पूरे हिंदुस्तान की भाषा है। फिर भी, हिंदी से इतना द्वेष-भाव क्यों हैं, यह सोचनीय है। राजनीति या किसी अन्य कारण जैसे- क्षेत्रवाद, भाषावाद आदि हिंदी के प्रचार –प्रसार में बाधक है। मुझे हिंदी बोलने से परहेज है परन्तु, गीत हिंदी में सुनता हूं, टेलीविजन पर समाचार हिंदी में देखता-सुनता हूँ, हिंदीतर भाषी क्षेत्र में जाता हूँ तो हिंदी के सहारे ही अपनी जरुरतों को पूरा करता हूँ। मतलब जरुरत पड़ने पर हिंदी का ही सहारा लेता हूँ। फिर भी, मुझे हिंदी नहीं आती है।

आज हिंदी हमारी आवश्यकता बन गई है, जन-जन की भाषा बन गई है। परन्तु, हिंदी के प्रति मानसिकता में परिवर्तन आना आवश्यक है। आज भी हम अंग्रेजियत की दासता से बहुत प्रभावित हैं। मैं इंगलिश बोलने में थोड़ा प्राउड फिल करता हूँ, इसलिए मुझे हिंदी नहीं आती इत्यादि बोलने वाले लोग भी मिल जाते हैं। एक समय था जब हिंदी केवल साहित्य रचना तथा आपसी पत्र–व्यवहार के रुप में प्रयुक्त होती थी, किन्तु अब धीरे-धीरे प्रकाशन, बैंक, रेलवे, वाणिज्य, विज्ञान, वैदेशिक संबंध अर्थात सभी संबंधित क्षेत्रों में इसका प्रयोग होने लगा है। हिंदी हमारी राजभाषा एवं संपर्क भाषा ही नहीं, अपितु वह भारत के एकात्मक रुप की संरक्षिका भी है। आज सम्पूर्ण भारत में बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ, धर्मोपदेशक, व्यापार वर्ग आदि सभी अपना भाषण हिंदी में देते हैं। हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी अपना भाषण हिंदी में ही देते थे। हमारे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री जी हिंदी में ही भाषण देते हैं।

संयुक्त राष्ट्र में भी हिंदी अपना स्थान बनाने में प्रयासरत है। आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि हिंदी एक-न-एक दिन संयुक्त राष्ट्र में भी अपना स्थान बना लेगी। अब धीर-धीरे हिंदी का प्रयोग बढ रहा है। हिंदी के समाचार पत्र व पत्रिकाएँ, टेलीविजन, रेडियो आदि ने हिंदी की लोकप्रियता को बढ़ावा दिया है। सोशल मीडिया, गूगल, इंस्टाग्राम, मैसेन्जर, वाट्सऐप आदि पर लोग हिंदी में संदेश प्रेषित करते हैं, संवाद भी करते हैं।

हिंदी इतनी सरल, सुबोध भाषा है कि हिंदीतर भाषी क्षेत्र के लोग भी हिंदी नहीं जानने की स्थिति में भी टूटी-फूटी हिंदी बोल लेते हैं। हिंदीतर भाषी लोग दूसरे हिंदीतर भाषी क्षेत्र में जाकर उस क्षेत्र की भाषा नहीं बोल पाते हैं। उन्हें हिंदी का ही सहारा लेना पड़ता है। अतः हिंदी हमारे जीवन की आवश्यकता है। हिंदी पट्टी के बाहर निकल कर, हिंदी की लोकप्रियता देश के बड़े-बड़े हिंदीतर भाषी शहरों में बढ़ी है। लोगों के एक-दूसरे शहरों में आने-जाने के कारण आम-बोलचाल की भाषा में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है।

हिंदी सम्पूर्ण देश में बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है, किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं। आज पूरे विश्व में भारत, व्यापार की दृष्टि से एक प्रमुख केन्द्र है। अतः लगभग पूरे विश्व के समुन्नत एवं प्रगतिशील देशों में हिंदी सीखी जाने लगी है। भारतवासियों एवं प्रवासी भारतीयों (विदेश में रहने वाले भारतीयों) के बीच संबंध मजबूत करने के लिए व्यापक स्तर पर विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं। आज हमारे देश के प्रधानमंत्री जी विश्व में भी हिंदी में ही अपना भाषण देते हैं। अतः हिंदी राष्ट्रीय नहीं, अंतर्राष्ट्रीय भाषा है।

जिस प्रकार प्राचीन भाषाओं में संस्कृत विशिष्ट स्थान रखती है, उसी प्रकार आधुनिक भाषाओं में कई दृष्टियों से हिंदी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। हिंदी सर्वसमावेशी भाषा है। इसका विकास बिल्कुल सुनिश्चित वैज्ञानिक प्रणाली

से हुआ है। हिंदी स्वयं विकसित भाषा है, इसका व्यक्तित्व अपना है, निराला है। इसने 80 प्रतिशत शब्द संस्कृत से ज्यों-के-त्यों लिए हैं। हिंदी सम्पूर्ण हिंद की भाषा है, किसी स्थान विशेष की नहीं है।

हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं की तरह किसी स्थान-विशेष का बोध नहीं कराती। हिंदी भाषा सारे देश की भाषा है, सारे देश के लिए बनी है। अतः उसकी प्रकृति भारत-माता की प्रकृति की तरह सरल है। उसकी यह सरलता सर्वत्र देखी जा सकती है। हिंदी बिल्कुल तर्क-संगत भाषा है। इसका वाक्य- विन्यास चिन्तन प्रवाह के पूर्णतः अनुकूल है। हिंदी इस मानी में और भी सौभाग्यशालिनी है कि उसने संस्कृत की देवनागरी, देवों के नगर में प्रयुक्त होने वाली संस्कारित उच्चारानुकूल लिपि अपनायी है। इसी लिपि में उसे संस्कृत का भंडार भी मिला है। सरलता और उत्कृष्टता की दृष्टि से देवनागरी संसार में सर्वश्रेष्ठ लिपि है। हिंदी समृद्ध, सुयौक्तिक, प्रायः समग्र देश की संपर्क और रागात्मक भाषा है। भाषा तो एक प्रवाह है और खासकर हिंदी भाषा तो ऐसा प्रवाह है कि इसे हिमालय से कन्याकुमारी एवं द्वारका से कामरुप तक देखा जा सकता है। हिंदी भाषा क्षण-क्षण विकास-विस्तार पाने वाली भाषा है। हिंदी सरल-सुबोध भाषा है। हिंदी विशाल जनसमुदाय की सामान्य बोल-चाल, साहित्य-संस्कृति, राजनीति, विज्ञान, इतिहास, शास्त्र आदि की भाषा है।

हमारे देश की विराट व समृद्ध सांस्कृतिक विरासतों को हमारी भारतीय भाषाओं ने सहेज रखा है। इन विरासतों को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में हिंदी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भाषा के रुप में हिंदी सम्पूर्ण राष्ट्र को जोड़ने वाली इकाई है। राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है, जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है और हिंदी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है।

अरुण कुमार
सहायक निदेशक (राजभाषा)

शारदा सिन्हा: लोकगीतों की सरस्वती

'बिहार कोकिला' शारदा सिन्हा, सुनते ही यह नाम हमारे हृदय को झंकृत कर देता है। शारदा सिन्हा वैसे तो बिहार की बेटी थीं परन्तु उनके गीतों ने पूरे देश में लोकप्रियता पाई। शारदा सिन्हा मिथिला की बेटी थीं। बिहार के सुपौल जिले के राघोपुर प्रखंड के हुलास गांव में उनका मायका था। उनका जन्म 1 अक्टूबर 1952 को हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके गांव हुलास व स्थानीय विलियम्स स्कूल में ही हुई थी। वहीं विलियम्स स्कूल में उन्हे संगीत का प्रशिक्षण संगीतज्ञ पंडित रघुनाथ झा से मिला जो कि उस समय विलियम्स स्कूल में ही संगीत शिक्षक थे। हाँलाकि इससे पूर्व बचपन में पैतृक गांव हुलास में पंडित रामचन्द्र झा ने उन्हें संगीत की प्रारंभिक शिक्षा प्रदान की थी, लेकिन पंडित रघुनाथ झा के सान्निध्य ने उनके संगीत को ऊंचाई प्रदान की। उनके संगीत के प्रारंभिक गुरु पंडित रामचन्द्र झा की पारखी नजर ने उनके बचपन में ही उनकी संगीत प्रतिभा को पहचान लिया था। वे कहते थे कि एक दिन मिथिला की यह बेटी पूरे देश की बेटी के रूप में जानी जाएगी।

शारदा सिन्हा की पहचान मुख्य रूप से उनके छठ पर्व के गीतों से बनी। बाल्यावस्था में जब हम उनके गाए छठ के गीत सुनते थे तब हम सबका मन भक्ति-भाव से सराबोर हो जाता था। उनके द्वारा गाये गये छठ गीतों के सुनने से हमें पता लगता था कि पवित्र 'छठपर्व' का पावन मास प्रारंभ हो गया है। उनके गाये गीतों में मुख्यतः दो गीत जिसने असीम प्रसिद्धि प्राप्त की उनमें- **केलवा के पात पर उगेलन सुरजमल झाँके झुके और कांच ही बांस के बहंगिया, बहंगी लटकर जाय..**शामिल हैं।

उत्तर भारत के कई राज्यों विशेषकर बिहार में छठ पर्व का विशेष महत्व होता है। इस दौरान छठी मैया और सूर्य देव की उपासना की जाती है। यह पर्व चार दिनों तक मनाया जाता है। इस त्योहार में शुद्धता को काफी ध्यान में रखा जाता

है। इस त्यौहार में माताएं जिनको स्थानीय भाषा में लोग 'परवैती' कहते हैं, उनको भूखे रहकर पूरे विधि-विधान से छठ पूजा करनी होती है। वे सब (परवैती) कहती हैं कि उन्हें शारदा सिन्हा के गाये गीतों से काफी ऊजी मिलती है और वे भूख-प्यास को भूलकर सूर्यदेव और छठी मईया का नाम लेकर छठ पर्व का त्यौहार मनाती हैं। पिछले चार-पाँच दशक में छठपर्व की महिमा और विख्यात हुई है। इसमें 'बिहार कोकिला' शारदा सिन्हा के छठ को लेकर गाये हुये गीतों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। स्थिति यह होती है कि शारदा सिन्हा और छठपर्व के उनके द्वारा गाये गये गीत एक दूसरे के पर्याय जैसे लगते हैं।

मैथिली गीत 'भाई से लेवौ नेग' गाया और चयनित हो गईं। इसी दौरान उनके द्वारा गाया देवी गीत **जगदंबा घर में दियरा बार अईनी हो, जगतारण घर में दियरा बार अईनी हो** काफी लोकप्रिय हुआ।

वे लोकगीतों को अंतरराष्ट्रीय फलक पर ले गईं। शारदा सिन्हा जब घर-घर प्रसिद्ध हो रही थीं उस समय कैसेट का युग आया था। उनके गाये गीतों के 'कैसेट' घर-घर पहुंचने लगे थे। जैसे महेंद्र मिसिर के गाने **'पटना से वैद बुलाई द' और पनिया के जहाज से पलटनिया बनि अइह, पिया लेले अइह हो सेंदुरा बंगाल से.....** जैसे गीतों ने उन्हें देश-विदेश में मशहूर कर दिया। जरा सोचिये पचास साल

सन् 1978 में उन्होंने पहली बार उगअ हो सूरुज देवा गाना रिकार्ड किया जो काफी लोकप्रिय हुआ। आज भी यह गीत उतना ही लोकप्रिय है जितना पांच दशक पहले था। शारदा सिन्हा वैसे तो शास्त्रीय संगीत की छात्रा थीं। लखनऊ में जब पहले वे आकाशवाणी में ऑडिशन देने गईं तो पहले दिन उन्हें रिजेक्ट कर दिया गया। मायूस होकर वे घर लौट आईं। उनके पति ने उनका हौसला बढ़ाया। उनके पति का नाम ब्रज किशोर सिन्हा था। उनके पति उन्हें अगले दिन फिर आकाशवाणी लेकर पहुंचे। दूसरे दिन शारदा सिन्हा ने पहले जब बिहार की शिक्षा दर काफी कम थी, जहां माताएं-बहनें खासकर बहुत ही कम पढ़ी-लिखी थीं तब भी वे सब शारदा सिन्हा के गीतों को गुनगुनाती रहती थीं। उनके गीतों में मर्मस्पर्शी भाव थे। वे माँ सरस्वती की सच्ची साधक थीं। लोग उन्हें 'भोजपुरी एवं मैथिली की लता मंगेशकर' के नाम से भी पुकारते थे।

शारदा सिन्हा एक बार मॉरिशस की यात्रा पर गयी थीं जहां हिन्दी खासकर भोजपुरी समझने वालों की संख्या करीब-करीब पूरी आबादी का 40% है। वे सब भारत से ही

आजादी के पहले जा बसे थे, या कहिये उन्हें अंग्रेजों द्वारा बसाया गया था। शारदा सिन्हा वहां (मॉरीशस में) लोकल गाड़ी में सवारी कर रही थीं। गाड़ी में रेडियो मॉरीशस लगा था और शारदा सिन्हा का गीत बज रहा था। शारदा सिन्हा ने ड्राइवर से पूछा कि तुम जानते हो कि यह गीत कौन गा रही हैं? ड्राइवर ने जो कहा उसको सुनकर वे अचंभित रह गईं। उसने कहा कि आप भी कमाल करती हैं। आप भारत देश से हैं और इनको नहीं जानती हैं। यह भारत की सबसे बड़ी गायक शारदा सिन्हा जी हैं। ड्राइवर नहीं जानता था कि गाडी में जो महिला बैठी हैं, वही हैं जिनका गीत वह सुन रहा था। जब शारदा सिन्हा ने सच बताया तो वह काफी खुश हुआ और गाड़ी की किराया भी नहीं लेने की जिद करने लगा लेकिन काफी कहने के बाद उसने किराया लिया। इससे उनकी लोकप्रियता का अंदाजा लगाया जा सकता है।

शारदा सिन्हा केवल एक गायिका ही नहीं थीं बल्कि वह बिहार की समृद्ध परंपरा को, जहां से भिखारी ठाकुर, महेन्द्र मिसिर, विन्ध्यवासिनी देवी जैसे महान गीतकार आते थे, नए स्तर तक ले गईं। ऐसा नहीं है कि उन्होंने केवल भोजपुरी और मैथिली गीतों को नया आयाम दिया। हिन्दी गानों में भी उन्होंने अच्छी प्रसिद्धि पाई। राजश्री प्रोडक्शन के मालिक उनके गीतों और सुर के बहुत ही बड़े प्रशंसक थे। उन्होंने सोच लिया था कि शारदा सिन्हा जी से अपने फिल्मों के लिए एक न एक दिन जरूर गीत गवाएंगे। और अंतत: उनकी यह कामना प्रसिद्ध फिल्म 'मैंने प्यार किया' में जाकर पूरी हुई जिसमें शारदा सिन्हा द्वारा गाए गीत **'कहे तोसे सजना ये तोहरी सजनिया, पग-पग लिये जाऊँ तोहरी बलइया...**' लोकप्रिय हुआ। लोक-संगीत की विरासत को सहेजने, सँवारने व उसको नया आयाम देने के लिये उनको 1991 में पद्म श्री, 2000 में संगीत नाटक अकादमी और 2018 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। वे समस्तीपुर में महिला कॉलेज में संगीत शिक्षक भी थीं। संगीत शिक्षक के रूप में ही वे 31 अक्टूबर 2017 को सेवानिवृत हुईं।

शारदा सिन्हा ने अपना जीवन भोजपुरी, मैथिली और अवधी गीतों को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिये समर्पित कर दिया। जब एक बार उनसे पूछा गया कि शास्त्रीय संगीत और दूसरे संगीत में क्या फर्क है, तब उन्होंने सरल, सहज भाषा में उत्तर दिया कि योगशास्त्र में कहा जाता है कि नाद ब्रह्म:, यानि ध्वनि ही ईश्वर है। ध्वनि की इसी समझ से भारतीय संगीत का जन्म हुआ। शारदा सिन्हा पान खाने की शौकीन थीं। वे कहती थीं कि पान महज होठों को लाल करने वाली या नशे की हुडक मिटाने वाली कोई खुराक नहीं बल्कि यह तो एक लखनऊ वाली तहज़ीब है।

शारदा सिन्हा सही मायनों में लोकगीतों की सरस्वती एवं संगीत की सच्ची साधक थीं। दुर्भाग्य से देश की यह बेटी 5 नवंबर 2024 को हम सबको छोड़कर एक अंतहीन यात्रा पर प्रस्थान कर गईं। उनकी संगीत के प्रति सच्ची श्रद्धा ही कह लीजिये कि ऑक्सीजन पाइप लगा हुआ था फिर भी वे मुस्कुराते हुए छठी मईया के गीत को गुनगुना रही थीं जो कि शायद उन्होंने कुछ दिन पहले ही गाया था। उन्होंने अपने अंतिम गीत के रूप में छठ के ही गीत को चुना। छठी मईया की सच्ची साधक को छठ के ही पुनीत पर्व पर भगवान भास्कर ने अपने पास बुला लिया। यह संयोग कह लीजिये या छठी मईया की महिमा कि उनकी मृत्यु भी छठ के पावन पर्व के समय ही हुई।

उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सब मिलकर उनकी विरासत को आगे ले जाएं, उनके गीतों को अपने दिलों में जिंदा रखें। वे हम सबको छोड़कर सदा के लिए चली तो गईं परन्तु जब-जब छठ पर्व आएगा तब-तब उनके गीत हमें भक्ति में विभोर करते रहेगें और उनकी यादों की भी पुनरावृति होती रहेगी।

संजय कुमार
डीईओ

मानवाधिकारों की महत्ता

मानव-सभ्यता आज अपनी उन्नत प्रौद्योगिकी और प्रखर मेधा से जहां एक ओर असीम संभावनाओं का द्वार खोल रही है वहीं दूसरी ओर अस्तित्व के संकट की गंभीर और वास्तविक समस्याओं का भी सामना कर रही है। कृत्रिम मेधा, रोबोटिक्स, उन्नत अंतरिक्ष-प्रौद्योगिकी, जीनोम सीक्वेंसिंग, जीन-एडिटिंग आदि से व्यापक मानवीय मेधा की संभावनाओं का पता चलता है वहीं दूसरी ओर दशकों से हिंसा, भेदभाव, कुपोषण, वंचना आदि का सामना करता एक बड़ा समूह है जो मनुष्यता के प्रभावी होने के दावे को संदेहास्पद बना देता है। इन समस्याओं के साथ विकास करती सभ्यताओं ने जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण आदि के द्वारा विभिन्न जैविक-अजैविक आयामों के साथ इस पृथ्वी ग्रह के अस्तित्व को संकट में डाल दिया है। ऐसे में मानवाधिकारों की महत्ता बढ़ जाती है।

मानवाधिकार, मानव-जीवन के सर्वांगीण विकास का अनिवार्य पहलू है जिसके बिना एक समावेशी संसार की कल्पना नहीं की जा सकती है। ब्रह्मांड में जीवन धारण करने वाले इस एकमात्र ज्ञात पृथ्वी ग्रह पर प्रकृति के विभिन्न आयामों और जीवन की असंख्य इकाइयों का पारस्परिक संबंध मानवाधिकारों की उच्च स्थिति की मांग करता है। यह न केवल मानव सभ्यता की सतत प्रगति के लिए आवश्यक है बल्कि जीवन के एक प्रमुख नियंता के रुप अन्य जैविक-अजैविक समुदायों पर मनुष्य की निर्भरता की सीमाओं को भी रेखांकित करता है। सभ्यताओं का उद्भव और विकास अपनी युगीन अपेक्षाओं के साथ प्रासंगिक अधिकारों की सार्थक भूमिकाओं के महत्व को उजागर करता है।

नेल्सन मंडेला ने कभी कहा था कि लोगों को उनके मानवाधिकारों से वंचित करना मानवता को चुनौती देना है। सभी के मानवाधिकार समान रुप से महत्वपूर्ण होते हैं। मानवता कोई ऐसी अवधारणा नहीं है जो केवल मनुष्य को अपना केन्द्र-बिन्दु मानती हो। प्रथम दृष्ट्या यह लग सकता है कि मानवाधिकार में मनुष्य ही इसका लक्ष्य है लेकिन मानवाधिकार अपने आप में व्यापक और समावेशी होते हैं जो कि छोटे से छोटे जीव से लेकर बड़े और विशालकाय प्राणियों सहित निर्जीव किन्तु ऊर्जावान पदार्थों के साथ मानव सह-अस्तित्व को समाहित करते हैं। हिंदी साहित्य की महान कवयित्री महादेवी वर्मा ने अपने गीतों में करुणा और संवेदना को केन्द्रीय रुप से व्यक्त किया है। उनकी एक पंक्ति है-

"पथ न भूले एक पग भी
घर न खोए लघु विहग भी
स्निग्ध लौ की तूलिका से
आँक सबकी छाँह उज्ज्वल"

ये पंक्ति विश्व में सर्व-मंगल की मानवीय चिन्ता को दर्शाती है जो कि मानवधिकारों के सही स्वरूप को प्रकट करती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकारों की व्यापक व्याख्या स्वयं से परे संसार के प्रति कर्तव्यों को पूरा करने को संदर्भित करती है। आधुनिक जीवन का वर्तमान स्वरूप अतीत के गहरे उतार-चढ़ाव, संघर्ष, पीड़ा और लोगों की मानवता में गहरी आस्था को प्रदर्शित करता है।

मानवाधिकार, बेशक संयुक्त राष्ट्र संघ की घोषणाओं से अपने वैधानिक स्वरूप को प्राप्त करते हैं लेकिन विभिन्न समाजों ने अपने स्वयं के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूपों में इन्हें स्वीकार किया है। यह तथ्य सिर्फ वर्तमान सभ्यता के लिए ही नहीं है बल्कि पुरा-ऐतिहासिक समाजों से लेकर ऐतिहासिक समाजों पर यह समान रुप से

लागू होता है। मौजूदा समय में मानवाधिकारों की चर्चा में रहना मनुष्य की जीवन-शैली एवं उससे उपजी विषमताकारी और भेदकारी स्थिति को प्रदर्शित करता है। पूरी दुनिया में मानवाधिकारों की विकसित होती नवीनताओं को देखने से पहले हमें मानवाधिकारों की ऐतिहासिक स्थिति को समझना आवश्यक है।

सभी धर्मों के मूल में मनुष्य को केन्द्रीय लक्ष्य माना गया है। मनुष्य का अधिकतम कल्याण सुनिश्चित करना और

प्रकृति से साहचर्य धर्मों की बुनियादी मान्यता रही है। धर्मों में समय के साथ बढ़ती जड़ताओं ने निश्चय ही धर्म और मनुष्य दोनों को प्रतिकूल रुप से प्रभावित किया है। भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो भारतीय समाज ऐतिहासिक रुप से विविध और समावेशी रहा है और सबके कल्याण की कामना करता है। महा उपनिषद में कहा गया है-

"अयं निज परोवेति, गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुंबकम्।।"

(अर्थात यह मेरा है, वह दूसरे का है, ऐसी कल्पना तो तुच्छ मन के लोग करते हैं। उदार चरित वाले लोग सम्पूर्ण विश्व को ही अपना परिवार मानते हैं।)

यह महज संयोग नहीं है कि 21 वीं सदी में जी-20 जैसे प्रमुख एवं प्रभावी वैश्विक शिखर सम्मेलन के माध्यम से भारत ने पुनः विश्व को विराट मानवता का संदेश दिया है। इसकी महत्ता इसलिए भी है क्योंकि दुनिया आतंकवाद, युद्ध की विभीषिका, नृजातीय हिंसा, लैंगिक भेदभाव, रंगभेद आदि जैसे गंभीर मुद्दों पर मानवता को बचाने के लिए संघर्षरत है। रवांडा, बोस्निया, कंबोडिया आदि जैसे जनसंहार, इजरायल-फिलिस्तीन जैसे औपनिवेशिक संघर्ष, मध्य-पूर्व का दशकों से जारी संघर्ष, अफगानिस्तान, सीरिया आदि राष्ट्रों में आतंकी समूहों का सत्ता हासिल करना, रूस-यूक्रेन में जारी युद्ध, विभिन्न राष्ट्रों में तानाशाही सरकारों द्वारा मानवाधिकारों का कुचला जाना इत्यादि घटनाएं मानवीय आस्थाओं पर उपजे गंभीर संकट को दर्शाती हैं।

'जीवन का अधिकार' प्रत्येक मनुष्य का सबसे नैसर्गिक व मूलभूत अधिकार हैं। जब किसी भी कृत्य से इस अधिकार पर चोट पहुँचती है तो मानवता के सम्मुख संकट उत्पन्न होता है। यह 'संकट' ही है जिसके 'युद्ध' में हताहतों की

संख्या और कारुणिक विलाप के स्वरों ने 'अशोक' को 'अशोक महान' बना दिया। अशोक का प्रसंग दर्शाता है कि जीवन में मानवता ही चरम प्राप्तव्य है। शांति के साथ धर्मों, मतों, विश्वासों के परस्पर सम्मान को बनाए रखना मानवता का लक्ष्य है। अशोक महान के प्रयासों से बुद्ध के करुणा के उपदेशों और बौद्ध धर्म ने वैश्विक स्वरूप प्राप्त किया।

धर्मों और समाजों में बढ़ती जड़ता और मनुष्य के विभिन वर्गों के प्रति असमानता का भाव मानवता विरोधी है। हिन्दू धर्म के संबंध में बात करें तो जाति-प्रथा, वर्ण-व्यवस्था, महिलाओं के प्रति उपेक्षा और तिरस्कार का भाव जब-जब हावी हुआ तब-तब उसके प्रति सधी हुई प्रतिक्रिया हुई और विभिन्न सामाजिक आंदोलनों के माध्यम से उसे चुनौती दी गई। भक्ति आंदोलन और उससे पहले बौद्ध व जैन धर्म आदि ने इन जड़ताओं और भेदभावमूलक व्यवस्थाओं पर मजबूत प्रहार करते हुए मानवता को सुदृढ़ता प्रदान की।

यूरोप में भी जड़ता के प्रति तर्कपूर्ण सवाल करने पर सुकरात को विष दिया गया, ईसा मसीह को सूली पर चढ़ा दिया गया। क्रूर सत्ता ने हमेशा 'मानवता' के दमन के माध्यम से मानव के 'पशुत्व' को सामने लाने का कार्य किया है। यूरोपीय पुनर्जागरण के दौर में चर्चों के रूढ़िवादी, कट्टर और सत्तावादी पाखंड के विरुद्ध जोरदार प्रतिक्रिया हुई, जहां मार्टिन लूथर के प्रयासों से मानवता को नई उम्मीद मिली। इस दौरान कला, विज्ञान, साहित्य आदि ने तार्किकता पर बल देते हुए अधिक मानवीय परिवेश की अपेक्षाओं को मूर्त रुप दिया। वैज्ञानिकों, चिंतकों आदि की हत्याओं ने मानव-सभ्यता के क्रूर व प्रतिगामी चेहरे को उजागर किया जो कि मनुष्य की महत्वाकांक्षा से आगे बढ़कर उसके घनघोर स्वार्थी चरित्र को दर्शाता है। यह महज संयोग ही नहीं था कि गुलामी, दासता आदि जैसी कुप्रथाएं पुनर्जागरण के बाद भी यूरोप सहित दुनिया के बड़े हिस्से में बनी रहीं। कोई एक क्रांति, एक सामाजिक सुधार आंदोलन इसे बदल न सका।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि प्रत्येक शिशु ईश्वर का संदेश लेकर आता है कि वह अभी मनुष्यों से निराश नहीं हुआ है। इस कथन में मनुष्य की संभावनाओं के साथ उसके लिए एक चेतावनी भी छिपी है। आज हम पढ़ने-लिखने, उच्च शिक्षा, धारणीय आवास की उपलब्धता, बेहतर स्वास्थ्य आदि को बुनियादी मानवाधिकारों के रुप में देखते हैं। संयुक्त राष्ट्र के मानव विकास सूचकांक के विभिन्न संकेतक वैश्विक स्तर पर अधिकारों के एक समुच्चय को परिभाषित करते हैं जो कि मूलभूत अधिकारों को दर्शाते हैं। दुनिया के विभिन्न देशों में जारी हिंसक संघर्षों ने शरणार्थी संकट के रुप में गंभीर मानवीय त्रासदी को जन्म दिया है

जहां मूल देश में मानवाधिकारों का हनन तो होता ही है साथ ही प्रवास वाले देश में भी कानून-व्यवस्था से लेकर मानवाधिकारों तक का संकट उत्पन्न हो जाता है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो सामाजिक सुधार आंदोलनों ने वंचित, शोषित और उपेक्षित वर्गों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले, नारायण गुरु, डॉ. बी.आर. अंबेडकर, पंडिता रमाबाई आदि के प्रयासों ने विभिन्न वर्गों के सशक्तिकरण और उन्नति के लिए मार्ग प्रशस्त किया। मानवता के समक्ष उपस्थित संकट के विभिन्न आयामों पर राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर सही ही लिखा है-

"शांति नहीं तब तक जब तक
सुखभाग न नर का सम हो
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो।"

ये पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं कि जीवन में सभी मनुष्यों की बुनियादी आवश्यकताएं एक जैसी होती हैं। उनकी पूर्ति और उपलब्धता सभी के लिए समान होनी चाहिए। इसमें शक्ति और सत्ता के प्रभावों से उपजा कृत्रिम विभाजन अमानवीयता और असमानता को बढ़ाता है।

आज के वर्तमान समाज में शिक्षा की महत्ता के युग में स्त्रियों की कारुणिक स्थिति मानवाधिकारों पर गंभीर विमर्श की मांग करती है। स्त्रियों की ऐतिहासिक उपेक्षित स्थिति में सुधार के लिए कानूनी प्रावधान कर दिए गए हैं। संवैधानिक अनुच्छेदों में समानतावादी प्रावधानों के बावजूद दिन-प्रतिदिन महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों ने मानवता की स्थिति को संदिग्ध बना दिया है। स्त्रियाँ तो उपेक्षित रही ही हैं साथ ही वर्तमान उपभोक्तावादी संस्कृति ने संबंधों को भी उपभोक्तवादी बना दिया है। बच्चों, बूढ़ों और कमजोर वर्गों के प्रति होने वाले अन्याय, मानवता के प्रति खतरा हैं। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने इसीलिए कहा है कि कहीं भी अन्याय, न्याय के लिए खतरा है।

आज मानवधिकारों की सूची बढ़ती जा रही है लेकिन उनका अनुपालन और व्यवहार सीमित होता जा रहा है। अतः अधिकारों के उपयोग एवं उसके सम्मान हेतु आवश्यक है कि हम दूसरों के अधिकारों का सम्मान करें जिसमें जैव-अजैव घटकों सहित पर्यावरण, हमारा पृथ्वी ग्रह और समाज के सुभेद्य वर्ग आदि शामिल हैं। 'अर्थ शूट आउट डे' जैसी पहलों सहित जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने वाली पहलें अधिकारों के व्यापक परास को रेखांकित करती हैं। सभ्यताओं और संस्कृतियों का इतिहास बताता है कि मानव समाज के विकास में 'मानवता' के विकास के लिए अधिकारों का होना एवं लोगों द्वारा उनका व्यवहार में अनुभव करना महत्वपूर्ण है। ये मानवाधिकार असंख्य संघर्षों से उपजी गहरी पीड़ा और अपराजेय संवेदनाओं से प्राप्त धरोहर हैं। इनका अंतिम ध्येय यही है-

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्यभवेत्।।"
(सभी सुखी हों, सब निरोगी हों। सबका कल्याण हो, किसी को कोई दुख न हो।)

आशीष कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

चलो एक बार फिर से

'वन्दे मातरम्' के इस अंक में मैं एक ऐसे महान संगीतकार की चर्चा करूंगा जिन्होंने अपने संगीत संयोजन से बॉलीवुड की फिल्मी दुनिया को वर्ष 1958 से लेकर 1982 तक सुमधुर बनाया था। हमने उस संगीतकार की बनाई धुनों पर बने बहुत से गानों को सुना है और उससे आज भी आनंदित होते हैं। वो हैं महान रवि शंकर शर्मा जिन्हें हम 'रवि' के नाम से जानते हैं। रवि जी का जन्म 3 मार्च 1926 को दिल्ली में हुआ था। रवि को शास्त्रीय संगीत की औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त हुई थी। अपने पिता को भजन गाते हुए सुनकर वे संगीत की ओर आकर्षित हुए। उन्होंने स्वाध्याय से हारमोनियम और अन्य शास्त्रीय वाद्य-यंत्रों का अभ्यास करते हुए अपनी संगीत-शिक्षा को सम्पन्न और विविध बनाया। अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकता के कारण रवि ने दिल्ली के डाक व तार विभाग में इलेक्ट्रिशियन की नौकरी भी की। 1950 में उन्होंने बॉम्बे जाने का फैसला लिया और संघर्षों के बाद वे संगीतकार बनने में सफल रहे।

मैं, महान संगीतकार रवि के द्वारा संगीतबद्ध किए गए और महान गायकों जैसे कि किशोर कुमार, मोहम्मद रफी, लता मंगेशकर, आशा भोसले, मन्ना डे, महेंद्र कपूर आदि के द्वारा गाए गए कुछ सुप्रसिद्ध लोकप्रिय गीतों की चर्चा करूंगा जिनसे आज भी हमारा भरपूर मनोरंजन होता है।

वर्ष 1958 में अभिनेता किशोर कुमार द्वारा और अभिनेत्री नूतन द्वारा अभिनीत **'दिल्ली के ठग'** फिल्म प्रदर्शित हुई। इस फिल्म का एक गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ जिसे किशोर कुमार और आशा भोसले ने गाया था। ये गीत था-

'ये रातें, ये मौसम, नदी का किनारा, ये चंचल हवा..'

वर्ष 1960 में फिल्म **'चौदहवीं का चाँद'** प्रदर्शित की

गई जिसमें मुख्य भूमिका का निर्वहन गुरु दत्त और वहीदा रहमान ने किया था। इस फिल्म का टाइटल सॉन्ग (शीर्षक गीत) बहुत लोकप्रिय हुआ था-

'चौदहवीं का चाँद हो या आफताब हो
जो भी हो तुम खुदा की कसम लाज़वाब हो।'

इस गीत को मोहम्मद रफी ने स्वर दिया था और यह गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ और आज भी लोग इसे पसंद करते हैं।

वर्ष 1961 में राजेन्द्र कुमार, राज कुमार और आशा पारेख अभिनीत फिल्म **'घराना'** प्रदर्शित की गई जिसका एक गीत उस समय बहुत लोकप्रिय हुआ था। रवि के संगीत संयोजन में आशा भोसले द्वारा गाया गया वह गीत था-

'दादी अम्मा, दादी अम्मा मान जाओ..'

वर्ष 1962 में फिल्म **उम्मीद** प्रदर्शित की गई। इसमें जॉय मुखर्जी, नंदा और अशोक कुमार ने मुख्य भूमिकाओं में अभिनय किया था। इस फिल्म में रवि के संगीत संयोजन में शकील बदायुनी का लिखा हुआ और रफी साहब की मधुर आवाज में गाया गया गीत बहुत लोकप्रिय हुआ। वह गीत है-

'मुझे इश्क है तुझीसे मेरी जान ज़िंदगानी
तेरे पास मेरा दिल है, मेरे प्यार की निशानी'

वर्ष 1963 में प्रसिद्ध फिल्म **गुमराह** प्रदर्शित हुई जिसमें अभिनेता और अभिनेत्री की भूमिका क्रमशः सुनील दत्त और माला सिन्हा निभाई थी। इस फिल्म में रवि के द्वारा संगीतबद्ध किया गया साहिर लुधियानवी का एक गीत महेंद्र कपूर की आवाज में बहुत ही लोकप्रिय हुआ। यह गीत आज भी श्रोताओं में बहुत पसंद किया जाता है। गीत है-

'चलो एक बार फिर से अजनबी बन जाएं हम दोनों..'

वर्ष 1963 में **'उस्तादों के उस्ताद'** नाम से एक और फिल्म प्रदर्शित हुई। इस फिल्म में असद भोपाली के द्वारा लिखा हुआ और मोहम्मद रफी के द्वारा गाया गया एक गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ जिसके लिए संगीत रवि ने ही दिया था। यह गीत आज भी दिल को छू लेता है। वह गीत है-

'सौ बार जनम लेंगे'

वर्ष 1965 में तीन फिल्में बहुत हिट हुईं जिसके सभी गीत सुपरहिट हुए थे। इन फिल्मों का नाम था- खानदान, वक्त और काजल। **खानदान** फिल्म में राजेन्द्र कृष्ण का लिखा हुआ और लता मंगेशकर द्वारा गाया हुआ एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ। रवि के संगीत ने उस गीत को जीवंत बना दिया। वह गीत था-

'तुम्हीं मेरे मंदिर, तुम्हीं मेरी पूजा, तुम्हीं देवता हो..।'

फिल्म **काजल** में साहिर लुधियानवी द्वारा रचित एक भजन बहुत ही लोकप्रिय हुआ जिसे आशा भोसले ने अपनी आवाज दी थी। रवि के जादुई संगीत का ही प्रभाव है कि वह भजन आज भी बहुत सुना जाता है। वह भजन है-

'तोरा मन दर्पण कहलाए..'

तीसरी फिल्म **वक्त** के गीत भी साहिर लुधियानवी ने लिखे थे और संगीत तो रवि जी ने ही दिया था। इस फिल्म का दो गीत बहुत ही लोकप्रिय हुए। पहला गीत आशा भोसले ने गाया थे-

'आगे भी जाने ना तू, पीछे भी जाने ना तू'

और दूसरा गीत गाया था महान शास्त्रीय गायक मन्ना डे जी ने, जिसके बोल थे-

'ऐ मेरी जोहरा ज़बीं, तुझे मालूम नहीं..'

वर्ष 1966 में **दो बदन** फिल्म प्रदर्शित की गई। इस फिल्म में मनोज कुमार और आशा पारेख ने मुख्य भूमिकाओं का निर्वहन किया था। इस फिल्म के गीत लिखे थे शकील बदायुनी ने और संगीत रवि ने दिया था। रवि जी के संगीतबद्ध इस गीत को लता मंगेशकर ने गाया था। यह गीत बहुत लोकप्रिय हुआ था-

'लो आ गई उनकी याद, वो नहीं आए..'

वर्ष 1967 में प्रदर्शित की गई फिल्म **हमराज़** बहुत ही लोकप्रिय हुई जिसमें इसके गीतों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। सुनील दत्त, मुमताज़, राजकुमार और बलराज साहनी जैसे सितारों से सजी इस फिल्म में महेंद्र कपूर के गाए हुए दो गाने बहुत लोकप्रिय हुए। एक गीत था-

'ये...नीले गगन के तले, धरती का प्यार पले..।'

और दूसरा गीत था- **'ना मुँह छुपा के जियो और ना सर झुका के जियो'**

वर्ष 1968 में फिर रवि जी ने तीन फिल्मों में संगीत दिया। वे तीन फिल्में थीं- **दो कलियाँ, आखें और नीलकमल।** तीनों फिल्मों के लिए गीत साहिर लुधियानवी ने लिखे थे।

दो कलियाँ फिल्म में अभिनेता विश्वजीत और अभिनेत्री माला सिन्हा मुख्य भूमिका में थे। इस फिल्म में एक गीत को युगल रुप में मोहम्मद रफी और लता मंगेशकर ने गाया था और वह गीत हिट हुआ। वह गीत था-

'तुम्हारी नज़र क्यूँ खफ़ा हो गई'

वर्ष 1968 की दूसरी फिल्म **आँखें** में अभिनेता धर्मेन्द्र और अभिनेत्री माला सिन्हा ने मुख्य भूमिका अदा की। इस फिल्म में लता मंगेशकर का गाया हुआ एक गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ। वह गीत है-

'मिलती है ज़िंदगी में मोहब्बत कभी-कभी'

लोकप्रिय हुए थे लेकिन एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ जिसे मोहम्मद रफी ने अपना स्वर दिया था। वह गीत था

'तुझको पुकारे मेरा प्यार,
आजा..मैं तो मिटा हूँ तेरे प्यार में'

यह एक मर्मस्पर्शी गीत था जिसने सभी के हृदय को छू लिया।

वर्ष 1969 में **अनमोल मोती** फिल्म प्रदर्शित हुई जिसमें राजेन्द्र कृष्ण के गीत और रवि के संगीत से सजे गाने को महेंद्र कपूर ने अपनी आवाज दी जो कि हिट हुआ। वह गीत था-

'ऐ जाने चमन तेरा गोरा बदन, जैसे खिलता हुआ गुलाब'

फिल्म **एक फूल दो माली** में प्रेम धवन का लिखा हुआ और मोहम्मद रफी का गाया हुआ गीत बहुत लोकप्रिय हुआ। वह गीत था-

'ओ नन्हें से फ़रिश्ते, तुझसे ये कैसा नाता'

और इसी साल की तीसरी और बहुत बड़ी हिट थी फिल्म **नीलकमल**, जिसमें अभिनेता राजकुमार और अभिनेत्री वहीदा रहमान मुख्य भूमिका में थे। इस फिल्म के सभी गाने

किशोर कुमार ने रवि जी के संगीतबद्ध किए गए कुछ ही गानों को अपनी आवाज दी। फिर भी 1972 में 'धड़कन' और 1975 में 'एक महल हो सपनों का' फिल्म के लिए

किशोर कुमार ने दो गीत गाया जो कि बहुत लोकप्रिय हुए।

पहला गीत 'धड़कन' फिल्म का था- **मैं तो चला जिधर चले रस्ता**

और दूसरा 'एक महल हो सपनों का' गीत था- **देखा है जिंदगी को कुछ इतना करीब से**

वर्ष 1977 में 'अमानत' और 'आदमी सड़क का' फिल्म के लिए रवि जी ने संगीत दिया। दोनों फिल्मों के गीत हिट हुए।

अमानत फिल्म का गीत था- **दूर रहकर ना करो बात, करीब आ जाओ**..

और 'आदमी सड़क का' फिल्म का गीत था- **आज मेरे यार की शादी है**

दोनों ही गाने मोहम्मद रफी ने गाए थे जो कि सुपरहिट हो गए।

फिल्म 'निकाह' के गानों में रवि जी ने अपना अंतिम संगीत दिया। हसन कमाल के लिखे गानों को अभिनेत्री सलमा आगा ने अपनी आवाज दी। वो गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ। वो गीत है-

'दिल के अरमां आंसुओं में बह गए'

इस गीत के लिए अभिनेत्री सलमा आगा को पार्श्वगायिका का फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ।

संगीतकार रवि को फिल्म चौदहवीं का चाँद (1960), दो बदन(1966), हमराज(1967), आँखें(1968) और निकाह(1982) के लिए फिल्मफेयर पुरस्कारों के लिए नामांकन मिला। उन्हें फिल्म घराना(1960) और खानदान(1965) के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ। 7 मार्च 2012 को इस महान संगीतकार ने हमेशा के लिए हमसे विदा ली।

रेवती रंजन पोद्दार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

दारू ब्रह्म

श्री जगन्नाथ धाम पुरी क्षेत्र से करीब सौ किलोमीटर दूरी पर कृष्णपुर गाँव का निवासी निरंजन अपने पुत्र रतन और पोते गोपू के साथ रहता है। निरंजन का स्त्री-वियोग करीब दस साल पहले हो गया था। पर दुख की बात यह भी है कि तीन साल पहले उनकी बहू भी प्रसव के दौरान चल बसी थी।

आज सुबह से घर के आँगन में स्थित एक नीम के पेड़ को लेकर निरंजन और उसके पुत्र का झगड़ा हो गया। रतन उस पेड़ को काटकर बेचना चाहता है जबकि निरंजन उसे काटने नहीं देता है। बेटे ने चिल्लाकर कहा- " क्या बाबा, तुम इस पेड़ को लेकर स्वर्ग में जाओगे क्या?" बाप ने कहा- "जब तक जान है तब तक इस पेड़ को कोई हाथ नहीं लगाएगा। जो काटने आएगा मैं उसका जी-जान से विरोध करूंगा।" रतन आश्चर्यचकित होकर बोला- एक पेड़ के चलते तुम अपने बेटे को मार डालोगे? निरंजन ने गुस्से में कहा- हाँ, वही करूंगा। यह झगड़ा बहुत समय तक चला। ऐसा लगता था कि निरंजन की जान जैसे उस पेड़ में ही बसी है।

निरंजन का घर गाँव के एक चौराहे पर स्थित है और नीम का पेड़ घर से ईशान दिशा में स्थित है। घर मिट्टी का है और छत टाली का। छत पर कद्दू का एक पौधा चढ़ गया है । घर आम, कटहल, नीम की छाया से पूर्ण है। गर्मी के मौसम में आँगन पूरा ठंडा रहता है, शाम में चिड़ियों के गुंजन से वातावरण सुंदर हो जाता है। इस नीम का पेड़ की पाँच बड़ी शाखाएं हैं और जड़ में दीमक की ढीबी है जिसमें एक सांप रहता है लेकिन वह किसी को नुकसान नहीं पहुंचाता है। निरंजन को याद आया कि गोपू जब साल भर का था तो एक दिन खाट पर सोया था और पास में वह खुद भी चटाई पर सोया था। अचानक फुसफुसाहट से निरंजन की नींद टूटी। उसने देखा कि एक सियार आँगन से बाहर की ओर भाग रहा था और सांप ने उसका पीछा किया। उनको समझ में आया कि सियार छोटे गोपू को लेने आया था। सांप ने उसे बचा लिया था।

निरंजन के पिताजी ने जब इस कृष्णपुर में जमीन खरीदकर घर बनाया था तभी से यह नीम का पेड़ यहाँ पर है। रात को जब नीम के पत्ते हिलते थे तो उनकी धुन बचपन में निरंजन को लोरी जैसी लगती थी। एक दिन निरंजन के पिता नीम की डाल तोड़कर दातुन करने लगे तो अचानक चिल्लाकर बोले- यह तो कड़वा नहीं बिल्कुल मीठा है। गाँव के ब्राह्मणों ने पूछने पर बताया कि यह कोई साधारण नीम का पेड़ नहीं है। इसे दारू ब्रह्म कहते हैं। इसका कभी असम्मान मत करना और अच्छे से इसकी देखभाल करना। निरंजन नहीं जानता कि दारू ब्रह्म क्या है लेकिन वह पेड़ उसके दोस्त जैसा है। प्यार से निरंजन उसे दारू कहकर बुलाता है। अब वह सत्तर पार कर चुका है और पेड़ उससे कुछ बड़ा ही है।

एक बार गाँव के बुजुर्ग आदमी रघुनाथ पटनायक का लड़का बहुत बीमार हो गया था और डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। रघुनाथ ने निरंजन को अपना दुख बताया तो निरंजन ने कहा- मेरे पिता जी तो दारू को देवता मानते थे। आप भी अपना दुख यहाँ कह जाइए, देखते हैं क्या होता है। रघुनाथ ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की- दारू, मेरे बेटे को स्वस्थ बना दोगे तो मैं तुम्हारी पूजा करूंगा। रघुनाथ का बेटा ठीक हो गया और रघुनाथ ने बड़ी कृतज्ञता से दारू की पूजा की। तबसे आस-पास के गाँव में भी दारू के देवत्व का प्रसार हो गया।

दारू की स्निग्धता निरंजन के मन को प्रशांति देती है। दारू उसके सुख-दुख का साथी है। उसके जीवन में भी कम दुख तो नहीं था- पत्नी और बहू की मृत्यु और भी बहुत कुछ।

गोपू की जन्म की रात में तूफान के कारण रातभर बारिश हो रही थी। आँगन में एक सुपारी का पेड़ अचानक गिर पड़ा था। मातृहीन गोपू को देखकर निरंजन दारू के पास आकर रोने लगा। निरंजन को लगा कि दारू कह रहा है- परेशान मत हो दोस्त, यह प्रकृति का नियम है। देखो, कितना बूढ़ा पेड़ जिंदा है और तूफान से एक छोटा पेड़ अपनी जड़ से उखड़ गया। सब भाग्य है। अपने बेटे रतन की ही तरह उसने गोपू को भी पाला-पोसा लेकिन दारू को छोड़कर उसका कोई साथी नहीं है। खेती-बाड़ी का कामकाज बेटा रतन देखता है लेकिन कुछ ज्यादा कमाने के लिए हर समय इधर-उधर दौड़ता रहता है और इसलिए नीम का पेड़ काटना चाहता है। इससे कुछ पैसा उसके हाथ में आ जाता। निरंजन उससे कहता है- दारू एक देवता है, उसे बेचेगा? पाप नहीं लगेगा? रतन दुखभरी आवाज में बोला- मेरी पत्नी जो असमय चल बसी, क्या तुम्हारा देवता कुछ कर सका? निरंजन ने कोई जवाब नहीं दिया। हवा से कुछ पत्ते गिरने लगे मानों कह रहे हों- भाग्य.. भाग्य।

कुछ दिन बाद एक वैष्णव कृष्णपुर गाँव में भिक्षाटन पर आया। उसने बताया कि इस बार आषाढ़ मास अधिक मास है, परंपरा के अनुसार जगन्नाथ प्रभु के साथ तीनों मूर्तियों का नव-कलेवर का कार्य पुरी में शुरू होगा। आठ वर्ष, ग्यारह वर्ष और इक्कीस वर्ष बाद पुराना विग्रह बदलकर नई काष्ठ से निर्मित विग्रह की स्थापना की जाती है। जिस विशेष प्रकार की नीम की लकड़ी से मूर्तियाँ बनाई जाती हैं उसे दारू ब्रह्म

कहते हैं। पुराना विग्रह, मंदिर में समाधिस्थ कर दिया जाता है।

वैशाख महीने के शुक्लपक्ष में एक शुभदिवस पर पुरी-राजा के आदेश पर विद्यापति वंश के एक व्यक्ति और रावरराज विश्वावसु वंश के कई धार्मिक सज्जन, तीनों विग्रह निर्माण के लिए जरूरी काष्ठ-संग्रह के लिए निकल गए हैं। उनके साथ राजपुरोहित और मूर्ति बनाने वाला कारीगर भी है। इसका नेतृत्व प्रवीण दयितापति करते हैं जो कि पवित्र वृक्ष के संधान में जंगल-गाँव घूमते रहते हैं। इसे बनयाग यात्रा कहते हैं। कभी-कभी इन तीनों वृक्षों के संधान का स्वप्नादेश

भी मिलता है। इस बार जिन तीन वृक्षों के संधान का आदेश मिला है उसमें निरंजन के आँगन का नीम का वृक्ष भी शामिल है। उसे स्वयं जगन्नाथ प्रभु के विग्रह को बनाने के लिए चुना गया है।

निरंजन को सूचना मिली कि जिस लक्षण से युक्त नीम का वृक्ष जगन्नाथ प्रभु के लिए जरूरी है, वे सारे निरंजन के आँगन वाले वृक्ष में दिखते हैं। जैसे कि पेड़ का रंग थोड़ा सा कृष्णवर्णी होना, उसके पत्ते का मीठा होना, पेड़ पर शंख, चक्र, गदा और कमल के प्रतीक का बना रहना और तीन, पाँच व सात शाखाओं वाले इस वृक्ष पर किसी पक्षी के घोंसले का न होना और दीमक की ढीबी में सांप का रहना आदि। निरंजन फिर दारू के पास पहुँचा और बड़े ध्यान से उसने नीम के वृक्ष को देखा। ये सारे लक्षण देखते ही दारू के प्रति उसका दृष्टिकोण बदल गया। फिर उसे अपने पिता की बातें याद आई। यह तो देवमहिमा से युक्त है। लेकिन उसने तो इसे प्राणों से भी ज्यादा माना है। क्या इस घर, आँगन, बग़ीचे को छोड़कर दारू चला जाएगा? रतन आकर चिल्लाने लगा- क्या अब बचा पाओगे दारू को? वो लोग इसे काटकर ले जाएंगे। अगर मैं इसे बेच देता तो कुछ पैसे मिल जाते। निरंजन जोर से बोला- चुप हो रतन, देवता को बेचेगा? और कितना पाप कमाएगा? लेकिन अपने अंदर के कष्ट को निरंजन छुपा न सका। दिन-रात इसी आशंका में रोता रहा।

इधर दो दिन बाद मंदिर के लोग कृष्णपुर गाँव में पहुँच गए। साथ में एक बड़ी बैलगाड़ी भी थी। यही नियम है कि इस पवित्र वृक्ष को बैलगाड़ी से मंदिर तक ले जाया जाता है। निरंजन के आँगन में भीड़ लग गई। जगन्नाथ मंदिर के

बूढ़े दयितापति ने पहले पेड़ को प्रणाम किया, चारों तरफ से निरीक्षण किया और लाल सूत्र से पेड़ को घेर दिया। अब निष्ठा के साथ दारू की पूजा हुई, यज्ञ हुआ। गाँव की महिलाओं की शंखध्वनि से पूरा गाँव आनंदित हो उठा। दूसरे दिन दारू के सामने तीन कुठार रखा गया। एक सोने का, एक चांदी का और एक लोहे का। निरंजन अपने मिट्टी के घर में बांस की खूटी पकड़कर बैठा रहा। दारू के शरीर पर घाव वह नहीं देख सकता था। पहले दयितापति ने सोने की कुठार दारू पर चलाया। अंत में मूर्ति के कारीगर ने लोहे की कुठार से निरंतर आघात किया। निरंजन को लगा कि उसके हृदय का पंजर टूट रहा है। मड़-मड़ की आवाज से दारू जमीन पर गिर पड़ा। गोपू चिल्लाने लगा- दादा जी, देखो पेड़ को पूरी तरह से गिरा दिया। निरंजन घर से बाहर नहीं निकला। दारू की यह स्थिति वह नहीं देख सकता था। दारू के पत्तों और छोटी शाखाओं को जमीन के नीचे गाड़ दिया गया और मुख्य तने को रेशम के कपड़े से लपेटकर बैलगाड़ी पर रख दिया गया। उसके बाद जय जगन्नाथ की गूंज व शंख, घंटा, अनेक वाद्यों आदि की ध्वनि के साथ वे लोग लोग पुरी के लिए निकल गए। अस्त होते सूर्य के साथ निरंजन को लगा कि उसके जीवन का सूर्य भी अस्त हो गया।

आँगन सूना हो गया, दीमक की ढीबी को तोड़ा गया तो वहाँ कोई सांप नहीं मिला। निरंजन हमेशा ईशान कोण पर खाली जगह को देखता रहा। वह बैठकर मन ही मन रोता रहता था। आँखें सूज गई थीं। धीरे-धीरे उसकी आँखें बंद होने लगीं। निरंजन ने देखा कि ईशान दिशा में दारू की जगह पर ही छोटा सा पौधा अंकुरित हो रहा था और पलक झपकते ही वह विशालकाय हो गया। वह पौधा और कोई नहीं स्वयं दारू ब्रह्म ही था। उसमें बहुत सारे नीमफल दिखाई दिए। चिड़िया चोंच से दानों को इधर-उधर कर रही थी.. जहां भी देखो दारू ही दारू दिखाई दे रहा था। अचानक दूर से एक आवाज सुनाई दी- जो बोलता है कि मैं मानव-जाति की तरह पैदा होता हूँ और मर जाता हूँ, वह एक बेवकूफ है। मैं अविनाशी हूँ। अचानक द्वार पर गोपू की आवाज से निरंजन की नींद टूट गई। वह स्वप्नमग्न था.. .. उसके कानों में अभी भी वही आवाज गूंज रही थी- मैं अविनाशी हूँ।

गोपू अपने पिता रतन के साथ मेले में गया था, जहां उसने 'कृष्ण-अर्जुन' यात्रा-पाला देखा। कुरुक्षेत्र जंग के अंत में कृष्ण यही कह रहे थे- मैं अविनाशी हूँ..। गोपू ने रतन से पूछा कि कृष्ण भगवान ने ऐसा क्यों कहा? रतन बोला- अपने दादा से पूछना, मुझे पता नहीं। रात के अंधेरे में निरंजन घर से बाहर आया। ईशान दिशा में दारू के स्थान को देखता रहा, उसके मन का भार कम हुआ। दीमक की ढीबी के पास सांप की खोल पड़ी हुई है जो कि चाँदनी के कारण सफेद दिखाई पड़ रही थी। निरंजन मन ही मन हँसा- नव-कलेवर ! इधर निरंजन का दारू, पुरी में पहुँच गया। नव-कलेवर उत्सव धूमधाम से प्रारंभ हो गया था। ईश्वर एक है और अविनाशी है। यह उत्सव पूजा का एक अंग मात्र है। अतः जगन्नाथपुरी में भगवान का विग्रह दारूमय है जिसे 'दारू ब्रह्म' माना जाता है।

तापसी आचार्य (बसाक)
सहायक लेखा अधिकारी

अंडमान यात्रा

अंडमान द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीपों का एक समूह है, जो भारत का एक हिस्सा है। ये द्वीप अपनी आश्चर्यजनक प्राकृतिक सुंदरता, प्राचीन समुद्र तटों, समृद्ध समुद्री जीवन और विविध पारिस्थितिक तंत्रों के लिए जाने जाते हैं। अंडमान द्वीप कई स्थानीय जनजातियों का घर भी है, जिनमें से कुछ का या तो संपर्क नहीं है या फिर उनका बाहरी लोगों से सीमित संपर्क है। स्कूबा ड्राइविंग, स्नोर्कलिंग, बनाना बोट राइड, ग्लास बोट राइड, सी वॉकिंग, सबमरीन राइड जैसी गतिविधियां हमेशा पर्यटकों को अंडमान की ओर आकर्षित करती हैं।

20 अक्तूबर 2024 की एक सुहानी सुबह हमने विस्तारा की फ्लाइट यूके 747 से पोर्ट ब्लेयर के लिए अपनी यात्रा शुरू की। हम दोपहर को अंडमान पहुंचे और अपने होटल में चेक इन किया। हमने कुछ समय आराम किया। दोपहर का स्वादिष्ट भोजन करने के बाद हमने ऐतिहासिक सेलुलर जेल के लिए अपनी यात्रा शुरू की। सेलुलर जेल जिसे 'काला पानी' के नाम से भी जाना जाता है, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में स्थित एक ऐतिहासिक जेल है। इसे 1906 में अंग्रेजों ने राजनीतिक कैदियों को निर्वासित करने के लिए बनाया था और यह अपनी कठोर परिस्थितियों और लोगों के साथ क्रूर व्यवहार के लिए बदनाम थी। जेल अपने अनोखे डिजाइन के लिए जानी जाती है, जिसमें एक केंद्रीय वॉच टॉवर से निकलने वाले सात पंख शामिल हैं, जो एक मकड़ी के जाले जैसे दिखती है। शाम को लाइट शो भी होता है जिसकी अवधि 30 मिनट की है। इसमें जेल में क्रूर यातनाए झेलने वाले राजनीतिक कैदियों की दर्दनाक और प्रेरणादायी कहानियाँ सुनाई जाती हैं।

यह उनके बलिदान, लचीलेपन और भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के व्यापक संदर्भ पर प्रकाश डालता है। प्रकाश और ध्वनि शो भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई में अनगिनत व्यक्तियों द्वारा किए गए बलिदानों के लिए एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि है और किसी के लिए भी सेलुलर जेल देखने की अत्यधिक अनुशंसा की जाती है। उसी दिन हमने पोर्ट ब्लेयर में कोरबीन कोव बीच का भी दौरा किया।

अगले दिन हमारा भ्रमण स्थल नॉर्थ बे द्वीप और रॉस द्वीप था। नॉर्थ बे और रॉस द्वीप पोर्ट ब्लेयर के बहुत करीब स्थित हैं। नॉर्थ बे द्वीप अपनी नरम सफेद रेत और क्रिस्टल-क्लियर पानी के लिए जाना जाता है। नॉर्थ बे द्वीप विभिन्न जल क्रीडा गतिविधियों का केंद्र है जिनमें शामिल हैं:- स्नोर्कलिंग, स्कूबा ड्राइविंग, जेट स्कीइंग, ग्लास बॉटम बोट राइड, पनडुब्बी की सवारी। हमने यहाँ स्नोर्कलिंग और पनडुब्बी की सवारी की जिसने हमारे दिमाग में हमेशा के लिए एक यादगार छाप छोड़ दी। स्नोर्कलिंग और पनडुब्बी की सवारी पर हमने सुंदर प्रवाल भित्तियाँ, विभिन्न रंगीन मूँगे, कई रंगीन मछलियाँ और अन्य समुद्री प्रजातियाँ देखीं। इसके अलावा, पर्यटक नॉर्थ बे द्वीप के शांत वातावरण में आराम भी कर सकते हैं।

इस दिन हमारा अगला गंतव्य रॉस द्वीप था। रॉस द्वीप अंडमान द्वीप समूह में अपने शासन के दौरान ब्रिटिशों के लिए प्रशासनिक मुख्यालय के रूप में कार्य करता था। यह एक समय में एक अस्पताल, चर्च, बेकरी और अन्य सुविधाओं के साथ एक हलचल भरा इलाका था। इन संरचनाओं के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। यहाँ देखे गए जापानी बंकर, जापानियों द्वारा उनके कब्जे के दौरान बनाए गए बंकरों के अवशेष हैं, जो द्वीप की ऐतिहासिक स्थिति को दर्शाते हैं। यह द्वीप हरियाली से घिरा हुआ है और समुद्र के शानदार दृश्य प्रस्तुत करता है। रॉस द्वीप पक्षियों और अन्य वन्य-जीवों की विभिन्न प्रजातियों का घर है। रॉस द्वीप का दौरा करने के बाद हम 5 मिनट की छोटी नाव की सवारी करके पोर्ट ब्लेयर लौट आए।

22 अक्तूबर 2024 की सुबह, हमने एमवी बंबूका नामक सरकारी जहाज से हैवलॉक द्वीप (वर्तमान स्वराज द्वीप) के लिए अपनी यात्रा शुरू की। पोर्ट ब्लेयर से हैवलॉक द्वीप पहुँचने में लगभग 2 घंटे लगे। लहरदार समुद्री पानी के बीच से होकर यह यात्रा वास्तव में रोमांचकारी है। वहाँ पहुँच कर हमने अपने होटल में चेक-इन-किया। कुछ देर आराम करने के बाद हम प्रसिद्ध राधानगर समुद्र तट पर गए, जिसे अक्सर एशिया के सर्वश्रेष्ठ समुद्र तटों में से एक माना जाता है। यह अपने सफेद रेतीले तटों, स्पष्ट फीरोज़ा पानी और आश्चर्यजनक सूर्यास्त के लिए प्रसिद्ध है। यह तैराकी, धूप सेंकने और आराम करने के लिए आदर्श है। यहाँ हमने समुद्र में स्नान किया। शाम को हमने राधानगर तट पर मंत्रमुग्ध कर देने वाला सूर्यास्त देखा।

अगले ही दिन, हमने विजयनगर समुद्र तट का दौरा किया जो अपने शांत वातावरण और सुंदर दृश्यों के लिए जाना जाता है। फिर हम कालापाथर समुद्र तट पर गए और समुद्र के हरे रंग को देखकर मंत्रमुग्ध हो गए। यहाँ का पानी बिलकुल साफ है। हमने एक होटल में दोपहर का भोजन किया और स्वादिष्ट समुद्री भोजन का स्वाद लिया। फिर हम अपने अगले गंतव्य, नील द्वीप, जिसे अब आधिकारिक तौर पर शहीद द्वीप के रूप में जाना जाता है, के लिए पहले से बुक किए गए सरकारी जहाज एम.वी. बंबूका पर सवार होने के लिए जेटी पर पहुंचे। लगभग 4 बजे हम हैवलॉक द्वीप से एक घंटे की यात्रा के बाद नील द्वीप जेटी पर पहुंचे। नील द्वीप जेटी से हम नील द्वीप पर रात्रि विश्राम के लिए पहले से बुक किए गए समुद्रतटीय कॉटेज की ओर बढ़े। कॉटेज से दिखने वाला दृश्य वर्णन से परे था। अपने कॉटेज में पहुँचकर हमारा मन खुशी से भर गया। अपने कॉटेज में चेक-इन करने के बाद, हम समुद्र तट पर आकर्षक सूर्यास्त देखने के लिए लक्ष्मणपुर समुद्र तट की ओर बढ़े। लक्ष्मणपुर तट, जो अपने आश्चर्यजनक सूर्यास्त के लिए जाना जाता है, में सफेद रेत का एक लंबा विस्तार भी है और यह शाम के समय तट के साथ सुकून से चलने के लिए आदर्श है। सूर्यास्त देखने और समुद्र तट पर कुछ समय बिताने के बाद हम अपने होटल लौट आए और दिन एक अच्छे समय के साथ समाप्त हुआ।

अगले दिन, होटल में नाश्ता करने के बाद हम भरतपुर समुद्र तट पर गए। यह समुद्र तट अपने साफ पानी और जीवंत प्रवाल भित्तियों के लिए जाना जाता है, जो इसे स्नोर्कलिंग और तैराकी के लिए एक शानदार स्थान बनाता है। यहाँ हमने एक ग्लास बॉटम बोट की सवारी करके सुरमई प्रवाल

भित्तियों और विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और जीवों को देखा। हमने इसका भरपूर आनंद लिया। भरतपुर समुद्र तट के बाद, हम लक्ष्मणपुर समुद्र तट के पास स्थित प्राकृतिक पुल पर गए। यह प्राकृतिक चट्टान संरचना आगंतुकों के लिए एक लोकप्रिय आकर्षण है। दोपहर का भोजन करने के बाद हम पोर्ट ब्लेयर की अपनी वापसी यात्रा के लिए नील द्वीप जेटी की ओर बढ़े। शाम को लगभग 6 बजे हम पोर्ट ब्लेयर पहुंचे और पोर्ट ब्लेयर में अपने होटल में चेक इन किया। रात के खाने के बाद लगभग 8.30 बजे यह दिन समाप्त हो गया।

अगले दिन यानी 25 अक्तूबर 2024 को हमने पोर्ट ब्लेयर में शहर का दौरा किया। यहाँ हमने समुद्रिका नामक नौसेना संग्रहालय का दौरा किया जहां हमें विभिन्न प्रकार के मूँगे और नौसेना के जहाजों, विमानों और पनडुब्बी के मॉडल देखने को मिले। यहाँ नौसेना की वर्दी, हथियार और भारतीय नौसेना द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों का प्रदर्शन भी किया गया है। फिर हमने चैथम आरा मिल का दौरा किया जो एशिया की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी आरा मिलों में से एक है। आरा मिल की स्थापना अंग्रेजों ने अंडमान द्वीप समूह के प्रचुर लकड़ी संसाधनों का उपयोग करने के लिए की थी। फिर हमने मानव विज्ञान संग्रहालय का दौरा किया।

मानव विज्ञान संग्रहालय का दौरा अंडमान की विविध संस्कृतियो के बारे में जानने और उनके ऐतिहासिक महत्व की सराहना करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। यहाँ हम द्वीपों की स्वदेशी जनजातियों के इतिहास, उनकी जीवन शैली, परम्पराओं और ग्रेट अंडमानी, ओंगे, जरावा और सेन्टीनली सहित विभिन्न आदिवासी समुदायों की प्रथाओं के बारे में जान सकते हैं। संग्रहालय में स्वदेशी जनजातियों द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न कलाकृतियाँ, उपकरण और हस्तशिल्प भी दर्शनीय हैं। इनमें मछली पकड़ने के उपकरण, शिकार के उपकरण और पारंपरिक कपड़े शामिल हैं। शाम को हमने विभिन्न वस्तुओं की ख़रीदारी के लिए पोर्ट ब्लेयर के बाज़ारों का दौरा किया।

26 अक्तूबर 2024 को, लगभग 3.30 बजे हमने जारवा जंगल और बारातांग द्वीपों के लिए अपनी यात्रा शुरू की। यह यात्रा रोमांचकारी और उत्साहजनक क्षणों से भरी है। जारवा जंगल की यात्रा एक गहन अनुभव है, जो अंडमान द्वीप समूह के प्राकृतिक वातावरण और स्वदेशी जनजातियों के जीवन

दोनों के बारे में जानकारी प्रदान करती है। जारवा जंगल का दौरा करने से आदिवासी जारवा जनजाति द्वारा बसाए गए अंतिम शेष जंगल क्षेत्रों में से एक का अनुभव करने का अनूठा अवसर मिलता है। लगभग 1 घंटे की यात्रा के बाद हम जारवा जंगल के प्रवेश द्वार पर पहुँच गए। द्वार दिन में 4 बार खुलता है – सुबह 6 बजे, 9 बजे, दोपहर 12.30 बजे और 3 बजे। हमने वहाँ प्रतीक्षा बिन्दु पर लगभग एक घंटे तक इंतजार किया। द्वार सुबह 6 बजे खुला और फिर हमारी यात्रा लगभग 42 किलोमीटर तक फैले जारवा जंगल से शुरू हुई। जारवा लोगों का बाहरी लोगों के साथ सीमित संपर्क है। आगंतुक, आदिवासी लोगों और जंगल की कोई तस्वीर नहीं ले सकते हैं। जारवा जंगल के माध्यम से 42 किलोमीटर की निरंतर यात्रा के बाद हम एक जेटी पर आए, जहां से हम बारातांग द्वीप के लिए एक नाव पर सवार हुए। 10 मिनट की यात्रा के बाद हम बारातांग द्वीप पहुँच गए।

बारातांग द्वीप अंडमान द्वीप समूह में एक छुपा हुआ रत्न है, जो रोमांच, प्राकृतिक सौंदर्य और शांति का मिश्रण पेश करता है। बारातांग द्वीप पहुँचने पर हमने चूना पत्थर की गुफा तक पहुँचने के लिए एक स्पीड बोट ली। गुफा की यात्रा में मैंग्रोव जंगलों के बीच से नाव की सवारी शामिल है। स्पीड बोट से उतरने के बाद हमें गुफा तक पहुँचने के लिए एक घंटे तक पैदल चलना पड़ा। घने जंगल से होते हुए गुफा तक का ट्रेक वास्तव में रोमांचकारी है। गुफा में हजारों वर्षों से निर्मित प्रभावशाली स्टाइलेक्टाइट्स और स्टाइलेग्माइट्स हैं। गुफा का दौरा करने के बाद, हम स्पीड बोट द्वारा द्वीप जेटी पर लौट आए। फिर हमने मिट्टी के ज्वालामुखी को देखने के लिए एक कार ली। बारातांग मिट्टी के कई ज्वालामुखियों का घर है, जो आकर्षक भूवैज्ञानिक संरचनाएँ हैं। यहाँ हमने मिट्टी के ज्वालामुखी से निकलने वाली बुदबुदाती मिट्टी को देखा। मिट्टी के ज्वालामुखी का दौरा करने के बाद, हम जारवा जंगल के माध्यम से पोर्ट ब्लेयर लौट आए, जिसमें लगभग 3 घंटे लगे।

27 अक्तूबर 2024 को, नाश्ते के बाद हम नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए अपनी वापसी यात्रा के लिए वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर बढ़े। हम कोलकाता के लिए विस्तारा यूके778 की उड़ान में सवार हुए। हमारी उड़ान दोपहर 12.20 बजे पोर्ट ब्लेयर से रवाना हुई और 2.35 बजे कोलकाता पहुंची। एक कभी न भूलने वाले यात्रा कई स्मृतियों के साथ पूरी हुई।

सौमी बंद्योपाध्याय
सहायक लेखा अधिकारी

सोशल मीडिया के प्रभाव

वर्तमान युग को यदि सोशल मीडिया का युग कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह सूचनाओं के प्रसार के लिए सभी तीव्रतम माध्यमों में से एक है। सोशल मीडिया ने बच्चों, बूढ़ों, नवयुवक, महिला-पुरुष, अमीर-गरीब, साक्षर-निरक्षर इत्यादि सभी वर्गों को प्रभावित किया है। आए दिन अखबारों में इसके उपयोग के प्रभाव को देखा जा रहा है। सोशल मीडिया के माध्यम से सूचनाओं का प्रसार, मात्र एक क्लिक में ही सीमित हो गया है। चाहे हमें कोई संदेश भेजना हो या किसी तस्वीर को भेजना हो या अपने सगे-संबंधियों से, मित्रों से वीडियो कॉल के माध्यम से बातें करनी हों या घटनाओं का लाइव प्रसारण करना हो, इन सभी के लिए हमें सिर्फ एक क्लिक की जरूरत होती है। इस सोशल मीडिया का प्रभाव ऐसा है कि आए दिन कुछ न कुछ वायरल होता ही रहता है। पलक झपकते ही यह किसी को भी सेलेब्रिटी जैसा लोकप्रिय बना देता है।

आइए, संचार के इस माध्यम की लोकप्रियता को विभिन्न परिस्थितियों से समझें। सुश्री रागिनी वातानुकूलित डिब्बे में सफर कर रही थीं। अचानक कुछ लफंगे ट्रेन में चढ़े और यात्रियों को परेशान करने लगे। आरक्षित टिकट नहीं होने के बावजूद उग्र एवं जाहिलों की तरह व्यवहार करते हुए वे लोग रागिनी की सीट पर आ गए। रागिनी ने अपना मोबाइल निकाला और घटना को बताते हुए एक ट्वीट रेल

मंत्रालय को टैग कर दिया। रेल मंत्रालय ने तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए अपने सुरक्षा बलों को रागिनी के डिब्बे में भेज दिया। सुरक्षा बलों को देखकर एक ओर यात्रियों की जान में जान आई और दूसरी ओर लफंगे हक्के-बक्के रह गए। यात्रियों के दर्ज बयानों के आधार पर सुरक्षाकर्मियों ने लफंगों को गिरफ्तार कर लिया और रागिनी को शाबाशी भी दी। रागिनी ने सोशल मीडिया का सही वक्त पर इस्तेमाल किया।

इस सोशल मीडिया का अपना एक अलग ही प्रभाव है। रानू मंडल हों या बिहार का साहसी बच्चा सोनू हो, बाबा का ढाबा चलाने वाला बाबा हो, इनके जैसे कई लोग वायरल होकर रातों-रात प्रसिद्ध हो गए। ऐसे कुछ लोग के जीवन को सोशल मीडिया ने पूरी तरह बदलकर रख दिया। आजकल आए दिन कुछ न कुछ ट्रेंड होता रहता है जो लोगों का ध्यान खींचता है। सोशल मीडिया अब आंदोलनों का भी आधार बन रहा है। सरकारें जब आम लोगों की समस्या नहीं सुनती हैं तो शिकायतकर्ता उसे ट्रेंड करते हैं। परीक्षाओं की बात हो तो छात्रों ने कई अवसरों पर अपनी बात को सोशल मीडिया के माध्यम से सरकार तक पहुंचाया है।

भारत में होने वाले चुनावों में सोशल मीडिया का प्रभाव काफी हद तक देखने को मिलता है। चाहे वो स्थानीय चुनाव हों या आम चुनाव हों, हर कोई चुनावों में सोशल मीडिया का प्रयोग कर रहा है। सभी दलों में एक सोशल मीडिया सेल है। लगभग हर नेता इसका प्रयोग लोगों से जुड़ने के लिए कर रहा है। सरकार भी सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी नीतियों और योजनाओं की जानकारी जनता तक पहुँचा रही है। लोग भी इसके माध्यम से अपने सवाल नेताओं और मंत्रियों से पूछते हैं। इसके माध्यम से केवल नेता ही नहीं बल्कि प्रसिद्ध कलाकार, डॉक्टर, सामाजिक कार्यकर्ता, खिलाड़ी आदि अपनी बातें सार्वजनिक करते हैं। सोशल मीडिया ऐसे लोगों को उनके लक्षित समुदाय से जोड़ता है।

हांलाकि सोशल मीडिया का अपना दुष्प्रभाव भी है। हमारा अधिकांश समय रील्स बनाने व देखने में, अपनी हर जरूरत की छोटी बातें इसके माध्यम से साझा करने में, अधिकांशतः नकारात्मक टिप्पणी करने आदि में बीत रहा है। इसके अधिक उपयोग से लोगों के बीच विशेषतः युवाओं के बीच बेकारी, अकेलेपन आदि की समस्याएं बढ़ रही हैं। इससे मनोवैज्ञानिक दुष्प्रभाव भी पड़ रहा है। यदि लोग अपनी तस्वीर इसके माध्यम से सांझा नहीं करते हैं तो उन्हें खालीपन व चिड़चिड़ापन महसूस होता है। इससे निजता के हनन की समस्या भी गंभीर हो गई है।

जो भी हो, कुछ दुष्प्रभावों जैसे फेक न्यूज का प्रसार, बेकारी की समस्या, समाज में बढ़ता अकेलापन आदि को इसके सकारात्मक प्रभावों के साथ एक तराजू में रखें इसके व्यापक लाभ को समझ सकते हैं। यह हम पर निर्भर है कि हम इसका उपयोग कैसे कर रहे हैं। सूचनाओं के तीव्र प्रसार के साथ वर्तमान पीढ़ी को इसके सकारात्मक उपयोग पर ध्यान देना चाहिए ताकि हम इसके लाभों को अधिकाधिक उपयोग कर सकें। जानकारी और डाटा के साझा करने का माध्यम जितना सरल और विश्वसनीय होगा, हमारी प्रगति भी उतनी ही तीव्र व विश्वसनीय होगी।

सुमित कुमार बर्णवाल
एमटीएस

अनोखी दोस्ती

आज मम्मी घर पर नहीं थीं। ऐसे में सुबह तड़के उठकर निशा सारे काम निपटाने लगी, जिससे शाम को ऑफ़िस से आकर उसे थोड़ी राहत हो। काम करते–करते कब सात बज गए, पता ही नहीं चला। ऐसा प्रायः हो जाता है कि काम के चक्र में कुछ जरूरी काम छूट ही जाते हैं। किचन का काम कर वह नहाने चली गई। आज पूजा भी तो करनी पड़ेगी। माँ के होने से उसे इन सभी कामों की चिंता नहीं होती थी। कितना सहारा मिल जाता है माँ के होने से, निशा ने सोचा। ढेर सारे काम निपटाते-निपटाते सात पैंतालीस हो गए। कब से वह कुंज को आवाज़ लगा रही है लेकिन वो सुनता कहाँ है। उसका टिफिन पैक करते हुए निशा ने संजू को उसको उठाने के लिए कहा। जैसे–तैसे सब निपटाकर आठ पन्द्रह पर वो कुंज को लेकर उसे स्कूल ड्रॉप करने के लिए निकल पड़ी। उसको स्कूल पहुंचाकर वह ऑफ़िस के लिए भागी।

ऑफिस इतना नजदीक भी नहीं था कि वह आराम से वहाँ पहुँच जाए। ऑफ़िस से वह दस बजकर पैंतालीस मिनट पर निकली। ग्यारह बजकर पंद्रह मिनट पर कुंज के स्कूल की छुट्टी होने वाली थी। आधे घंटे के इस सफर में तरह-तरह के विचार उसके मन को परेशान करते थे। स्कूल से वापस आना है और फिर कुंज ऑफिस में कैसे रहेगा? शोर तो नहीं करेगा.... और बाकी लोगों को परेशान तो नहीं करेगा आदि। माँ नहीं थी इसलिए निशा के लिए समस्याएं बढ़ गई थीं, सो कुंज को स्कूल से लेकर वह वापस ऑफ़िस के लिए निकल पड़ी। कुंज पहले भी ऑफिस में आता था इसलिए वह धीरे-धीरे सभी लोगों से घुल-मिल गया था। अब तो ऐसी स्थिति थी कि कुंज को लगभग पूरा ऑफ़िस ही जानता था।

दोनों सेक्शन में पहुंचे। घुसते ही कुंज ने सबसे पहले अपूर्व भैया को आवाज़ लगाई। लेकिन आज वो थोड़ा लेट आने वाले थे, सो उन्हें सीट पर ना देखकर कुंज थोड़ा मायूस हुआ। उसका मन तो नहीं था लेकिन निशा जबरदस्ती उसके कपड़े बदलने के लिए उसे बाथरूम ले गई। बाथरूम से लौट आने पर भी उसे अपूर्व भैया नहीं दिखे। निशा ने उसे खाने के लिए कुछ दिया, उसने फिर पूछा कि भैया कब आएंगे। अभी उसने ये बोला ही था कि उसे- कैसे हो भाई? की आवाज़ आई। हडबड़ा कर उठते हुए उसने चिल्लाकर पूछा- अपूर्व भैया तुम आ गए...! निशा ने झिड़कते हुए कहा- 'आप' बोलो। इसको अनदेखा करते हुए इतनी ही देर में उसने खाना और अपनी सीट दोनों छोड़ दी। उन्हें देखकर उसके चेहरे की रंगत ही बदल गई। कुंज की खुशी से निशा को बहुत सुकून मिलता था। कुंज झटपट भागकर अपूर्व भैया की सीट के पास जा खड़ा हुआ। अपनी तोतली जुबान में भैया से पास पड़ी प्लास्टिक की कुर्सी बढ़ाने का आग्रह करने लगा। निशा समझाती रह गई कि वो अभी आए हैं, उन्हें थोड़ा बैठने दे। लेकिन उसे कहाँ चैन था? उसके उत्साह को देखकर निशा ने भी फिर बात को वहीँ छोड़ दिया।

अब दोनों की बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ, जिसका कमोबेश सभी को इंतज़ार रहता था। मज़े की बात ये थी कि कुंज अपूर्व भैया से वो सारी बातें भी बताता था जो शायद वह निशा को नहीं बता पाता था। इसी का फायदा उठाकर निशा अपूर्व भैया से उसके स्कूल में हुई बातों को जानने की कोशिश करती। आज भी उसने अपूर्व भैया को इशारा किया कि कुंज से स्कूल में हुई बातों को थोड़ा जानने की कोशिश करें। अपूर्व भैया की बात निकलवाने की कला को सभी जानते थे। कुंज भी उन्हें मजे से सारी बात बताता है। उसे अच्छा लगता है कि कोई उसकी बालपन की बातों को बड़ी गंभीरता से सुनता है और उसके साथ खेलता और

उसी के तरीके से पढ़ाई भी करता है। खेल–खेल में उन्होंने कुंज से बात निकलवाना शुरू किया। 'और भाई आज स्कूल में क्या किया?'– उनके पूछने भर की देर थी। कुंज ने फट से बताना शुरू किया।

"आज तो मैं थोड़ा लेट हो गया था, इसलिए थोड़ा पीछे बैठना पड़ा। मैं भाग कर गया, लेकिन सामने जगह नहीं था ना" अच्छा! – कुंज के लिए अपनी टेबल पर जगह बनाते हुए अपूर्व भैया बोले। उन्हें ठीक पता था कि बात करते–करते कुंज उनकी टेबल पर बैठेगा। हुआ भी यही। स्कूल की बात से कुंज का सारा ध्यान अब टेबल पर बैठने पर चला गया। अपूर्व भैया ने उसे बैठाते हुए बात आगे बढ़ाने का प्रयास किया। और कुछ पढाई हुई आज क्लास में?– कुछ देर तो वह सोचता रहा, लेकिन बोल ही दिया कि आज मैम क्लास में डिक्टेशन कराई थी। लेकिन मैं पीछे बैठा था ना, तो थोड़ा गड़बड़ कर दिया मैंने। कुंज की बात सही थी। डिक्टेशन में आज उसने ऊपर नीचे लिखा था। अपूर्व भैया कुंज की बातों को गंभीरता से सुनते थे और फिर हल्के-फुल्के तरीके से उसे स्कूल के होमवर्क को पूरा करने के लिए प्रेरित करते थे।

किन्हीं कारणों से माँ अभी कुछ दिनों के लिए नहीं आने वाली थी। ऑफ़िस में कुछ ऐसा काम था कि निशा के लिए छुट्टी लेना भी संभव नहीं था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे मैनेज कर पाएगी। बात–बात में उसने अपनी इस समस्या का भी ज़िक्र किया। सेक्शन के लगभग सभी लोगों ने इस बात के लिए हामी भर दी कि कुंज को स्कूल के बाद निश्चिंत होकर ऑफ़िस ले आए। निशा की समस्या जैसे झट से सुलझ गई। अब तो लगभग रोज़ कुंज स्कूल से ऑफ़िस आता। सेक्शन में सभी का उससे लगाव था, लेकिन अपूर्व भैया और उसकी अनोखी दोस्ती तो देखने लायक थी। अपना काम निपटाने के बाद निशा कुंज को पढ़ा भी लेती थी। हालांकि उसका पूरा ध्यान खेलने में रहता था। पढ़ाते-पढ़ाते उसे कभी कभार गुस्सा भी आ जाता। उस समय अपूर्व भैया कुंज की ढाल बन जाते। उनके चेहरे के हाव–भाव से निशा को ऐसा अनुभव होता कि उसका कुंज को डांटना उन्हें अच्छा नहीं लगता था। एक बार तो उन्होंने निशा को कुछ अनमने स्वर में बोल दिया था- 'मत डांटिए, डांटने से वो थोड़ी ना पढ़ लेगा।' उनके ऐसा बोलने पर निशा को थोड़ा भी

बुरा नहीं लगा। बल्कि एक अपनत्व की अनुभूति से उसके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान छा गई।

इस पूरे सप्ताह कुंज निशा के साथ ऑफ़िस ही रहा। उसके क्लास की छुट्टियाँ चल रही थी। माँ को किसी शादी में जाना था। सो कुंज भी उसके साथ ऑफ़िस आता। अब निशा उसको पढ़ाने की बहुत कोशिश नहीं करती। उसकी इस मुश्किल को भी अपूर्व भैया ने दूर कर दिया। ऑफ़िस पहुँचने के बाद नाश्ता करके कुंज उनके पास पहुँच जाता। उनके पास सरल भाषा में उसको पढ़ाने के इतने तरीके थे कि कुछ देर में ही कुंज की पढाई भी हो जाती। एक दिन उन दोनों के अद्भुत तरीकों से पढने को देखकर निशा से रहा नहीं गया तो उसने अपूर्व भैया को बोल दिया कि –'भैया आप गलत प्रोफेशन में है। इतना सब्र जो मुझमें होता तो पढाई को लेकर इसकी मेरी लड़ाई ही ख़त्म हो जाती। आपके तरीकों के बारे में अगर जो ऑनलाइन कोचिंग वालों को पता चल जाए तो आपको मुंह-मांगी सैलरी पर वो नौकरी दे देंगे।' अपूर्व भैया कुंज को प्रतिदिन ऐसी कहानी सुनाते थे जो उसे अपने दोस्तों और स्कूल की शिक्षा से जोड़ती थी। जैसे ही उनकी टेबल पर बैठने की तैयारी करता वो एक रफ़ पेज लेते और उसमें जगह जगह कई डॉट बना देते। उन सभी डॉट्स को जोड़ते हुए वो एक कहानी बना देते और रोज़ कहानी के पात्र, घटना और बिंदु के माध्यम से उसकी पढाई हो जाती। मजेदार बात ये थी कि कुंज घर जाने पर माँ को और संजू को भी वे सारी कहानियाँ सुनाता था।

अपूर्व भैया को पढ़ने का बहुत शौक था। व्यक्तिगत जीवन में उन्होंने बहुत संघर्ष देखा था। शायद यही कारण था कि वो दिन-रात परिश्रम करते। उनका एक ही तो सपना था कि खूब परिश्रम करके देश की सर्वोच्च परीक्षा यूपीएससी को पास करें। उनके अथक परिश्रम और संघर्ष को सफलता भी मिली। उन्होंने यूपीएससी की प्राथमिक परीक्षा पास कर ली। अब वो अंतिम परिणाम से सिर्फ एक कदम दूर थे। उन्होंने ऑफ़िस से लम्बी छुट्टी ली और और परीक्षा की तैयारी में जुट गए। इस बीच जब–जब कुंज ऑफ़िस आया तो उसने अपूर्व भैया को खूब मिस किया। वह रह-रहकर निशा से और सेक्शन के

अन्य लोगों से अपूर्व भैया के बारे में पूछता रहता था।

इस बीच अपूर्व भैया ने यूपीएससी की अंतिम परीक्षा देने के बाद वापस ऑफ़िस ज्वाइन कर लिया। कुंज भी कभी–कभार ऑफ़िस आ जाता और दोनों की आपसी समझ से पूरे सेक्शन का मन लगा रहता। कुंज ने उनके साथ खेल–खेल में बहुत सी चीज़ें और सीख ली। लेकिन उनकी इस अनोखी दोस्ती के ये कुछ आखिरी के ही क्षण थे। अचानक से वो हुआ, जिसके बारे में किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। निशा के स्थानांतरण का आदेश आ गया।

अगले दिन निशा ऑफ़िस गई। रूटीन तो पहले जैसा ही था, लेकिन आज सेक्शन में सभी के चेहरे उतरे हुए थे। पहले की ही तरह कुंज आज भी स्कूल से ऑफ़िस आया। उसे तो आभास भी नहीं था कि क्या कुछ होने वाला है.. आते ही अपने अपूर्व भैया के पास भागकर गया। उन दोनों की बातों को सुनकर आज निशा का मन भारी था। उस खूबसूरत पल को वह पूरे जीवन के लिए अपनी यादों के खज़ाने में बंद कर लेना चाहती थी। कुंज तो बच्चा था, सो ये बोल के चला आया कि मैं मम्मा के साथ फिर आ जाऊंगा, लेकिन निशा और पूरा सेक्शन जानता था कि अब मिलना कहाँ हो पाएगा। अपूर्व भैया ने अपने मन के भारीपन को छुपाने की कोशिश की। उन्हें भी मालूम था कि कुंज उनके लिए आषाढ़ में बरखा की बूँद जैसी खुशियां लाता था। अब न वे शरारतें रहेंगी और न ही उनकी कहानियों को कोई सुनेगा। निशा ने ऑफिस से विदा लेते हुए महसूस किया कि अपूर्व भैया कुंज के लिए बहुत भावुक हो गए थे; बस आँसू छुपा रहे थे। उनकी इस अनोखी दोस्ती और सेक्शन से मिले प्यार को भारी मन और नम आँखों के साथ सजाकर निशा ने ऑफिस को अलविदा कहा।... अनोखी दोस्ती की यादें ऑफिस की गैलरी से लेकर सेक्शन तक में बिखर गई थीं जिन्हें बस महसूस किया जा सकता था।

प्रियंका संजीव सिंह
पूर्व कनिष्ठ अनुवादक

क्या हफ्ते में 70 घंटे काम करना सेहतमंद है?

आज के तेजी से बदलते दौर में, खासकर शहरी क्षेत्रों में, काम के घंटे दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं। कई लोग अपने करियर को प्राथमिकता देते हुए, अत्यधिक काम करने को सही मानते हैं। कुछ व्यक्तियों के लिए हफ्ते में 70 घंटे काम करना एक सामान्य बात बन गई है। लेकिन क्या यह सच में सेहत के लिए फायदेमंद है, या फिर यह हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकता है? इस लेख में हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि क्या हफ्ते में 70 घंटे काम करना सेहतमंद है।

1. **शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:** हफ्ते में 70 घंटे काम करना शारीरिक रूप से बेहद थकाऊ हो सकता है। लंबे समय तक लगातार काम करने से शरीर पर भारी दबाव पड़ता है, जिससे मांसपेशियों में दर्द, सिरदर्द, आंखों की समस्याएँ, और नींद की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। लंबे समय तक लगातार बैठकर काम करने से कमर और पीठ में दर्द भी हो सकता है। वर्तमान में अधिकतर कार्य अकसर कम्प्यूटर के जरिये होता है। अधिक समय तक कम्प्यूटर पर कार्य करने से आंखो को भी नुकसान पहुंच सकता है। इसके अलावा, नींद की कमी शरीर के इम्यून सिस्टम को कमजोर कर सकती है, जिससे बीमारियाँ जल्दी लग सकती हैं।
2. **मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:** शारीरिक स्वास्थ्य के अलावा, मानसिक स्वास्थ्य भी हफ्ते में इतने घंटे काम करने से प्रभावित हो सकता है। लगातार काम का दबाव और तनाव मानसिक थकावट का कारण बन सकते हैं। इससे अवसाद (डिप्रेशन), चिंता (एंग्जाइटी), और अन्य

मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। मानसिक रूप से थका हुआ व्यक्ति अपने काम में ध्यान नहीं दे पाता और निर्णय लेने में भी कठिनाई महसूस करता है। इसके परिणामस्वरूप कार्यक्षमता में कमी आ सकती है और वह व्यक्ति लंबे समय में अपने काम के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण भी अपना सकता है।

3. **सामाजिक जीवन और रिश्तों पर प्रभाव:** हफ्ते में 70 घंटे काम करने से व्यक्तिगत जीवन पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है। इस दौरान व्यक्ति को अपने परिवार, दोस्तों और सामाजिक दायित्वों के लिए समय नहीं मिल पाता। इसका असर रिश्तों पर भी पड़ सकता है। परिवार के साथ समय न बिताने से पारिवारिक रिश्ते कमजोर हो सकते हैं और व्यक्ति सामाजिक गतिविधियों से कट सकता है। इससे अकेलापन और तनाव बढ़ सकता है, जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
4. **कार्यक्षमता पर प्रभाव:** विभिन्न शोधों से यह पता चला है कि अत्यधिक काम करने से कार्यक्षमता में गिरावट आती है। एक व्यक्ति जब बहुत अधिक घंटे काम करता है, तो उसका ध्यान और उत्पादन क्षमता प्रभावित होती है। थकान के कारण, वह अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से निभाने में सक्षम नहीं होता। इस प्रकार, अधिक काम करने से न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ता है, बल्कि इसका असर कार्यक्षमता पर भी पड़ता है।
5. **जीवन का संतुलन:** हफ्ते में इतने घंटे काम करने से जीवन का संतुलन बिगड़ जाता है। स्वास्थ्य, परिवार, मित्र और आत्म-देखभाल के लिए समय कम पड़ने लगता है। जीवन का संतुलन बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य की समान रूप से देखभाल की जानी चाहिए। अगर किसी के पास खुद के लिए समय नहीं होता, तो वह जीवन के सुखों को पूरी तरह से नहीं अनुभव कर सकता।

निष्कर्ष:

हफ्ते में 70 घंटे काम करना सेहत के लिए नुकसानदायक हो सकता है। शरीर और मस्तिष्क दोनों को पर्याप्त आराम और रिकवरी की आवश्यकता होती है। जब कोई व्यक्ति लंबे समय तक लगातार काम करता है, तो उसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बेहतर होगा कि हम अपने कार्य और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाए रखें, ताकि हम अपने स्वास्थ्य, रिश्तों और जीवन के अन्य पहलुओं को भी प्राथमिकता दे सकें। काम के घंटे कम करने, विश्राम लेने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने से हम अपने जीवन को और अधिक समृद्ध बना सकते हैं।

अतुल कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

भारत की विविधता

बहुत समय पहले की बात है, जब भारत की धरती पर एक छोटा सा गांव था, जिसका नाम संगमपुर था। यह गांव केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं था, बल्कि यह विविधता और एकता का प्रतीक था। गांव की गलियां सांस्कृतिक धरोहरों की कहानियां कहती थीं। संगमपुर में हर जाति, धर्म और समुदाय के लोग रहते थे। यहां मंदिर की घंटियां, मस्जिद की अज़ान, गुरुद्वारे का कीर्तन और चर्च की प्रार्थनाएं, सब एक साथ गूंजती थीं। लोग अपनी-अपनी आस्थाओं और परंपराओं का पालन करते हुए एक-दूसरे की संस्कृति का सम्मान करते थे। गांव के बीचों-बीच संगम-वृक्ष नाम का एक विशाल बरगद का पेड़ था। यह पेड़ गांव का केंद्र था। लोग इसे पवित्र मानते थे और इसके नीचे हर शाम इकट्ठा होकर अपने जीवन के अनुभव साझा करते थे। बच्चे यहां कहानियां सुनते, युवा योजनाएं बनाते और बुजुर्ग जीवन का ज्ञान बांटते।

संगमपुर की सबसे बड़ी खूबसूरती थी यहां के त्यौहार। गांव में हर धर्म और संस्कृति का उत्सव पूरे जोश और उमंग के साथ मनाया जाता था।

- होली के दिन गांव के हर घर से लोग रंग और गुलाल लेकर निकलते। रंग-बिरंगे कपड़ों में लिपटे हुए लोग यह भूल जाते कि कौन किस धर्म या जाति का है।
- दीवाली की रात पूरा गांव दीपों और मोमबत्तियों की रोशनी से जगमगा उठता। मुसलमान परिवार भी हिंदू पड़ोसियों के साथ दीये जलाते, और ईसाई परिवार मिठाइयां बांटते।
- ईद के दिन गांव के हर कोने में सेवईं की खुशबू फैल जाती। हिंदू और सिख परिवार मुस्लिम भाइयों के साथ ईद की खुशियां मनाते।
- क्रिसमस के समय, गिरजाघर में बड़ी सजावट होती। सभी धर्मों के बच्चे सांताक्लॉज़ से उपहार पाने के लिए उत्सुक रहते।

इस तरह हर त्यौहार न केवल धर्म की पहचान था, बल्कि गांव के लोगों के बीच संबंध मजबूत करने का एक माध्यम भी था।

संगम पुर की विविधता केवल धर्म और उत्सव तक सीमित नहीं थी। यह गांव भाषाओं और कलाओं का भी संगम था।

- गांव के उत्तर दिशा में बसे लोग हिंदी बोलते थे।
- दक्षिणी क्षेत्र के लोग तमिल और तेलुगु में अपनी भावनाएं व्यक्त करते।
- कुछ परिवारों में बंगाली गीत गाए जाते, तो कहीं पंजाबी भंगड़ा की ताल पर पांव थिरकते।
- गांव की महिलाएं अपने–अपने क्षेत्र की पारंपरिक कढ़ाई और बुनाई में कुशल थीं।

भाषा और सांस्कृतिक विविधता ने गांव को और समृद्ध बनाया। अक्सर शाम को लोग संगम-वृक्ष के नीचे बैठकर अपने-अपने क्षेत्रों के लोकगीत और कहानियां सुनाते। एक दिन, गांव में भयंकर बाढ़ आ गई। पास की नदी ने अपना रौद्र-रूप धारण कर लिया और पानी गांव के हर कोने में घुस गया। खेत, घर, और रास्ते पानी में डूब गए। लोगों को समझ नहीं आ रहा था कि वे इस संकट का सामना कैसे करें। लेकिन यह वही समय था जब संगमपुर ने अपनी असली ताकत दिखाई।

- हिंदू परिवारों ने अपने मंदिरों को राहत शिविर में बदल दिया।

- मुसलमान भाइयों ने मस्जिद में खाना बनवाया और पानी में फंसे लोगों को शरण दी।
- सिख समुदाय ने लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने लगे।
- ईसाई परिवारों ने अपने गिरजाघरों में दवाइयां और कपड़े इकट्ठा किए।

गांव के हर व्यक्ति ने जाति, धर्म और भाषा के भेदभाव को भुलाकर एक-दूसरे का साथ दिया। इस बाढ़ ने गांव के लोगों को सिखाया कि सच्ची ताकत विविधता में एकता है। बाढ़ का संकट बीत गया, लेकिन संगमपुर के लोगों के दिलों में यह सबक हमेशा के लिए बस गया। विविधता केवल पहचान का विषय नहीं, बल्कि एकजुटता की ताकत है। बरगद का वह संगम-वृक्ष आज भी खड़ा है। उसकी हर शाखा और हर पत्ता यही कहता है: "भले ही हमारी आस्थाएं और भाषाएं अलग हों, लेकिन हमारे दिल एक हैं। यही भारत की सच्ची पहचान है।"

सुभाष चंद्र मंडल
लेखाकार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की चुनौतियाँ

इन दिनों आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बहुत चर्चा है। तकनीक एवं सूचना जगत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने बहुत बड़ी क्रांति ला दी है। मीडिया, जन-संचार, बाजार, बैंकिंग, शिक्षा, वित्त, स्वास्थ्य, मनोरंजन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का खूब प्रयोग हो रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आजकल समाज का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है, जो विभिन्न उद्योगों और दैनिक जीवन को बदल रहा है। हालांकि, इसके लाभों के साथ-साथ एआई टूल्स के व्यापक उपयोग से जुड़ी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ और संभावित खतरें भी हैं। इस लेख में, हम उन प्रमुख चुनौतियों और जोखिमों का पता लगाएंगे जो एआई प्रौद्योगिकी के साथ आती हैं।

जब भी मनुष्य के हाथ एक नई तकनीक लगती है तथा उस तकनीक से मनुष्य का जीवन प्रभावित होता है तब उस नई तकनीक का विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है कि क्या इस तकनीक के उपयोग से मनुष्य का जीवन सरल एवं सुरक्षित हुआ है? क्या इस तकनीक के उपयोग से मनुष्य के जीवन में किसी प्रकार के खतरे की संभावना है? क्या भविष्य में इसके दूरगामी खतरे हो सकते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर तलाशने के साथ-साथ नई तकनीक यदि उपयोगी सिद्ध हो रही हो तो उसके संवर्धन, सुरक्षा तथा आवश्यक संशोधन की दिशा में भी कार्य किया जाता है।

अब प्रश्न उठता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है, तथा यह अन्य मशीनों से किस प्रकार भिन्न है? साधारण शब्दों में समझें तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का तात्पर्य है कि मशीन अथवा कंप्यूटर की वह प्रणाली जिसके माध्यम से वह मनुष्य की तरह समझ रखता है, समस्याओं को सुलझा सकता है, निर्णय ले सकता है तथा वह मनुष्य की

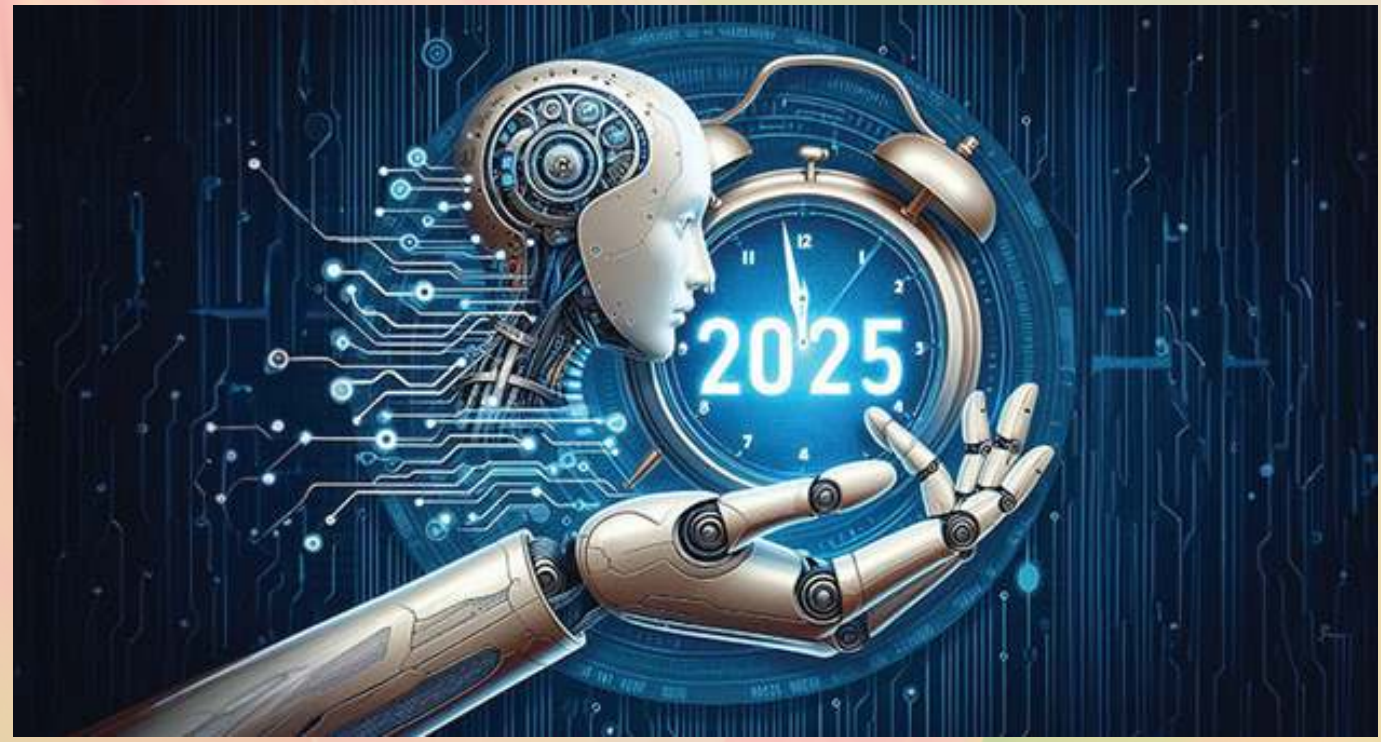

तरह रचनात्मक कार्य भी कर सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस निरंतर सीखता है, आंकड़ों और तथ्यों को संग्रहित कर उसका विश्लेषण कर सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष तथा निर्णय मनुष्य द्वारा लिए गए निर्णय की तरह ही होता है, या यह भी कह सकते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के निर्णय तथा निष्कर्ष की सटीकता मनुष्य द्वारा प्राप्त निष्कर्ष से भी बेहतर हो सकते हैं।

मशीन लंबे अर्से से मनुष्य की सहायता करती रही है। हम सभी मनुष्य मशीनों से घिरे हैं, यदि हमारे जीवन से मशीनों का लोप हो जाए तो जीना दूभर हो जाएगा। ऐसे में क्या सभी मशीनी तकनीक को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस युक्त कह सकते हैं, उत्तर होगा नहीं। हम यदि स्विच ऑन कर मशीन स्टार्ट करें और स्विच ऑफ कर मशीन ऑफ करें तो मशीन पूर्णतः हमारे नियंत्रण में हैं। उदाहरण के लिए घर के पंखे, फ्रिज, वाशिंग मशीन, एसी आदि। आप इनकी मेमोरी में नई जानकारी डालकर नया कार्य नहीं करवा सकते हैं। अतः ये आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस युक्त नहीं कहे जा सकते हैं। मशीन दवारा वांछित निर्णय लिए जाने की क्षमता आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की पहली शर्त है। इसके कुछ संभावित खतरे और चुनौतियों का संक्षिप्त विश्लेषण इस प्रकार है-

एआई टूल्स की चुनौतियाँ और खतरें:

1. **पक्षपाती होना**: एआई का एक प्रमुख चुनौतीपूर्ण पहलू पक्षपाती होना है। एआई एल्गोरिदम को बड़े डेटासेट पर प्रशिक्षित किया जाता है, और यदि ये डेटासेट पक्षपाती होते हैं, तो एआई प्रणालियाँ अनजाने में उन पक्षपातों को सीख सकती हैं और उनका प्रचार कर सकती हैं। वित्तीय संस्थान, राजनीति, कानून प्रवर्तन या स्वास्थ्य देखभाल में पक्षपाती एल्गोरिदम से गलत उपचार या गलत परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं। एआई प्रशिक्षण डेटा में निष्पक्षता और समावेशिता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है।
2. **रोजगार का विस्थापन**: एआई की क्षमताओं ने विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी के विस्थापन के बारे में चिंता पैदा कर दी है। जैसे-जैसे एआई टूल्स मनुष्य द्वारा किए जाने वाले पारंपरिक बौद्धिक कार्यों को संभालते हैं वैसे-वैसे ही विनिर्माण, ग्राहक सेवा और परिवहन जैसे उद्योगों में कर्मचारियों को अपनी नौकरियाँ खोनी पड़ सकती हैं। एआई नई नौकरी के अवसर भी पैदा कर सकता है, विशेष रूप से तकनीकी क्षेत्रों में, लेकिन यह परिवर्तन उन कर्मचारियों के लिए कठिन हो सकता है जो पुन: प्रशिक्षण और पुन: कौशल कार्यक्रमों के लिए तैयार नहीं हैं। एआई टूल्स के कुशलता से प्रयोग करने हेतु विशेष तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है। इस तरह का विस्थापन सामाजिक और आर्थिक रूप से श्रमिक वर्ग एवं अप्रशिक्षित युवाओं को प्रभावित कर सकता है।
3. **डेटा गोपनीयता और सुरक्षा**: एआई प्रणालियाँ अक्सर प्रभावी रूप से काम करने के लिए व्यक्तिगत डेटा पर निर्भर होती हैं, जो गोपनीयता और डेटा सुरक्षा के बारे में गंभीर चिंताएँ उत्पन्न करती हैं। स्वास्थ्य देखभाल, वित्त और ई-कॉमर्स जैसे उद्योगों में, संवेदनशील डेटा को सेवाओं को व्यक्तिगत बनाने या निर्णय लेने में सुधार करने के लिए उपयोग किया जाता है। हालांकि, अगर इस डेटा की ठीक से सुरक्षा नहीं की जाती है, तो यह उल्लंघन, दुरुपयोग या अवैध पहुंच के लिए खुला हो सकता है। मजबूत डेटा संरक्षण कानूनों, नैतिक एआई ढांचों और मजबूत साइबर सुरक्षा का अभाव इन जोखिमों को अधिक बढ़ा देता है।
4. **स्वायत्त हथियार और युद्ध में एआई:** एआई का सैन्य प्रयोग, विशेष रूप से स्वायत्त हथियारों का उपयोग, वैश्विक बहस का कारण बना है। एआई-चालित ड्रोन और रोबोट बिना मानव हस्तक्षेप के काम करने की क्षमता रखते हैं, जो युद्ध भूमि पर जीवन या मृत्यु के निर्णय ले सकते हैं। इससे इस तरह की कार्रवाइयों की जिम्मेदारी और स्वायत्त प्रणालियों द्वारा किए गए निर्णयों के बारे में नैतिक सवाल उठते हैं। युद्ध में एआई

का उपयोग विनाशकारी हो सकता है।

5. **एआई पर अत्यधिक निर्भरता**: जैसे-जैसे एआई समाज के विभिन्न पहलुओं में समाहित हो रहा है, इन उपकरणों पर अत्यधिक निर्भरता का खतरा पैदा हो रहा है। एआई प्रणालियाँ दोषपूर्ण नहीं होती हैं और वे गलतियाँ कर सकती हैं, विशेष रूप से जब उन्हें अपने प्रशिक्षण डेटा से भिन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है या जब वे अस्पष्ट संदर्भों में काम करती हैं। अगर समाज एआई टूल्स पर अत्यधिक निर्भर हो जाता है, तो इसमें महत्वपूर्ण सोच, निर्णय क्षमता और मानव सहजता को खोने का खतरा हो सकता है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य क्षेत्र में निर्णय-निर्माण में एआई पर अत्यधिक निर्भरता से डॉक्टरों की विशेषज्ञता की अनदेखी हो सकती है, जिससे गलत निदान या उपचार हो सकता है।
6. **नैतिक दुविधाएँ**: एआई प्रणालियाँ उनके उपयोग को लेकर कई नैतिक सवाल उठाती हैं, विशेष रूप से निर्णय लेने में। उदाहरण के लिए, स्वयं-चालित कारों में अगर कोई अपरिहार्य दुर्घटना होती है तो एआई प्रणाली को यात्रियों, पैदल चलने वालों या अन्य वाहनों की सुरक्षा को प्राथमिकता देने का निर्णय कैसे लेना चाहिए? इस तरह के नैतिक दुविधाएँ, जहां मशीन को जीवन और मृत्यु के निर्णय लेने होते हैं, को एक समान समाधान से संबोधित करना कठिन होता है। एआई के लिए नैतिक दिशानिर्देशों का विकास अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है, और इन जटिल मुद्दों से निपटने के लिए कोई सर्वसम्मत समाधान नहीं है।

7. **असमानता को बढ़ावा देना**: हालांकि एआई उद्योगों में क्रांतिकारी बदलाव लाने की क्षमता रखता है तथापि यह मौजूदा असमानताओं को भी बढ़ा सकता है। एआई तकनीक और इसके लाभों तक पहुंच अक्सर असमान होती है, जिसमें समृद्ध व्यक्ति और विकसित राष्ट्र गरीब समुदायों पर स्पष्ट लाभ रखते हैं। यह असमानता को और बढ़ा सकता है और वैश्विक डिजिटल खाई को चौड़ा कर सकता है। एआई टूल्स तक समान पहुंच सुनिश्चित करना और उनका उपयोग इस तरह से करना जो समाज के सभी वर्गों को लाभ पहुंचाए, इस जोखिम से निपटने के लिए आवश्यक है।

जबकि एआई टूल्स विकास की अपार संभावनाएँ प्रदान करते हैं, वे महत्वपूर्ण चुनौतियाँ और खतरें भी लाते हैं जिनका समाधान प्रगति के साथ-साथ किया जाना चाहिए। पक्षपाती होना, नौकरी का विस्थापन, गोपनीयता संबंधी चिंताएँ और नैतिक दुविधाएँ वे कुछ मुद्दे हैं जिन पर गंभीर विचार किया जाना चाहिए जब हम एआई को जीवन के विभिन्न पहलुओं में समाहित करते हैं। यह आवश्यक है कि सरकारें, व्यवसाय और शोधकर्ता मिलकर नियमों, नैतिक ढाँचों, और समाधानों का विकास करें जो सुनिश्चित करे कि एआई का उपयोग जिम्मेदारी से किया जाए और यह समाज के लाभ के लिए हो। इन चुनौतियों और खतरों से निपटने के साथ, हम एआई की पूरी संभावनाओं को तलाश सकते हैं, इसके जोखिमों को कम करते हुए यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि इसके लाभ सभी के लिए समान रूप से वितरित हों।

एक बार मेरे एक मित्र कह रहे थे कि ए.आई. टूल्स की मदद से मानव जीवन बदलने वाला है। मैंने उनसे उत्सुकतावश पूछा– 'कैसे?' मेरे मित्र मुझे ए.आई. टूल्स की मदद से डाटा का विश्लेषण, सूचना का उपयोग कर निर्णय लेने की क्षमता आदि पर विस्तार से समझाने लगे। उन्होंने कहा कि एआई अब कहानी, कविताएं भी लिख सकता है। यह इमेज तैयार कर सकता है। मुझे लगा कि यह तो सीधे इंसान के कार्यक्षेत्र में दखल दे रहा है। इंसान होने के नाते जो कार्य करना पसंद है मसलन पेंटिंग करना, कविताएं लिखना, आदि अगर ये काम मशीन करने लगे तो मेरे हिस्से तो बस साफ-सफाई करना और खाना पकाना ही रह जाएगा। मैं चुटीले अंदाज में अपने मित्र से बोली कि कितना अच्छा होता अगर ए.आई. मेरे लिए खाना पकाता, घर की सफाई करता, कपड़े धोता और मैं कविताएं लिखती, कहानी लिखती और पेंटिंग बनाती।

सुस्मिता सरकार
वरिष्ठ लेखाकार

विकास

विकास का मतलब है वृद्धि और विभिन्न पहलुओं को विकसित करने में मदद करना, क्योंकि साथ मिलकर वे आगे की वृद्धि बनाते हैं। आज के समाज में विकास बहुत ज़रूरी है क्योंकि यह रोज़मर्रा की ज़िंदगी के हर पहलू को प्रभावित करता है। कुछ कारक विकास पर बहुत ज़्यादा प्रभाव डालते हैं या फिर कुछ विकास में कम योगदान करते हैं। विकास की कमी सीधे अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है। चाहे, यह धीमी प्रगति हो या तीव्र सुधार। विकास रातों-रात हो सकता है, कुछ दिनों में या इसमें बस सालों लग सकते हैं।

विकास एक छोटा सुधार हो सकता है या यह काफी बड़ा हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक स्कूल सामुदायिक आउटरीच परियोजना करने का फैसला कर सकता है। कौशल और ज्ञान विकसित करके, आप लोगों को दूसरों को अपने कौशल और ज्ञान के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता पैदा करते हैं। या अन्य लोग अपने वर्तमान ज्ञान और कौशल को बेहतर बनाने के लिए शिक्षित होना चाहते हैं, ताकि वे समुदाय की मदद करने में अपना योगदान दे सकें। इसमें शिक्षा प्रदान करके लोगों को अपनी 'आवाज़' विकसित करने की अनुमति मिलती है। शिक्षा किसी व्यक्ति को अपने कौशल और संभावनाओं के अधिकतम उपयोग में मदद करती है।

अगर विकास का अर्थ अलग-अलग हो सकता है, तो फिर कुछ देशों को विकसित और कुछ को अविकसित कैसे कहा जा सकता है? इससे पहले कि हम इस विषय पर आएं, एक अन्य प्रश्न के बारे में सोचते हैं। जब हम भिन्न-भिन्न चीजों की तुलना करते हैं तो उसमें समानताएं और अंतर दोनों हो सकते हैं। हम इनकी तुलना करने के लिए किन पहलुओं का प्रयोग करते हैं? कक्षा में विद्यार्थियों को ही देखते हैं। हम विभिन्न विद्यार्थियों की तुलना कैसे करते हैं? उनमें ऊँचाई, प्रतिभा और रुचि के अनुसार अंतर हैं। हो सकता है, सबसे स्वस्थ विद्यार्थी सबसे पढ़ाकू विद्यार्थी न हो। सबसे बुद्धिमान विद्यार्थी वह हो सकता है जो मित्रता का

व्यवहार न रखता हो। तो, हम विद्यार्थियों की तुलना कैसे करते हैं? हम जिस मापदण्ड का प्रयोग करेंगे, वह तुलना के उद्देश्य पर निर्भर करेगा। खेलकूद टीम, वाद-विवाद टीम, संगीत टीम या पिकनिक के लिए टीम, सबके चयन के लिए अलग मापदण्ड होंगे। फिर भी, अगर हमें किसी उद्देश्य से कक्षा के विद्यार्थियों की सर्वांगीण प्रगति के बारे में मानक चाहिए तो हम उसे कैसे चुनेंगे?

सामान्यतया हम व्यक्तियों की एक या दो महत्वपूर्ण विशिष्टताएं लेकर उनके आधार पर तुलना करते हैं। तुलना के लिए क्या महत्वपूर्ण विशिष्टताएं चुनी जाएं इस पर मतभेद हो सकते हैं- यथा विद्यार्थियों का मित्रतापूर्ण व्यवहार और सहयोग-भावना, उनकी रचनात्मकता या उनके द्वारा प्राप्त अंक? यही बात विकास पर भी लागू होती है। देशों की तुलना करने के लिए उनकी आय सबसे महत्वपूर्ण विशिष्टता समझी जाती है। जिन देशों की आय अधिक है उन्हें कम आय वाले देशों से अधिक विकसित समझा जाता है। यह इस समझ पर आधारित है कि अधिक आय का अर्थ है- मानवीय आवश्यकताओं की सभी वस्तुओं का अधिक होना। जो भी लोगों को पसंद है और जो उनके पास होना चाहिए, वे उन सभी वस्तुओं को अधिक आय के द्वारा प्राप्त कर पायेंगे। इसलिए, ज्यादा आय अपने आप में एक महत्वपूर्ण लक्ष्य समझा जाता है। अब एक देश की आय क्या है? अन्तर्दृष्टि से, किसी देश की आय उस देश के सभी निवासियों की आय है। इससे हमें देश की कुल आय ज्ञात होती है। लेकिन, देशों के बीच तुलना करने के लिए कुल आय उपयुक्त माप नहीं है क्योंकि देशों की जनसंख्या अलग-अलग होती है, कुल आय की तुलना करने से हमें यह ज्ञात नहीं होगा कि औसत व्यक्ति क्या कमा सकता है? क्या एक देश के लोग दूसरे देश के लोगों से बेहतर हैं?

इसलिए, हम औसत आय की तुलना करते हैं जो कि देश की कुल आय को कुल जनसंख्या से भाग देकर निकाली जाती है। औसत आय को प्रतिव्यक्ति आय भी कहा जाता है। विश्व बैंक की विश्व विकास रिपोर्ट के अनुसार, देशों का वर्गीकरण करने में इस मापदण्ड का प्रयोग किया गया है। वे देश जिनकी 2017 में प्रतिव्यक्ति आय 12056 डॉलर प्रति वर्ष या उससे अधिक है, उसे समृद्ध देश और वे देश जिनकी प्रतिव्यक्ति आय 995 डॉलर प्रति वर्ष या उससे कम है, उन्हें निम्न आय वाला देश कहा गया है। भारत मध्य आय वर्ग के देशों में आता है क्योंकि उसकी प्रतिव्यक्ति आय 2017 में केवल 1820 डॉलर प्रति वर्ष थी। समृद्ध देशों, जिनमें मध्य पूर्व के देश और कुछ अन्य छोटे देश शामिल नहीं हैं, को आमतौर पर विकसित देश कहा जाता है। ऐसा क्यों है कि हरियाणा में औसत व्यक्ति की आय केरल के औसत व्यक्ति की आय से अधिक है, लेकिन इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वह केरल से पीछे है? इसका कारण यह है कि यह आवश्यक नहीं कि रूपये से वे सब वस्तुएं और सेवाएं खरीदी जा सकें, जिनकी आपको एक बेहतर जीवन के लिए आवश्यकता हो सकती है।

नागरिक कितनी भौतिक वस्तुएं और सेवाएं प्रयोग कर सकते हैं, इसके लिए आय अपने आप में संपूर्ण रूप से पर्याप्त सूचक नहीं है। उदाहरण के लिए, सामान्यतया आपका द्रव्य आपके लिए प्रदूषण मुक्त वातावरण नहीं खरीद सकता या बिना मिलावट की दवाएं आपको नहीं दिला सकता। जब तक आप ऐसे समुदाय में ही जाकर नहीं रहने लग जाते जहां ये सुविधाएं पहले से उपलब्ध हैं तब तक द्रव्य आपको संक्रामक बीमारियों से भी नहीं बचा सकता। समस्या शिशु मृत्यु-दर पर समाप्त नहीं हो जाती। बिहार के लगभग आधे बच्चे कक्षा आठवीं के बाद स्कूल नहीं जा रहे हैं अर्थात यदि आप बिहार के किसी स्कूल में पढ़ते होते, तो आपकी प्रारंभिक कक्षा के लगभग आधे से अधिक बच्चे गायब होते। जिन बच्चों को स्कूल में होना चाहिए था, वे वहाँ नहीं होते। अगर ये आपके साथ होता, तो आप अभी यह सब न पढ़ पाते जो पढ़ रहे हैं। वास्तव में जीवन में बहुत सी महत्वपूर्ण चीजों के लिए सबसे अच्छा और सस्ता तरीका इन वस्तुओं और सेवाओं को सामूहिक रूप से उपलब्ध कराना है। जरा सोचिए, किसी स्थानीय इलाके के लिए सामूहिक सुरक्षा

प्रदान करना अधिक सस्ता है अथवा हर घर के लिए अलग-अलग सुरक्षा गार्ड रखना? आप क्या करते, अगर आपके गाँव या इलाके में आपके अतिरिक्त कोई और पढ़ने में रूचि नहीं रखता? क्या तुम पढ़ पाओगे? शायद तब तक नहीं जब तक तुम्हारे माता-पिता तुम्हें कहीं और निजी स्कूल में पढ़ने भेजने की क्षमता न रखते हों। आप इसलिए पढ़ पा रहे हो क्योंकि बहुत से अन्य बच्चे मुख्य रूप से लड़कियां, उच्च विद्यालयी शिक्षा भी नहीं ले पाती हैं। क्योंकि सरकार या समाज ने इसके लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराई हैं। इसी प्रकार, कुछ राज्यों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली ठीक

प्रकार से कार्य करती है। ऐसे राज्यों में लोगों के स्वास्थ्य और पोषण-स्तर के निश्चित रूप से बेहतर होने की संभावना है। हम विकास को जिस तरह भी परिभाषित करें, अभी के लिए मान लें कि एक विशेष देश काफी विकसित है।

हम निश्चित रूप से यह चाहेंगे कि विकास का यह स्तर और ऊँचा हो या कम से कम भावी पीढ़ी के लिए यह स्तर बना रहे। यह स्पष्ट रूप से वांछनीय है। लेकिन बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से बहुत से वैज्ञानिक यह चेतावनी देते आ रहे हैं कि विकास का वर्तमान प्रकार और स्तर धारणीय नहीं है। भूमिगत जल नवीकरणीय साधन का उदाहरण हैं। फसल और पौधों की तरह इन साधनों की पुन:पूर्ति प्रकृति करती है, लेकिन यहाँ भी हम इन साधनें का अति-उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, भूमिगत जल का यदि बरसात द्वारा हो रही पुन: पूर्ति से अधिक प्रयोग करते हैं, तो हम इस साधन का अति-उपयोग कर रहे होंगे। गैर नवीकरणीय साधन वो हैं जो वर्षों से प्रयोग के पश्चात् समाप्त हो जाते हैं। इन संसाधनों का धरती पर एक निश्चित भण्डार है और इनकी पुन: पूर्ति नहीं हो सकती। कभी-कभी हमें ऐसे नए साधन मिल जाते हैं, जिनके बारे में हमें पहले कोई जानकारी नहीं थी। नये स्रोत भण्डार में वृद्धि करते हैं, लेकिन समय के साथ यह भी समाप्त हो जाएँगे।

शिवम सिन्हा
आशुलिपिक

मित्रता

एक गाँव में दो मित्र रहते थे। एक का नाम हरी कुमार और दूसरे का कृष्ण कुमार था। दोनों का गाँव आस-पास ही था। दोनों बचपन से ही मित्र थे। हरी के पिता एक किसान थे और कृष्ण के पिता शहर के बैंक में कार्यरत थे। अतः दोनों के पालन-पोषण में अंतर स्वाभाविक था। दोनों गाँव के एक ही स्कूल की एक ही कक्षा में पढ़ते थे। कृष्ण कुमार पढ़ने में तेज था लेकिन हरी कुमार पढ़ाई में औसत था। इससे दोनों की दोस्ती पर कोई फर्क नहीं पड़ता था। हरी को प्रायः अपने पिताजी के साथ खेती-बाड़ी में हाथ बँटाना पड़ता था और वह खुशी से सारे काम करता था लेकिन कृष्ण को ऐसा कोई काम नहीं करना पड़ता था। वह हरी को खोजते हुए उसके खेतों तक पहुँच जाता था और वहाँ उसके खेतों में काम करने लगता था। कृष्ण के पिता उसकी इन हरकतों से नाराज भी हो जाते थे और उनको हरी के साथ कृष्ण की दोस्ती पसंद नहीं थी। लेकिन हरी के परिवार में कृष्ण का बहुत सम्मान था।

बीतते समय के साथ वे एक-एक करके 10 वीं कक्षा में पहुँच गए। विद्यालय में उनके दोस्ती की मिसाल दी जाती थी। सब उन्हें हरी-कृष्ण की जोड़ी कहते थे। कभी-कभी कोई उन्हें कृष्ण-सुदामा भी कह देता था। अगर विद्यालय में दोनों एक साथ नहीं दिखते तो सहपाठी उनसे सवाल पूछ लेते थे जैसे कि अरे हरिया कहाँ गया या किशन कहाँ गया..? जब दसवीं बोर्ड की परीक्षा हुई तो दोनों ने शहर जाकर परीक्षा दी। परीक्षा के बाद दोनों आपस में बात किया करते थे कि परिणाम के बाद क्या करना चाहिए? हरी कहता था कि मैं

तो गाँव में पिता जी का हाथ बटाऊँगा और अपनी पुश्तैनी जमीन पर खेती करूंगा। फिर वह समय आ ही गया जिसकी उन्हें प्रतीक्षा थी। कृष्ण परीक्षा में अपने जिले में प्रथम आया और हरी भी पास हो गया। हरी आज ज्यादा ही खुश था क्योंकि उसके दोस्त कृष्ण ने पूरे विद्यालय में टॉप किया था। पूरे गाँव में मिठाई बाँटी गई और खुशियां मनाई गई।

फिर वह समय भी आया कि कृष्ण कुमार के पिताजी ने उसे आगे की पढ़ाई के लिए शहर भेज दिया और हरी गाँव में ही रहकर खेती-किसानी में लग गया। कृष्ण जब भी शहर से गाँव जाता था तो वह अपने दोस्त के लिए कुछ न कुछ लेकर ही जाता था। समय बीतता गया और दिल्ली में कृष्ण की नौकरी हो गई दूसरी ओर हरी का विवाह तय हो गया लेकिन अपनी व्यस्तता के कारण कृष्ण, हरी के विवाह में शामिल न हो सका। कुछ समय तक दोनों का जीवन यूं ही चलता रहा और हरी को संतान के रुप में एक पुत्र की प्राप्ति हुई। बीच-बीच में कृष्ण जब भी गाँव में आता था तो वह हरी से मिलता था लेकिन हरी को महसूस होने लगा कि कृष्ण का व्यवहार थोड़ा बदल गया है लेकिन वह कुछ भी नहीं कहता था।

कुछ ही समय बाद विश्वव्यापी कोरोना महामारी का प्रकोप फैल गया। भारत पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। शुरूआत में ऐसा लगा कि यह सब शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ और लॉकडाउन लग गया। गाँव में अपेक्षाकृत महामारी का कम प्रभाव था लेकिन शहरों में इसका भयंकर प्रभाव पड़ा। अब कृष्ण कुमार को बहुत डर महसूस हुआ। इस भय से उसने गाँव जाने का निश्चय किया। किसी तरह रेलवे का टिकट लेकर वह ट्रेन में बैठ गया। गाँव के निकटतम स्टेशन पर उतरने पर उसने पाया कि वहाँ पूरा सन्नाटा पसरा हुआ था। हरी को मालूम हुआ था कि उसका दोस्त कृष्ण दिल्ली से वापस अपने गाँव आ रहा है तो उसे लाने स्टेशन जाने के बारे में सोचने लगा। अपने माता-पिता व पत्नी से उसने स्टेशन जाकर अपने दोस्त का लाने की बात की। हरी के परिवार वाले गुस्सा हो गए और बोले कि तुम नहीं जाओगे। उसकी पत्नी ने भी कहा कि क्या पता उसे कोरोना हो रखा हो और तुम गए तो तुम्हें भी हो जाएगा.. मैं तुम्हें वहाँ नहीं जाने दूंगी। हरी के मन में एक भयानक अंतर्द्वंद्व चल रहा था कि क्या करूँ? अगर गया तो वापस आना मुश्किल और नहीं गया तो दोस्त मुसीबत में। हरी ने अपने मन ही में निश्चय किया कि इस विकट परिस्थिति में वह अपने दोस्त को अकेला नहीं छोड़ सकता है। अपने पास खाने को कुछ रूखा-सूखा रखकर वह स्टेशन के लिए चल दिया जो कि पाँच से छः किलोमीटर दूर था।

उधर कृष्ण के मन में भी डर बैठा जा रहा था कि गाँव जाने पर उसे प्रवेश नहीं दिया जाएगा। इसी सोच-विचार में उसे करीब दो घंटे हो गए तभी उसने देखा कि चिलचिलाती धूप में कोई मैली-कुचैली वेशभूषा का कोई व्यक्ति स्टेशन की ओर आ रहा था। कृष्ण कुमार को लगा कि कोई ग्रामीण ट्रेन पकड़ने के लिए आ रहा होगा। वह नाम पुकारते हुए किसी आदमी को ढूंढ रहा था। कृष्ण को वह आवाज जानी-पहचानी लगी। जब कृष्ण उस व्यक्ति के पास आया तो उसने पाया कि वह तो हरी है। उसने हरी से पूछा- यहाँ क्या कर रहा है हरी? तब हरी ने कहा- मैं तुझे लेने आया हूँ.. तू गाँव चल दोस्त। कृष्ण ने कहा- मेरे से दूर रह वरना तुझे कोरोना हो जाएगा, गाँव के लोग मानते हैं कि बाहर से आने वाले कोरोना से पीड़ित होते हैं। हरी ने कहा- ये क्या कह रहा है दोस्त, दुनियाँ की नजरों में तुझे कोरोना हुआ होगा, मेरे लिए तू मेरा दोस्त किशना ही रहेगा। ये कहते हुए हरी ने कृष्ण को गले लगा लिया। कृष्ण की आँखों से आँसू बह रहे थे। तब हरी ने कहा कि चलो घर चलते हैं। दोनों ने बैठकर साथ में खाना खाया और फिर गाँव के लिए चल पड़े। आपस में बातें करते हुए दोनों कब गाँव पहुँच गए पता ही नहीं चला। अब तक पूरे गाँव में यह बात आग की तरह फैल चुकी थी कि हरी, कृष्ण कुमार को लेकर गाँव या रहा है। गाँव वाले गुस्सा हो गए और उन्होंने निश्चय किया कि उन दोनों को गाँव में नहीं आने देना है। यह भी निर्णय हुआ कि 10 दिन बाद दोनों गाँव में प्रवेश कर सकते हैं। हरी और कृष्ण इस निर्णय पर सहमत हो गए।

किसी तरह 10 दिन का समय बीता और दोनों ने अपने गाँव में प्रवेश किया तब गाँव वालों ने ढोल-नगाड़े के साथ उनका स्वागत किया और गाँव के सरपंच ने कहा कि तुम दोनों ने आज यह साबित किया है कि मित्र-मित्र होता है चाहे द्वापर के कृष्ण-सुदामा की मित्रता हो या कलियुग के हरिया-किशना हों। एक रात को जब रात में कृष्ण कुमार छत पर सो रहा था तब उसने सोचा-

धीरज धरम मीत अरु नारी,
आपद काल परखिए चारी।

मेरे दोस्त ने तो इसे सही सिद्ध किया है।

अब धीरे-धीरे कोरोना महामारी शांत हो चुकी थी। कृष्ण कुमार का वापस दिल्ली अपने काम पर जाने का समय आ चुका था। ट्रेन में बैठते वक्त कृष्ण ने हरी को एक लिफाफा दिया और कहा कि इसे घर पर ही खोलना। घर आकर हरी ने उस लिफ़ाफ़े को खोला तो पाया कि उसमें दो हजार के पचास नोट रखे हुए थे। और कागज के एक टुकड़े पर लिखा हुआ था- मित्र मेरी तरफ से यह तुम्हारे बच्चे किए लिए। इसे अस्वीकार मत करना। हरी ने लिफ़ाफ़े को उसी तरह बंद करके आलमारी में रख दिया और उसने अपने मित्र कृष्ण को एक पत्र लिखा जिसमें उसने लिखा था-

मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब उसे तोल सकता है धन।

हरी आज भी इंतजार कर रहा है कि कृष्ण वापस आएगा और वह कृष्ण को उसका लिफाफा वापस कर देगा।

नीति मुकेश गौरव
डीईओ

मेरे गाँव का सफर

आजकल एयर कंडीशनर में भी वो मजा कहाँ है जो मजा घर की छत पर ठंडी-ठंडी हवा में होता था। उस हवा में अच्छी नींद आती थी और सूर्योदय की शुद्ध हवा में अलग ही मजा आता था। रविवार को हम बच्चे अक्सर खाना-पुजनिया खेलते थे जिसमें सभी को अपने-अपने घर से खाना बनाने के लिए कुछ सामान लाना होता था। फिर हम ईंट का चूल्हा बनाकर खाना बनाते थे जिसमें अक्सर खीर-पूड़ी ही बनती थी। त्यौहारों की बात करूँ तो होली और दीपावली के साथ रक्षाबंधन और नवा भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था। वैसे तो होली मुझे ज्यादा पसंद नहीं थी लेकिन इंतजार बहुत बेसब्री से करता था क्योंकि हमारे यहाँ अमीर से लेकर गरीब तक होली में नए कपड़े खरीदता था। दोपहर में होली खेलने के बाद नहा-धोकर नए कपड़े पहनकर सब एक दूसरे के घर जाते थे। इसमें बच्चों का अलग, लड़कियों का अलग और बड़ों का अलग ग्रुप होता था। होली की शाम में लड़के क्रिकेट खेलने में व्यस्त हो जाते थे। होली के पकवानों की बात करूँ तो आज के ब्रेड पकौड़े आदि तो नहीं बनते थे लेकिन चिप्स, पापड़, पुए, मठरी, दही-बड़े और पना तो जरूर बनता था। इसके साथ ही सब्जी-पूरी और चावल खाने को मिलता था। वो भी क्या दिन थे जब हम रसोई में जाकर पुए और पापड़ चुराकर खाते थे.. उसमें जो स्वाद आता था वो अब सामने भर-भरकर रखे पकवानों में भी नहीं आता।

गाँव में बिजली एक हफ्ते दिन और एक हफ्ते रात में आती थी। मुझे आज भी याद है कि मेरे घर पर टीवी देखने के लिए आधा गाँव इकट्ठा हो जाता था। अगर बिजली चली जाती थी तो लोग थोड़ी देर इंतजार करके वापस चले जाते थे और जैसे ही बिजली आती तो वे फिर से टीवी देखने आ जाते थे। उस समय मेरी भौकाल बनी रहती थी क्योंकि टीवी और सीडी दोनों मेरे यहाँ ही थे। क्या मजाल कि कोई हमें कुछ कह दे ! सबको डर होता था कि अगर मुझे कुछ कहा तो उन्हें टीवी देखने को नहीं मिलेगा। जब पापा किसी फिल्म की डीवीडी लेकर आते थे तो पूरे गाँव में शोर हो जाता था कि

आज अमुक फिल्म चलेगी। सुबह हम सारे बच्चे एक साथ ही स्कूल जाते थे। और सबेरे का नाश्ता एक जैसा ही होता था। किसी को अलग खाना होता तो वह बगल की दुकान से ले लेता था। मेरी टिफिन में सब्जी और पराठा ही होता था। मैं और मेरी बहन अक्सर पाव लेकर आते थे .. .. एक रुपये के चार पाव .. गोल-गोल और कुरकुरे पाव को चाय के साथ खाने में बहुत मजा आता था।

स्कूल गाँव से लगभग तीन किलोमीटर दूर था। हम सब लड़के-लड़कियां पैदल ही स्कूल जाते थे। लड़कियां इतनी तेजी से चलती थीं कि मानो वो दौड़ रही हों। हम प्रायः पीछे छूट जाते। हमारी स्थिति देखकर कभी-कभार किसी राहगीर की साइकिल पर बैठा दिया जाता था। उस समय लगता था कि स्कूल इतना दूर क्यों था लेकिन अब लगता है कि काश! वे दिन लौट आते!

गाँव में बिजली का कोई भरोसा तो रहता नहीं था इसलिए ढिबरी और लालटेन हर घर में होती थी। रात होते ही सारे बच्चे ढिबरी और लालटेन लेकर छत पर पढ़ने चल देते थे। पूरे गाँव के छत पर ढिबरी और लालटेन ही जलती हुई दिखती थी और हाँ, जिसके घर पर जितनी देर तक ढिबरी या लालटेन जलती रहती थी उसका मतलब होता था कि वहाँ बच्चे उतनी देर तक पढ़ाई करते हैं। ये एक नाटक भी बन जाता था जहां हम रातभर जान-बूझकर लालटेन को जलाकर छोड़ देते थे और सो जाते थे ताकि दूसरों को लगे कि हमने पूरी रात पढ़ाई की है। इसलिए रात को देर तक ढिबरी जलाने की प्रतियोगिता हो जाती थी। जब शाम की बारिश के बाद सूरज निकल जाता था तो पाखी का झुंड उजाले पर टूट पड़ता था; फिर लालटेन और ढिबरी को ढक लेता था। इसलिए हम पानी से भरी थाली में लालटेन को रखते थे। सर्दियों में हमने लैम्प से जाने कितनी मच्छरदानियाँ जला डाली हैं।

उस समय आज जैसे जैकेट नहीं होते थे, न ही बूट। एक दो स्वेटर, हाथ से बनी टोपी और चप्पल से ही पूरी ठंडी कट जाती थी। परिवार बड़ा था तो बच्चों में झगड़ा भी खूब होता था। कभी खाने को लेकर तो कभी खेलने को लेकर। अगर किसी ने अपने हिस्से का सामान नहीं दिया तो उसे ग्रुप में नहीं खेलने दिया जाता था और उसे बातों से चिढ़ाया जाता था। अगर झगड़ा बढ़ गया तो कभी-कभी घर के बड़े हमें शांत कराते थे। गर्मियों में सबके बिछौने छत पर होते थे और सर्दियों में धान के पैरे पर। सर्दी में दिनभर लकड़ी जलाकर सब आग तापते रहते थे। खेतों में सरसों की पत्तियों के साथ बथुआ भी होता था जिससे साग बनाया जाता था। गाँव में प्रायः ऐसा होता था कि लोग दूसरे के खेतों से साग की चोरी कर लेते थे, हम भी ऐसा करते थे। जिस मक्के की रोटी और साग को आज लोग स्पेशल ऑर्डर से मंगाते हैं वो हमें उस समय बेस्वाद लगता था। हमें लगता था कि शायद हम गरीब हैं इसलिए यह हमारे यहाँ खाया जाता है।

बचपन से ही हमें मेहनत से पैसा कमाना सिखाया जाता था जिसके लिए खूब मेहनत करनी पड़ती थी। अप्रैल-मई में गेहूं की कटाई होती और थ्रेसर में गेहूं की फसल डालकर भूसे और दाने को अलग किया जाता था। हमारा काम था गेहूं के खेत में छूटी और टूटी हुई बालियों को इकट्ठा करना जिसमें दोपहर से शाम हो जाती थी। इस इकट्ठा किए गए हिस्से को सबसे अंत में थ्रेसर में डाला जाता था। यह गेहूं हमारी कमाई होती थी जिसे बेचकर हम अपनी मनपसंद खाने-पीने की चीजें दुकान से खरीद सकते थे। गर्मियों में जब बर्फवाला, भोंपू बजाते हुए आता तो बच्चे उसके पीछे दौड़ पड़ते थे। उसे रोककर हम अपनी कमाई के गेहूं लेकर जाते और उसके बदले बर्फ लेकर आते थे। गाँव की सब बीती बातें याद आती हैं।

राजेश कुमार
डीईओ

प्रेरणा की स्याही

गर्मी इतनी प्रचंड थी, मानों खेत में लगी फसल यूं ही जलकर राख हो जाएगी। शायद वे अनाज भी इस बात का अफसोस कर रहे होंगे कि कहीं इस बार भी किसानों के परिवार भूखे रह जाएंगे। दो साल से कम वर्षा होने के कारण मधुपुर एक रेगिस्तान जैसा हो चुका था। उम्मीद थी कि कोई प्राकृतिक संयोग ही इसे नया जीवन-दान देगा। वैसे तो मधुपुर प्रकृति की गोद में बसा हुआ गाँव था। दो छोटी-छोटी नदियां गाँव से होकर बहती थीं। पंद्रह तालाब थे और कई कुएं और नलकूप भी थे। गाँव के चारों ओर बड़ा जंगल था। एक टापू जैसी संरचना होने के कारण बाढ़ का पानी कभी मधुपुर में नहीं पहुँचता था। यहाँ जीवन के लिए आदर्श स्थितियाँ थीं। गाँव की बुनियादी जरूरतों की लगभग सभी चीजें अच्छी स्थिति में थीं इसलिए सूखे से जूझते इस गाँव को देखकर आँखें भर आना आश्चर्य की बात न थी।

पाँच साल पहले गाँव के कुछ अमीर और उद्यमी लोगों ने मधुपुर में एक बैठक बुलाई। बैठक में गाँव के मुखिया, गणमान्य लोग और सभी किसान आमंत्रित थे। गाँव में एक बांध का निर्माण इस बैठक का मुद्दा था। बैठक रविवार को रखी गई ताकि अन्य नौकरी वाले लोगों की छुट्टी हो। पढ़े-लिखे लोगों की उपस्थिति से बैठक में अच्छा परिणाम मिल सकता था। निर्धारित समय पर बैठक सम्पन्न हुई। गाँव के सभी आमंत्रित लोग इसमें उपस्थित थे। केवल सरस्वती नहीं आ सकी। वही सरस्वती जिसके पति की मौत गाँव के मुखिया की पिटाई के चलते हुई थी। 20 वर्ष बीत जाने के बाद भी सरस्वती को यह एक ताजे जख्म जैसा लगता था। उसके घाव न कभी भरे थे और न ही कभी भरेंगे। सरस्वती का बेटा आर्या गाँव से दूर रहकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था। आर्या अपनी माँ के दुख और पिता के इतिहास से अनजान था। सरस्वती ने उसे इतनी ममता और दुलार से पाला था कि पिता का अभाव उसे जैसे महसूस ही न हुआ।

गाँव की बैठक संपन्न हुई। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि दोनों नदियों के संगम के आसपास बांध बनाया

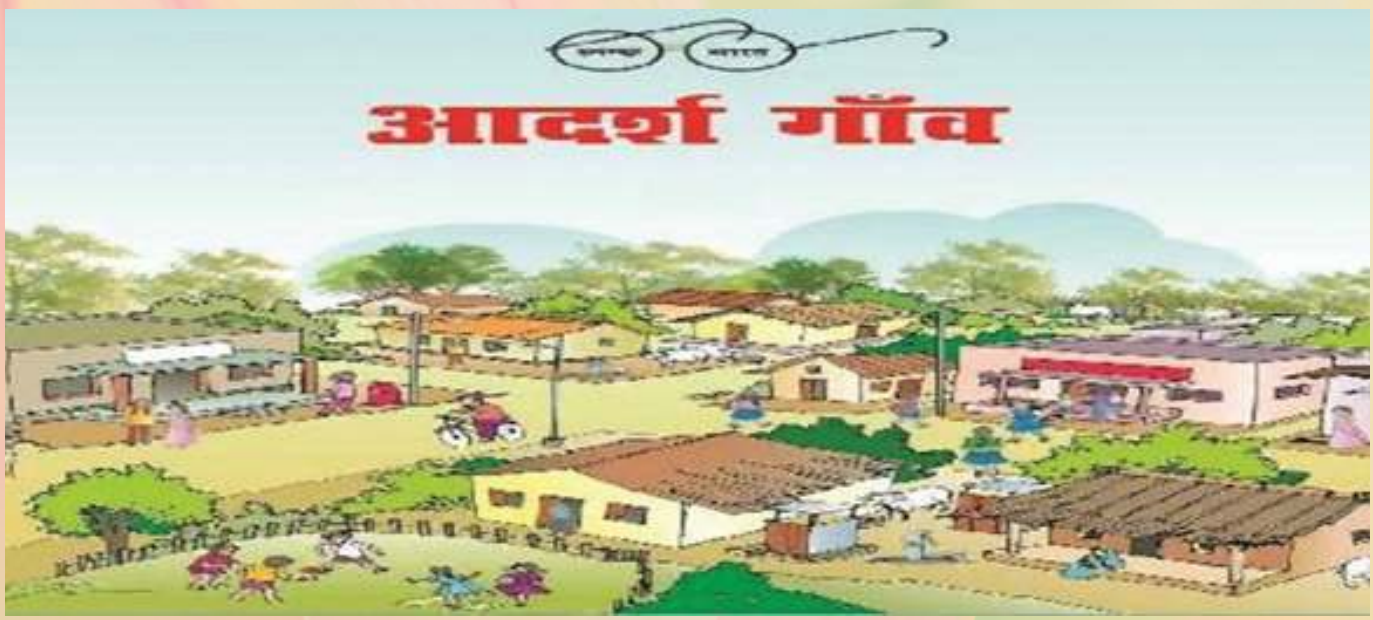

जाएगा। वर्षा की समाप्ति के बाद दुर्गापूजा के समय में बांध का निर्माण कार्य प्रारंभ किया जाना था। गाँव के लोग उत्साह और उमंग में थे। सब सोच रहे थे कि अब बुरे दिन का अंत होगा और अच्छे दिनों की शुरुआत होगी। बांध बन जाने पर किसानों का भाग्य बदलने वाला था। सिंचाई और मत्स्य-पालन से उनकी आय और जीवन बदलने जाएगा।

बांध-निर्माण का कार्य शुरू हुआ। जहां बांध बन रहा था वहाँ से एक मील तक के क्षेत्र में लोगों के आवागमन पर रोक लगा दी गई। इस विचार के पीछे गाँव के मुखिया चंद्रिका ठाकुर का दिमाग था। जिन धनी और उद्यमी लोगों ने बैठक बुलाई थी वे मुखिया के करीबी और सगे संबंधी ही थे। मुखिया के बेटे मोंटी ने अलग-अलग जगहों से मजदूरों को बुलाया था ताकि वे आपस में एकजुट न हो सकें। मोंटी के ममेरे भाई पिंकू ने वकालत की डिग्री ली थी। उसने धांधली के कई तरीके मोंटी को सुझाए और जिस जमीन पर बांध बनना था उसके मालिकों को कुछ पैसा देकर जमीन के सारे कागजात ले लिए। इन सारी अवैध गतिविधियों से मधुपुर में एक अलग ही दुनिया बन रही थी और गाँव के किसान अब कुछ नहीं कर सकते थे।

एक दिन गाँव के कुछ किसानों ने चंद्रिका ठाकुर से बांध-निर्माण के बारे में कुछ सवाल पूछा तो चंद्रिका ठाकुर ने हँसते हुए कहा- तुम अनपढ़ लोग वहाँ जाकर क्या देखेगा? कुछ समझ में ना आवेगा। बड़ा-बड़ा इंजीनियर लोग और कुशल मजदूर दिन-रात अपना पसीना बहा रहा है। ऐसे ही बांध थोड़े ही बन जाएगा। ये लो पाँच हजार रुपये और पूरे गाँव में मिठाई बाँटो। हम बहुत खुश हैं। बस ऐसे उलटे-सीधे सवाल हमसे ना पूछो। गाँव के मुखिया की बात कौन टाल सकता था? सब वहाँ से चुपचाप चले गए।

आर्या दुर्गापूजा मनाने के लिए बहुत दिन बाद अपने गाँव आया। गाँव में आते ही उसने गाँव की मिट्टी को नमन किया

और अपनी माँ के चरण-स्पर्श किए। वह अधिकतर समय अपनी माँ सरस्वती के साथ बिताना चाहता था। वह बहुत समय से उनसे दूर रहा था। आर्या अपने साथ अपनी माँ को ले जाना चाहता था लेकिन सरस्वती ने खुद ही मना कर दिया था। रात के खाने पर माँ के साथ आर्या की खूब बातचीत हुई। कामकाज को लेकर सरस्वती ने कुछ नहीं पूछा। आर्या ने स्वयं बताया कि वह एक बड़ी कंपनी में सीईओ बनने वाला है। सरस्वती को इससे कोई खुशी नहीं हुई, उल्टे उसने कहा- ये सब मैं नहीं जानती। इस गाँव को तुम्हारी जरूरत है। बीस सालों से मैंने तुमसे कुछ नहीं मांगा, आज भी नहीं मांगूँगी। बस तुम्हें इस गाँव के प्रति तुम्हारे कर्तव्य को याद दिला रही हूँ। तुम्हें अपने पिता के आदर्शों को पूरा करना है।

अब कलेक्टर बनकर ही इस गाँव में आना। ये इस गाँव की जरूरत है अब। आर्या ने माँ की बात को सदा ही माना था। वह अपनी पढ़ाई के लिए निकल गया।

तीन साल बीत गए। न तो बांध नजर आया न ही किसानों की खुशहाली। हाँ, बांध के स्थान पर ऊंची-ऊंची चिमनियाँ और भवन जरूर दिखने लगे। अब सभी को मालूम हो चुका था कि उनके साथ छल हुआ है। भारी छल। धुआँ उगलती चिमनियाँ गाँव के पूरे वातावरण को विषाक्त बना रही थीं। हरियाली से भरा जीवंत गाँव अब धुएं और धूल के साथ गंभीर प्रदूषण का सामना कर रहा था। लोगों की नई-नई बीमारियाँ हो रही थीं। गरीबों की दशा और खराब हो रही थी। डॉक्टर भी अपर्याप्त थे और उनके पास इन बीमारियों से निपटने के साधन नहीं थे। किसानों की जिंदगी नारकीय हो गई थी। मधुपुर वीरान और बंजर हो रहा था।

पर्यावरण में घुलते जहर और बंजर होती धरती से मधुपुर की स्थिति दिन-प्रतिदिन खराब होती गई। हर कोई हतप्रभ और लाचार था। अब सब किस्मत के भरोसे थे कि कभी तो वह समय आएगा और मधुपुर फिर खुशहाल होगा। सालों बाद मधुपुर में दुर्गापूजा का त्यौहार इसबार उत्साह से मनाया जा रहा था। सबके उत्साह की वजह था नया जिला कलेक्टर। उसने घोषणा की थी कि मधुपुर में बांध-निर्माण का जो वादा किया गया था उसे पूरा किया जाएगा। किसी को यह नहीं मालूम था कि नया कलेक्टर कोई और नहीं रघु और सरस्वती का बेटा आर्या ही था। आर्या ने इंजीनियरिंग छोड़कर कड़ी मेहनत से परीक्षा पास की और कलेक्टर बनकर अपने माँ के सपने को पूरा किया। अब वह लोगों के जीवन में नई उम्मीद बनकर सामने आया था।

गाँव के सभी लोग आर्या के स्वागत के लिए उत्साहित थे सिवाय मुखिया चंद्रिका ठाकुर का परिवार और संबंधी के। आर्या ने सभी का स्वागत किया और कहा- मधुपुर की इस धरती को सादर नमन करते हुए मैं निःस्वार्थ भाव से इसकी सेवा करना चाहता हूँ। आशा है कि आप सभी इसमें सहयोग देंगें। इसे पहले के मधुपुर जैसा हरा-भरा और खुशहाल बनाना है।

वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों की आँखों में आशा की चमक देखी जा सकती थी। लेकिन चंद्रिका ठाकुर और उसके बेटे मोंटी ने उसी रात को आर्या को रास्ते से हटाने की योजना बनाई। उन्हें डर था कि आर्या उनकी वर्षों की मेहनत पर पानी फेर देगा। घोर स्वार्थी किसी भी हद तक जा सकता है। चंद्रिका ने सोचा कि जब हाथी को कुचल दिया गया तो उसके बच्चे को कुचलने में कितनी देर लगेगी। आर्या को भी आभास था कि फरेबी लोग कुछ भी कर सकते हैं अतः उसने पूरी सावधानी बरती। उसने बांध-निर्माण में हुए फ़रेबों की पूरी जानकारी इकट्ठा की थी और अपने पिता की हत्या की सच्चाई को भी समझ लिया था। आर्या ने कानूनी प्रक्रिया का पालन किया और उच्च अधिकारियों से इस बारे में गंभीरता से बात की। सच्चाई जानने के बाद सभी अधिकारी उसके साथ थे।

अब उसने बांध-निर्माण के स्वप्न को साकार करने का निर्णय लिया। मधुपुर में कार्तिक मेले का आयोजन हुआ जिसका उद्घाटन सरस्वती ने किया। इसकी भव्यता से गाँव की खुशी झलक रही थी। चंद्रिका जैसे फरेबी और उसके साथियों को जेल हो चुकी थी। फैक्ट्रियों पर ताला लग चुका था। और बांध-निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा था। आर्या ने गाँववालों को शिक्षा की महत्ता का आभास कराया। गाँव के लिए उसने सरकार से उच्च विद्यालय और क्षेत्र के लिए एक विश्वविद्यालय की मांग की जो कि मधुपुर में बनाया जाना था। सरकार का भी सहयोग मिलने से ये कार्य सम्पन्न भी हुआ। आज मधुपुर के लोग आर्या के नेक कार्यों की सराहना करते हैं और वह सभी के लिए एक प्रेरणा है। आर्या के प्रयासों से ही आज मधुपुर अपने सुनहरे पल को फिर से जी रहा है।

अनिल कुमार
लेखाकार

जल संरक्षण शपथ-ग्रहण

विद्यालय के मैदान में सभी बच्चे प्रार्थना कर रहे थे। प्रार्थना खत्म होने पर प्रधानाध्यापक महोदय माईक लेकर बच्चों को संबोधित कर कहने लगे---

बच्चों आज विश्व जल दिवस है। प्रत्येक वर्ष 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है और आज हम सब इस विश्व जल दिवस के अवसर पर जल संरक्षण शपथ ग्रहण करेंगे। जल को संरक्षित रखने का शपथ लेंगे और पानी का बिना मतलब बर्बादी नहीं करेंगे।

आगे के पंक्ति से एक लड़की बोली जिसका नाम सुरुचि था, सर, हम यह जल दिवस क्यों मनाते हैं? प्रधानाध्यापक – विश्व जल दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा मनाए जाने एक वार्षिक उत्सव है, जिसका उद्येश्य शुद्ध पेयजल का महत्व बताना और लोगों में जागरुकता फैलाना है।

सचिन- सर, ये जल संरक्षण शपथ ग्रहण क्या होता है?

प्रधानाध्यापक- जल यानी पानी हमारे लिए प्रकृति की ओर से दी गई एक अनमोल संपदा है। जिसका सही और विवेकपूर्ण तरीके से इस्तेमाल करने का वचन देना, वादा करना ही जल संरक्षण शपथ ग्रहण कहलाता है। हमें पानी को बचाकर रखना चाहिए और जितना जरुरत हो उतना ही खर्च करना चाहिए, समझे।

सचिन- सर मुझे पानी बचाने की जरुरत नहीं है। मेरे घर पर बहुत सारा पानी है।

अविनाश- हाँ, सर मेरे यहाँ भी बहुत पानी है, मेरी मम्मा मुझे रोज नहलाती है। नन्हें से अविनाश ने बड़े ही मासूमियत से कहा। दोनों बच्चों की बातें सुनकर सभी बच्चे हँसने लगे। प्रधानाध्यापक हँसकर बोले- बेटा, पानी हमारी बुनियादी जरुरत है। पानी के बिना हम और हमारी दिनचर्या पूरी नहीं हो सकती। आज शहर में बड़े-बड़े उद्योगों, विभिन्न कल-कारखानों, पृथ्वी पर कम होते पेड़-पौधों के कारण होने वाले वर्षा में कमी के कारण पृथ्वी के अंदर का जल-स्तर कम होता जा रहा है, जो हमारे भविष्य के लिए ठीक नहीं है। इसलिए हमें पानी बचाने की जरुरत है।

एक बच्चा जो बहुत देर से सबकी बातों सुनकर बोर हो रहा था, झुँझलाकर बोला मुझे कोई जरुरत नहीं है पानी बचाने की और ऐसी बकवास बातें सुनने की। मेरे पापा के पास बहुत सारे पैसे हैं, वो कहीं से भी खरीद कर पानी ले

आएँगे कहते हुए अपनी कक्षा की ओर चल दिया।

... सुनिए न प्लीज कहीं से भी पानी लाने का उपाय कीजिए प्यास से गला सूख रहा। अब चक्कर भी आ रहा है मुझे। पत्नी रुआंसी होकर कह रही थी। पत्नी के आवाज देने पर मैं ख्यालों की दुनिया से बाहर आ गया था और फिर से परेशान हो उठा।

आज सुबह आठ बजे के करीब पत्नी के साथ पटना जाने के लिए घर से निकला था। लेकिन रास्ते में जाम में फँस गया था। ये शहर भी क्या अजीब होते हैं.... बेतरतीब बनावट और और अनियंत्रित भीड़ देखकर कभी-कभी सर चकराने लगता है। शहर में रहने का मोह ही ऐसा था कि यहाँ टिकना पड़ा और फिर परिवार की जिम्मेदारियाँ भी तो हैं। मैंने खयालों से बाहर आते हुए रास्ते के जाम पर निगाह डाली। मन का गुस्सा और बढ़ गया। यहाँ गाड़ियों की लंबी कतार देखकर लग रहा था कि चार-पाँच घंटे से पहले यह जाम खत्म होने वाला नहीं है और मुझे शहर जल्दी पहुँचना था, इसलिए मैंने मेन रोड छोड़ कर एक पतली सड़क (पगडंडी) पर गाड़ी मोड़ ली जो शहर तक जाती थी लेकिन रास्ता बहुत सुनसान था। चारों तरफ खेत-खलिहान और खाली मैदान ही नजर आ रहा था। हम दोनों उस वातावरण का आनंद लेते हुए चले जा रहे थे कि अचानक से गाड़ी बंद हो गई। अब यह सुकून से भरा सफर एक त्रासद अनुभव बनने वाला था। वही यात्रा जो कुछ पल पहले आकर्षक और आनंददायी थे, वे अब भीषण गर्मी में झुलसाने थे। मैं बाहर निकल कर देखने लगा कि क्यों गाड़ी अचानक बंद हो गई। लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आया। मैंने गाड़ी स्टार्ट करने की बहुत कोशिश की लेकिन वो स्टार्ट ही नहीं हुई। मैंने मदद के लिए चारों ओर नजर दौड़ाई, लेकिन वहाँ दूर-दूर तक सन्नाटे के सिवाय कुछ नजर नहीं आया। ऐसे में एक अजीब सी उदासी और चिन्ता से मन त्रस्त हो गया। उधर पत्नी की हालत भी खराब होती जा रही थी।

हम दोनों बहुत परेशान हो गये कि अब क्या होगा? भरी

दोपहरी, सुनसान सड़क और आग उगलती तेज धूप और गर्मी। प्यास से गला सूखने लगा था, मैंने पानी का बोतल गाड़ी से निकाला तो वो भी पहले से ही खाली था। याद आया पानी तो हम पहले ही पी चुके थे, गुस्से से मैंने ही खाली बोतल को दूर फेंक दिया था। बहुत विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी। प्यास और गर्मी से हम दोनों का बुरा हाल था। आबादी से कोसों दूर हम आ फँसे थे, जहाँ मदद की कोई उम्मीद नहीं दिख रही थी। पत्नी को कार में बैठा छोड़ कर मैं खुद गाड़ी से बाहर आ कर सड़क किनारे यह सोचकर खड़ा हो गया कि हो सकता है कोई इधर से गुजरे कुछ मदद मिल जाए। प्यास और परेशानी से तड़पते हुए अनायास ही मुझे अपने स्कूल का वो दिन और पानी का महत्व बताते हुए वो सर याद आ गए। वही सर जो क्लास में जल-संरक्षण का महत्व समझाते थे। और हमारे मूर्खतापूर्ण जवाबों की धुंधली याद भी कौंध गई।

जी हाँ, सही पहचाना आपने सर की बातों पर गुस्से से रिएक्ट कर वहाँ से भागने वाला बच्चा और कोई नहीं, वो मैं ही था। उस वक्त मैं बहुत शरारती और जिद्दी हुआ करता था। जिसका कारण था, जरुरत से ज्यादा मम्मी-पापा का प्यार....। मैं मम्मी-पापा का बहुत लाडला था। मेरी हर माँग और जिद आसानी से पूरी हो जाती थी, इसलिए मैं घर और स्कूल में किसी को कुछ नहीं समझता था। हर बात मुझे मजाक और बेमतलब की लगती थी, सिवाय अपनी जरुरत के। अचानक शहर की ओर से एक बाइक सवार को आते देखा, मैंने उसे रुकने का इशारा किया तो उसने पास आकर अपनी बाइक रोककर मुझसे मेरी परेशानी पूछा। मेरी परेशानी सुनने के बाद, उसने कहा- आप चिंता नहीं कीजिए। मेरा घर यहाँ से कुछ किलोमीटर की दूरी पर है वहाँ से मैं किसी मैकेनिक लेकर जल्दी ही आता हूँ। ऐसा कह वह तेजी से चला गया।

बेचारगी के साथ मैं गाड़ी में आकर बैठ गया और उसके आने का इंतजार करने लगा। आग उगलती गर्मी के बीच गाड़ी में बैठना भारी हो रहा था। कभी समय था जब कक्षा में बैठना बहुत भारी लगता था, पढ़ाई की बातें बहुत बकवास लगती थीं। आज वक्त ही वक्त था कि इस भयंकर गर्मी में उन पलों को याद करूँ जब मैं ऐसी ही मूर्खताएं किया करता था। कितना जिद्दी और गलत था मैं, इसका एहसास मुझे कई बार होता था। यहाँ तपती गर्मी में परिवार के साथ मुश्किल वक्त में पड़ा हुआ मैकेनिक के आने का इंतजार कर रहा था। अचानक मेरे मन में विचार कौंधा- मेरी गाड़ी तो शायद ठीक हो जाए लेकिन मेरी नादानियाँ और मूर्खताएं अब नहीं ठीक की जा सकती थीं।

तकरीबन 50-55 मिनट के बाद वह बाइकवाला व्यक्ति आया। उसके साथ में एक मैकेनिक भी था। मैकेनिक आते ही मेरी गाड़ी को ठीक करने लगा और वह आदमी मेरे पास आकर एक थैला थमाते हुए कहा- सर इसमें दो पानी का बोतल और कुछ खाने-पीने का सामान है। जब तक गाड़ी ठीक होती है तब तक आप और मेम साहब गाड़ी में बैठकर कुछ खा-पी लीजिए। मैं उसकी बातें सुनकर हैरान भी था और खुश भी। मेरे मन में उसके प्रति कृतज्ञता के भाव आ रहा था। मेरे पास उसे धन्यवाद देने के लिए कोई शब्द नहीं था। मुझे वो आदमी उस वक्त देवदूत की तरह नजर आ रहा था।

खैर मैं वो थैला लेकर गाड़ी में आ गया। जल्दी से एक पानी का बोतल पत्नी को थमाया और दूसरा बोतल का ढक्कन खोलकर अपने मुँह से लगाया और ऐसे पीने लगा जैसे वर्षों से पानी नहीं मिला हो। जल का महत्व अब समझ में आ रहा था और उसके साथ यह भी समझ में आ रहा था कि हमारे जैसे मनुष्यों को जल का अभाव इतना प्रताड़ित और त्रस्त करता है तो सूखी धरती और मरूस्थल में जीवों का क्या होगा? उस पानी के एक-एक घूँट के साथ स्कूल का उस दिन का हर दृश्य आँखों के सामने जीवंत होने लगा था- सर का पानी के महत्व को बताना और समझाना, और फिर उसका गुस्से में वहाँ से भागना। अब एक बार तो ऐसा लगा कि जैसे समय ने मेरी जिद को आईना दिखाया है और यह भी कि मैं कितना बड़ा स्वार्थी हूँ..? केवल अपने बारे में सोचता रहता हूँ। मेरे पास सब कुछ है तो सभी के पास सब

कुछ होगा..। मैंने कभी भी नहीं सोचा कि मैं भी किसी की मदद करूँ। हमेशा अकड़ में ऐंठा हुआ रहता था। आज मुझे लगा- किस बात की अकड़ थी वो?

जिस पानी को कभी मैंने कोई महत्व नहीं दिया, जिसकी महत्ता को अभी तक समझ नहीं पाया था, आज वह 2-3 घंटे में ही समझ चुका था। ये सीख सिर्फ पानी के महत्व को समझने की नहीं थी। ये जीवन में करुणा और सहानुभूति, प्राणि-जगत को और दूसरों के महत्व को समझने की बात थी। कितनी सच थी सर की बातें कि जल ही जीवन है। वह कहा करते थे और उनकी बातें मुझे आज समझ में आई है। आज सचमुच मैंने दिल से जल संरक्षण करने की शपथ ग्रहण की और साथ ही अपने दिल से एक मगरुर इंसान को भी निकाल बाहर करने का फैसला किया। अपनी बातों को और करतूतों को याद करके मैं शर्म से गड़ा जा रहा था। ऐसा लग रहा था कि मैं अपनी नजरों में ही गिरता जा रहा हूँ। आज तो मेरे पापा और न ही मेरे खुद के पैसे मेरी प्यास बुझा सके। आज लोगों की सहृदयता ही मेरे काम आई। मेरी गाड़ी ठीक हो चुकी थी। उन लोगों को धन्यवाद देकर मैं गाड़ी में आकर बैठ गया और गाड़ी स्टार्ट कर अपने गंतव्य की ओर चल पड़ा। एक नयी ऊर्जा, नये उत्साह और नयी सीख के साथ।

राकेश भारती
वरिष्ठ अनुवादक

उजाले की ओर

एक समय की बात है जब सुरेश और श्याम कॉलेज में साथ पढ़ा करते थे। सुरेश पढ़ाई-लिखाई में बहुत तेज था, लेकिन श्याम का पढ़ाई-लिखाई में जरा भी मन नहीं लगता था। श्याम हमेशा ही अपने इधर–उधर के कामों में काफी व्यस्त रहा करता था, फिर भी वह कॉलेज रोज समय से जाया करता था। सुरेश भी शुरूआती दिनों में कॉलेज रोज जाया करता परंतु उसे कॉलेज जाने में थोड़ा लेट हो जाया करता था। सुरेश पहले बैकिंग की तैयारी करने कोचिंग जाया करता फिर कोचिंग से वापस लौटते समय अपना कॉलेज ज्वाइन करता। श्याम हमेशा कहता- भाई तुम रोज-रोज कॉलेज आने में लेट क्यों हो जाते हो? सुरेश कहता- भाई मैं तो तुम्हें बता चुका हूँ कि मैं पहले बैंकिग की तैयारी के लिए कोचिंग जाया करता हूँ फिर कोचिंग का क्लास समाप्त होने पर वापस लौटते समय कॉलेज का क्लास ज्वाइन कर पाता हूँ इसी वजह से मुझे कॉलेज आने में थोड़ी देर हो जाती है।

श्याम ने कहा- भाई, अगर ये बात है तो तुम कॉलेज के क्लास समाप्त होने के बाद कोचिंग जाया करो। इसी बात पर सुरेश ने कहा- भाई, कॉलेज की क्लास समाप्त होने के बाद कोचिंग जाने पर पता चलेगा कि कोचिंग में पढ़ाने वाला और पढ़ने वाला कोई भी नहीं है। कोई मेरे लिए अलग से स्पेशल क्लास थोड़ी न चलाएगा। खैर, कोई बात नहीं भाई। ये बताओ, आज कॉलेज में अभी तक क्या-क्या पढ़ाई हुई है? श्याम ने हँसते हुए कहा- भाई, तुम्हें क्या लगता है, मैं तुम्हें कुछ बता पाऊँगा? मुझे तो खुद भी कुछ समझ में नहीं आता है... यह बोलते हुए वह जोर-जोर से हंसने लगता है। मुझे तो इतना समझ में भी नहीं आता कि खुद को अच्छी तरह से पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकूँ। इसी वजह से तो मैं तुम्हारा इंतजार करता हूँ। इसी वजह से तो मैंने तुमसे कहा कि भाई तुम कॉलेज की क्लास समाप्त होने के बाद अपनी कोचिंग जाओ।

सुरेश ने कहा- कोई बात नहीं भाई, ये सब छोड़कर तुम भी मेरे साथ बैकिंग की तैयारी करने के लिए कोचिंग क्लास ज्वाइन कर लो। श्याम ने कहा- मैं तो कॉलेज का क्लास रेगुलर करने पर भी कुछ नहीं समझ पाता फिर मैं बैकिंग या किसी और चीज की तैयारी कैसे करूँ? तब सुरेश ने हँसते हुए कहा- अंधकार के बाद ही प्रकाश होता है बस मन में यह निश्चय कर लो कि कल हमारा है और उसे पूरा करने के लिए मेहनत करो तो सब संभव हो सकता है। सुरेश ने एक बात और कही- तुम कॉलेज रेगुलर क्यों आ रहे हो, जब आगे तुम्हें कुछ करना ही नहीं है? पढ़ाई-लिखाई करने के बहाने रोज कॉलेज आकर अपना समय क्यों बरबाद कर रहे हो? तब श्याम ने कहा मैं घर पर बोर हो जाता हूँ इसलिए मैं रोज समय से पहले ही कॉलेज आ जाता हूँ। सुरेश बहुत जोर–जोर से हँसने लगा। फिर श्याम ने कहा- भाई, तुम्हें मेरी बातों पर हँसी आ रही है? मैं तो घर में परेशान रहता हूँ, घर वाले हमेशा परेशान करते हैं कि ये लड़का आगे जाकर क्या करेगा? रोज–रोज वही सब सुनकर मैं तंग आ जाता हूँ। तब सुरेश ने कहा- तो इसमे गलत क्या है? घर वाले तो तुमसे पूछेंगे ही कि तुम आगे जाकर क्या करोगे? तब श्याम ने कहा- इन्हीं सब वजह से तो मुझे कुछ समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ? इसलिए तो मैं तुमसे अपने दिल की बात करता हूँ। जैसे तुम मुझे समझते हो वैसे मुझे कोई नहीं भी नहीं समझता। तब सुरेश ने कहा- नहीं भाई, हर कोई तुम्हें समझता है परंतु तुम्हें भी तो कुछ अच्छा करना चाहिए जिससे तुम्हारे घरवालों को भी तुम पर गर्व हो सके। चलो, तुम मेरे साथ ही पढ़ाई-लिखाई किया करो। श्याम ने कहा- ये तो बहुत अच्छी

बात है तब तो मुझे थोड़ा समझाने वाला भी मिल गया। सुरेश ने कहा- हाँ, जरूर।

सुरेश और श्याम दोनों का घर थोड़ी ही दूरी पर था। श्याम रोज सुरेश के घर आ जाता था। कभी पढ़ने के लिए तो कभी घर में जब उसका मन नहीं लगता तब भी अपना मन बहलाने। श्याम का सुरेश के घर आना-जाना बहुत बढ़ गया। इसी तरह से सुरेश के घरवालों के साथ मिलने-जुलने से घर वालों के साथ एक अपनापन सा हो गया। सुरेश के मम्मी-पापा भी उसे अपने बच्चे की तरह ही समझने लगे। इतना प्यार मिलने से श्याम को काफी अच्छा लगने लगा था। श्याम अपने घर से ज्यादा सुरेश के घर में समय बिताने लगा मानो वह उसी घर का ही एक सदस्य हो। सुरेश के साथ ही खाना–पीना, सुरेश के साथ ही रहना, सुरेश के साथ ही ज्यादा समय बिताना उसे बहुत अच्छा लगने लगा और सुरेश को भी इन चीजों की आदत सी हो गई। फिर भी सुरेश अपने पढ़ाई लिखाई में कभी कोई कमी नहीं करता था और समय–समय पर वह पढ़ाई-लिखाई में श्याम की मदद करता।

श्याम को भी उसके साथ पढ़ने-लिखने में अच्छा लगता क्योंकि सुरेश का पढ़ाने का तरीका ही कुछ खास था। इस तरह श्याम और सुरेश की दोस्ती और गहरी होने लगी। समय बीतता गया। सुरेश का कॉलेज में हर कोई मित्र बनता चला गया क्योंकि सुरेश था ही औरों से कुछ अलग। अच्छों के साथ हमेशा अच्छा और बुरों के साथ हमेशा उचित व्यवहार करने में नहीं डरता। सुरेश पढाई-लिखाई में तेज होने के साथ बहुत ही निडर था। वह हमेशा सही के साथ अपना कदम रखता और गलत का खुलकर विरोध करता था। इसी वजह से हर कोई उसे मित्र बनाना चाहता था। सुरेश को भी दोस्त बनाना काफी पंसंद था। क्योंकि एक दोस्त ही है जो अपनी परेशानी को एक-दूसरे के साथ खुलकर शेयर करता है, एक दूसरे का सहारा बन सकता है।

इसी बीच सुरेश की दोस्ती शीनू नाम की लड़की से हो गई। शीनू पढ़ाई–लिखाई में बहुत ही तेज थी और क्लास की टॉपर स्टूडेंट थी। वह अपनी पढ़ाई–लिखाई अंग्रेजी मिडियम से किया करती थी। और सुरेश हिंदी मिडियम का स्टूडेंट था। फिर भी वे दोनों एक दूसरे के बहुत ही गहरे दोस्त बन गए। सुरेश से मिलकर शीनू को बहुत सपोर्ट मिलता क्योंकि सुरेश के दोस्तों पर कोई आँख उठाकर देख भी नहीं सकता था। और शीनू की तो बात ही कुछ और थी। शीनू, सुरेश की खास दोस्तों में एक हो गई। इस तरह सुरेश की औरों के साथ दोस्ती गहरी होते देख श्याम को अंदर से तकलीफ होती थी। सुरेश को इस बात का जरा भी एहसास नहीं था कि श्याम को इस बात से बहुत तकलीफ हो रही है। सुरेश हमेशा ही श्याम का अच्छा दोस्त था और श्याम का हमेशा अच्छा दोस्त बना रहना चाहता था परंतु भगवान को यह मंजूर नहीं था। सुरेश श्याम को अन्य दोस्तों की अपेक्षा कहीं ज्यादा प्यार और सम्मान देता था, हमेशा उसकी हर चीज में मदद भी किया करता था फिर भी श्याम को इस बात से तकलीफ पहुँचती थी। क्योंकि सुरेश कॉलेज में जाने पर अपने अन्य दोस्तों के साथ खासकर शीनू के साथ थोड़ा ज्यादा समय बिताता था। सुरेश को शीनू के साथ समय बिताता देख श्याम को अच्छा नहीं लगता था। पता नहीं, उसे क्यों इस बात से तकलीफ होती थी? धीरे-धीरे समय बीतता गया और श्याम पर इस बात का बहुत ज्यादा असर पड़ने लगा जबकि सुरेश इसपर कभी भी ध्यान नहीं देता था।

कुछ समय बीत जाने के बाद जब कॉलेज की फाइनल परीक्षा नजदीक आने लगी तो सुरेश ने श्याम को कहा- भाई, तुम एक काम करो। कल से तुम मेरे घर पर शाम में ही चले आना ताकि तुम्हारी परीक्षा की तैयारी अच्छी हो सके। श्याम ने कहा- ठीक है भाई। श्याम घर पर जब-तब चला आया करता और परीक्षा की थोड़ी बहुत तैयारी करता परंतु उसका पढ़ने में जरा भी मन नही लगता था। श्याम का घर पर आना और सुरेश के परिवार वालों से लगातार मिलना–जुलना उसे काफी सुरेश के परिवार के करीब ले गया। सुरेश के परिवार वाले उसे जिस तरह से प्यार करते ठीक उसी तरह से श्याम को भी प्यार मिलना चालू हो गया। इस बात से श्याम बहुत खुश रहता। इसी बीच सुरेश, कॉलेज जाना थोड़ा कम करने

लगा क्योंकि फाइनल परीक्षा का समय नजदीक आ रहा था। श्याम, घर में मन नहीं लगने के कारण कॉलेज भी रेगुलर चला जाता था।

सुरेश ने श्याम से कहा- भाई, तुम कॉलेज जाने के बजाय मेरे घर पर ही आकर परीक्षा की अच्छे तरह से तैयारी कर लो। लेकिन वह कॉलेज से आकर सुरेश के घर होकर अपने घर को जाता था। सुरेश के घर जो कुछ खाना बनता श्याम को भी खाने को मिलता और श्याम भी अपने परिवार की तरह उसे चुप-चाप खा लेता था। सुरेश को इस बात से बहुत खुशी होती कि श्याम उसके घर से होकर अपने घर को जाता था। सुरेश अपनी परीक्षा की तैयारी में लगे रहने के कारण क्लास नहीं करना चाहता था ताकि वह घर पर बैठ कर अच्छे से परीक्षा की तैयारी कर पाए। दूसरी ओर श्याम चाहता था कि सुरेश भी उसके साथ कॉलेज की क्लास में उसके साथ रहे। सुरेश ने कॉलेज जाने से इनकार कर दिया और कहा- भाई, मैं घर पर ही रहकर परीक्षा की तैयारी करूंगा ताकि मैं परीक्षा में अच्छे नंबर ला सकूँ।

कॉलेज में श्याम का मन सुरेश के बिना बिल्कुल भी नहीं लगता था, इसी वजह से वह परेशान रहने लगा। सुरेश ने श्याम से कहा- भाई, तुम भी कॉलेज जाने के बजाय मेरे घर पर ही आकर पढ़ाई कर लिया करो...तुम्हें परेशानी किस बात की है। श्याम बोला- ठीक है, मैं देखता हूँ। सुरेश भी बीच–बीच में कभी-कभार कॉलेज चला जाता था ताकि परीक्षा सें संबंधित जानकारी उसे समय पर मिल सके। कॉलेज में सुरेश की एक अलग ही पहचान थी। कुछ समय बाद परीक्षा का दिनांक सामने आ गया। परीक्षा का दिनांक सामने आने से हर कोई घबराने लगा। इधर श्याम को भी बहुत चिंता सताने लगी कि मेरा क्या होगा? जब कॉलेज में परीक्षा का प्रवेश-पत्र आया तो श्याम और सुरेश भी कॉलेज पहुंचे।

तभी सुरेश के बहुत सारे दोस्तों ने सुरेश से पूछा- भाई, तुम कौन–कौन से प्रश्न की तैयारी किए हो....परीक्षा में संभावित क्या-क्या प्रश्न आ सकते हैं...थोड़ा हमलोगों को भी बता दो। सुरेश ने कहा- भाई देखो, मैंने तो पिछले दस साल का प्रश्न तैयार किया है। साथ ही कॉलेज में पढ़ाए गए सिलेबस के अनुसार तैयारी की है। अब मैं कैसे बता सकता हूँ कि फाइनली कौन-कौन से प्रश्न परीक्षा में पूछे जाएंगे। मैं यही कह सकता हूँ कि कम से कम दस साल के प्रश्नों को अच्छी तरह से देख लो। इसी बीच सुरेश चहेती मित्र शीनू भी आ गई। जब उसने सुरेश से पूछा कि परीक्षा में क्या-क्या प्रश्न आ सकते हैं तब सुरेश ने बताया देखो अभी तो परीक्षा होने में समय है, तुम मुझसे रात में आराम से बात करना। शीनू ने कहा-ओ के डीयर.....।

इस सब बातों से श्याम को भी पता था कि सुरेश और शीनू दोस्त से भी बढ़कर हैं। इसलिए सुरेश आजकल मुझसे भी ज्यादा शीनू के लिए सोचता रहता है। श्याम परीक्षा की बजाय शीनू के बारे में सोचता रहता कि सुरेश, शीनू के बहुत करीब जा रहा है। सुरेश और शीनू में न जाने कितनी घनिष्ठता है। इन कारणों से श्याम पढ़ाई-लिखाई में समय नहीं दे पा रहा था। इधर सुरेश अपनी परीक्षा की तैयारी में पूरी जोर–शोर से लगा हुआ था। इधर श्याम धीरे–धीरे सुरेश के घर आना थोड़ा कम कर रहा था। सुरेश ने श्याम से पूछा क्या- भाई, आजकल घर बहुत कम आना-जाना हो रहा है। कहीं परीक्षा की तैयारी तो नहीं चल रही है...ऐसा कहकर सुरेश हँसने लगा। श्याम ने कहा- भाई, आजकल तुम तो शीनू के पीछे पागल हो गए हो। फिर सुरेश ने कहा- नहीं भाई, शीनू बहुत अच्छी लड़की है तुम तो जानते हो वह पढ़ने में बहुत ही तेज है और उसके साथ मेरी पढ़ाई-लिखाई और भी मजबूत होती जा रही है, इसी वजह से मैं और शीनू दोनों एक-दूसरे की मदद भी कर लेते हैं। तुम भी अपनी पढ़ाई-लिखाई में मन लगाओं ताकि परीक्षा में अच्छे नंबर से पास हो सको।

सुरेश की बातों से श्याम का मन थोड़ा भर आया। उसने भी परीक्षा पास करने का मन बना लिया। परीक्षा के शुरू होने में बहुत कम दिन बचे हुए थे। श्याम ने भी अच्छे से परीक्षा की देने की तैयारी की। श्याम को इस बात का कोई गम नहीं था कि आगे क्या होने वाला था। परीक्षा पूर्ण होने और कुछ समय बीत जाने के बाद जब परीक्षा का परिणाम

आया तो सुरेश, शीनू और उसके बहुत सारे मित्र सभी बहुत अच्छे नंबंर से उत्तीर्ण हुए लेकिन श्याम परीक्षा में पास नहीं हो सका। इसी वजह से उसने सुरेश के घर भी आना बंद कर दिया। एक दिन सुरेश श्याम के घर गया और श्याम के बारे में उनके पिताजी से पूछा तो उन्होंने कहा- अरे बेटा, देखो न श्याम को आजकल क्या हो गया है? जब से परीक्षा में फेल हुआ है तब से वे तो कही जाना आना ही बंद कर दिया है। तब सुरेश श्याम से मिला और कहा- देख भाई, कोई कुछ भी करे परंतु हमें अपने आप पर ही निर्भर रहना चाहिए। तुम बेकार की बातों पर ध्यान न देकर पढ़ाई–लिखाई में थोड़ा जोर दिए होते तो आज तुम फेल नहीं होते। इसलिए अपने जीवन में जो कुछ करना है वह खुद ही करना है।

एक लंबा समय बीत गया। श्याम भी दोबारा परीक्षा में बैठकर, बहुत कड़ी मेहनत कर परीक्षा में सफलता पाकर, आज एक अच्छे सरकारी पद पर काम कर रहा है। उसने अपने माता-पिता का नाम रौशन किया। हार मानना ही जिंदगी नहीं है, हार से डटकर लड़ना और हार को हराना भी जिदंगी है, हार से लड़ना और उसपर विजय पाना भी जिदंगी है। जिस तरह अंधेरे के बाद उजाला आता है उसी तरह जीवन में भी अंधकार के बाद प्रकाश लाना भी हमारा ही धर्म है।

अमित कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

सोशल मीडिया: बच्चों के संदर्भ में

सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा लोग दूर रहकर भी एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं और अपने विचारों एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान कम समय में तेजी से एवं कई लोगों के मध्य कर सकते हैं। इस माध्यम के द्वारा कोई भी समाचार बहुत तेजी से दुनिया के एक छोर से दूसरी छोर तक आसानी से पहुँच सकता है। सोशल मीडिया को आमतौर पर जन-संचार के साधन के रूप में परिभाषित किया जाता था, परंतु पिछले कुछ वर्षों में इसके स्वरूप में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। ये प्लेटफ़ॉर्म तेजी से विकसित हुए हैं। अब यह न केवल जनसंचार का माध्यम है बल्कि मनोरंजन, ज्ञान, प्रकाशन, मार्केटिंग, व्यवसाय, रोजगार इत्यादि के माध्यम के रूप में उभर रहा है। यही कारण है कि आज यह हर व्यक्ति तक पहुँच चुका है और बच्चे भी इससे अछूते नहीं हैं।

डिजिटल तकनीक जैसे स्मार्टफोन एवं इंटरनेट आसानी से उपलब्ध होने के कारण मीडिया का दायरा नाटकीय रूप से बढ़ता जा रहा है। आज का युग डिजिटल युग कहलाता है जिसमें सोशल मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, स्नैपचैट, ट्विटर और व्हाट्सऐप जैसे प्लेटफ़ॉर्म ने संचार, मनोरंजन और ज्ञान प्राप्ति के साधन को पूरी तरह बदल दिया है। सोशल मीडिया का प्रभाव हर आयु वर्ग पर है लेकिन बच्चों पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव उनके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास को प्रभावित करता है। जिसका मुख्य कारण है कि अब बच्चे खेल-कूद में अपना समय नहीं देते बल्कि फोन में वीडियो, रील, गेम इत्यादि देखते एवं खेलते रहते हैं।

यू-ट्यूब की बात करें तो इस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सबसे ज्यादा देखे जाने वाले शीर्ष पाँच वीडियो में से चार वीडियो ऐसे हैं जो बच्चों के लिए ही बनाए गए हैं एवं बच्चे इन वीडियो को देखे बिना खाना भी नहीं खाते हैं। इन वीडियो में शीर्ष पर "बेबी शार्क डांस" (जिसे 1552 करोड़ बार देखा गया है), "जॉनी जॉनी यस पापा" (जिसे 700 करोड़ बार देखा गया है), "विह्लस ऑन द बस" (जिसे 700 करोड़ बार देखा गया है) एवं "बाथ सॉग" (जिसे 697 करोड़ बार देखा गया है) शार्ष पर है। ये वीडियो नर्सरी की कविताएं हैं। इससे बच्चे सीखते भी हैं परंतु कब बच्चे को इसकी आदत लग जाती है पता भी नहीं चलता। रील्स और शॉर्ट्स वीडियो बच्चों को और भी अधिक प्रभावित करते हैं। धीरे-धीरे सोशल मीडिया बच्चों की दिनचर्या का हिस्सा बन जाता है और बच्चे शारीरिक गतिविधियों से दूर मोबाइल स्क्रिन में ही दिन भर उलझे रहते हैं। इससे बच्चों का शारीरिक, सामाजिक एवं मानसिक विकास प्रभावित होता है।

डाटा रिपोर्टल डॉट कॉम और केपियोस की एक रिपोर्ट के अनुसार अक्टूबर 2024 तक दुनियाभर में सक्रिय सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की संख्या 5.22 अरब तक पहुँच गई है जो विश्व की जनसंख्या का 63.8 प्रतिशत है। इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में 94.5 प्रतिशत लोग सोशल मीडिया का उपयोग करतें हैं। वैश्विक उपयोगकर्ताओं की बात करें तो लोग प्रतिदिन लगभग 2 घंटे 19 मिनट तक का समय सोशल मीडिया पर बिताते हैं।

हमारे देश भारत की स्थिति भी इससे अलग नहीं है। जनवरी 2024 में सक्रिय सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की संख्या 46.2 करोड़ थी। 2024 की शुरुआत में हुए एक सर्वे के अनुसार भारत में जिस सोशल मीडिया के सबसे ज्यादा उपयोगकर्ता हैं, वह है यू-ट्यूब, जिसके लगभग 46.2 करोड़ सक्रिय उपयोगकर्ता हैं, दूसरा स्थान फेसबुक का है जिसके

36.69 करोड़ उपयोगकर्ता हैं, तीसरा स्थान इंस्टाग्राम का है जिसके लगभग 36.29 करोड़ उपयोगकर्ता हैं, एवं लगभग 20.1 करोड़ उपयोगकर्ताओं के साथ स्नैपचैट चौथे स्थान पर है। इन आंकड़ों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सोशल मीडिया आज-कल हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। वयस्क लोग ही स्वयं इस लत का शिकार हो चुके हैं तो बच्चे इससे कैसे अछूते रह सकते हैं?

हालाँकि सोशल मीडिया कई सकारात्मक पहलुओं को प्रस्तुत करता है, जैसे शिक्षा, वैश्विक जुड़ाव, और रचनात्मकता को बढ़ावा, लेकिन इसके अत्यधिक और अनुचित उपयोग से गंभीर नकारात्मक प्रभाव भी हो सकते हैं जिसका विस्तृत विश्लेषण निम्नवत है-

सोशल मीडिया का बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव:-

1. **शैक्षिक लाभ:-** सोशल मीडिया पर उपलब्ध शैक्षिक सामग्री बच्चों को नई चीजें सीखने का अवसर प्रदान करती है। यू-ट्यूब एक ऐसा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है जहां लोग स्कूल, कॉलेज की शिक्षा की सामग्री के साथ-साथ खाना बनाने जैसी आधारभूत शिक्षा भी नि:शुल्क एवं एक से अधिक शिक्षकों द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। कोरोना महामारी के दौरान जब सभी शिक्षण संस्थान बंद थे तब सोशल मीडिया (गूगल मीट, जूम मीटिंग, माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस इत्यादि) द्वारा लोग शिक्षा प्राप्त कर रहे थे एवं कार्यालय के कार्य भी कर रहे थे। आज सभी यू-ट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर यू.पी.एस.सी जैसे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी आसानी से घर बैठे कर सकते हैं। इससे दिव्यांगजनों को बहुत लाभ मिलता है जो घर बैठे अपना सपना पूरा कर सकते हैं।
2. **रचनात्मकता को प्रोत्साहन:-** सोशल मीडिया बच्चों को अपनी रचनात्मकता व्यक्त करने का माध्यम प्रदान करता है। इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफ़ॉर्म पर बच्चे अपनी कला, संगीत, नृत्य और अन्य प्रतिभाओं को प्रस्तुत कर सकते हैं जिससे उन्हें लोकप्रियता के साथ-साथ रोजगार के अवसर भी मिलते हैं। इसके साथ ही यू-ट्यूब जैसे प्लेटफॉर्मों पर तो ऐसे कंटेन्ट क्रियेटर जिनके सब्सक्राइबर ज्यादा हैं एवं जिनके वीडियो को ज्यादा लोग देखते हैं, उन्हें पैसे भी मिलते हैं। भारत समेत विश्व के कई लोग ऐसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म द्वारा अपना जीविकोपार्जन भी करते हैं।
3. **वैश्विक जुड़ाव:** -सोशल मीडिया बच्चों को विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और भाषाओं के बारे में जानने का अवसर देता है। इसके द्वारा लोग दुनिया के कोने-कोने में रहने वाले लोगों से जुड़ सकते हैं। सोशल मीडिया उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है और उन्हें वैश्विक नागरिक बनने की प्रेरणा देता है।
4. **सामुदायिक जागरूकता:** -सोशल मीडिया बच्चों को समाज में चल रहे मुद्दों के प्रति जागरूक बनाता है। पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, और स्वास्थ्य जैसे विषयों पर जागरूकता बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया एक शक्तिशाली माध्यम है। अत: इसके माध्यम से लोग जागरूक नागरिक बनने के लिए प्रेरित होते हैं।

सोशल मीडिया के बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव: -

1. **मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:** सोशल मीडिया बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है। इससे बच्चों में हीन-भावना और आत्म-संदेह जैसी भावनाएं घर करने लगती हैं। इसका मुख्य कारण है कि सोशल मीडिया पर लोग अपनी जीवन-शैली को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाते हैं एवं बच्चे स्वयं की तुलना उनसे करने लगते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि रील लाइफ और रीयल लाइफ में अंतर होता है। ऐसा भी देखा गया है कि बच्चे सोशल मीडिया पर लोकप्रियता पाने के लिए सोशल मीडिया पर ज्यादा समय बिताते हैं और जब उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार लाइक और फॉलोवर्स नहीं मिलते हैं तो वे मानसिक तनाव का शिकार हो जाते हैं।
2. **साइबर बुलिंग:**- किसी व्यक्ति को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से परेशान करना साइबर बुलिंग कहलाता है। साइबर बुलिंग सोशल मीडिया का सबसे बड़ा खतरा

है। इससे बच्चे अपमानजनक टिप्पणियों, धमकियों, अफवाहों और ट्रोलिंग का शिकार हो सकते हैं जिससे उनके आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को गहरी चोट पहुँचती है।

3. **शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:-** सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। सोशल मीडिया पर ज्यादा समय बिताने वाले बच्चों की शारीरिक गतिविधियां सीमित हो जाती हैं, जिससे वे मोटापा जैसी समस्या का शिकार हो जाते हैं। लगातार स्क्रीन के सामने बैठने से सर में दर्द हो सकता है और आँखों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। यह भी देखा गया है कि बच्चे देर रात तक मोबाइल फोन चलाते हैं जिससे नींद पूरी न होने के कारण वे कई रोगो से ग्रसित हो जाते हैं।
4. **गोपनीयता और सुरक्षा का खतरा:-** सोशल मीडिया पर बच्चों की निजी जानकारी का दुरुपयोग हो सकता है। कुछ बच्चे सोशल मीडिया के इतने आदी हो चुके हैं कि अपनी सारी दैनिक गतिविधियों को जैसे वे कहाँ जा रहे हैं, क्या खा रहे हैं, कहाँ घूम रहे हैं, अपनी लाइव लोकेशन इत्यादि स्नैप्स के माध्यम से स्नैपचैट पर अपलोड करतें हैं। कुछ शरारती तत्व इसका गलत फायदा उठाते हैं। डीपफेक, ऑनलाइन हैकिंग आदि के खतरे भी बढ़ जाते हैं।
5. **समय की बर्बादी:-** आदत लगने के पश्चात् बच्चे अक्सर सोशल मीडिया पर जरूरत से ज्यादा समय बिताते हैं। यह उनकी पढ़ाई और खेलकूद जैसी जरूरी गतिविधियों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। बच्चे जरुरी कार्य छोड़कर रील्स एवं शॉर्ट वीडियोज बनाने एवं देखने में अपना अधिकतर समय बिता रहे हैं जिससे समय-प्रबंधन की समस्या उत्पन्न होती है।
6. **अवांछित सामग्री तक पहुँच:-** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जो सामग्री उपलब्ध है वह सभी के लिए है अर्थात् यहाँ ऐसी सुविधा नहीं है कि बच्चों के लिए अलग सामग्री उपलब्ध हो सके। यही कारण है कि सोशल मीडिया पर बच्चों को ऐसी सामग्री मिल सकती है जो उनकी उम्र के लिए उपयुक्त नहीं होती। अत: सोशल मीडिया पर उपलब्ध हिंसक, अश्लील या अनुचित सामग्री का बच्चों के मानसिक और नैतिक

विकास पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

7. **सामाजिक अलगाव:-** सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से बच्चे असामाजिक हो सकते हैं। वे अपने परिवार और दोस्तों से दूर हो जाते हैं। आभासी (वर्चुवल) दुनिया में अधिक समय बिताने से उनका वास्तविक जीवन प्रभावित होता है और बच्चों में संचार कौशल (कम्यूनिकेशन स्किल) भी विकसित नहीं हो पाता है।

समाधान और सुझाव:-

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव को ही देखते हुए ऑस्ट्रेलिया की संसद ने 29 नवंबर 2024 को एक कानून पारित किया जिसके अनुसार 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग पर पूर्ण रुप से प्रतिबंध लगा दिया गया है। यह कानून सम्पूर्ण ऑस्ट्रेलिया में 2025 से लागू है।

इसके अलावा फ्रांस, जर्मनी, बेल्जियम, इटली जैसे देशों में 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर एकाउंट बनाने के लिए माता-पिता की अनुमति की आवश्यकता पड़ती है। भारत में भी इस दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों से बच्चों को बचाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं-

1. **माता-पिता की भूमिका:-** माता-पिता को बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग पर नजर रखनी चाहिए। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे केवल उपयुक्त सामग्री ही देखें एवं सोशल मीडिया का उपयोग कम से कम करें। इसके अलावा अभिभावकों को ऑनलाइन सुरक्षा के महत्व के बारे में बच्चों को भी शिक्षित करना चाहिए।
2. **शिक्षण-संस्थानों की भूमिका:-** स्कूल और शिक्षण संस्थानों को बच्चों को डिजिटल साक्षरता और जिम्मेदार इंटरनेट उपयोग की शिक्षा देनी चाहिए। बच्चों को साइबर बुलिंग और ऑनलाइन खतरों से बचाव के लिए प्रशिक्षित करना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
3. **सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म की जिम्मेदारी:-** सोशल मीडिया कंपनियों को ऐसे सुधार करने चाहिए जिससे बच्चें अवांछित एवं अनुचित सामग्री तक नहीं पहुंच पाएं। बच्चों के लिए विशेष फिल्टर, गोपनीयता सेटिंग्स हो एवं बच्चों के लिए विशेष रूप से अलग एप्लिकेशन बनाए जाने चाहिए। इसके अलावा अवांछित एवं अनुचित सामग्री को तुरंत हटाने की व्यवस्था भी करनी होगी।
4. **बच्चों का मार्गदर्शन:-** बच्चों को सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग के लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्हें शैक्षिक और रचनात्मक सामग्री देखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें यह समझाना चाहिए कि लाइक और फॉलोअर्स जीवन का मापदंड नहीं हैं। सोशल मीडिया में जो कुछ भी दिखता है वह सत्य नहीं होता। रील लाइफ और रीयल लाइफ में अंतर होता है।

अत: हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया एक दोधारी तलवार की तरह है। इसका प्रभाव बच्चों के जीवन पर सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों रूपों में पड़ सकता है। यह बच्चों को ज्ञान, रचनात्मकता और वैश्विक जुड़ाव का माध्यम प्रदान करता है। वहीं, इसके अनुचित उपयोग से उनके मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। माता-पिता, शिक्षकों और समाज की जिम्मेदारी है कि वे बच्चों को सोशल मीडिया के सुरक्षित और जिम्मेदार उपयोग के लिए प्रेरित करें। सही दिशा और मार्गदर्शन के साथ, सोशल मीडिया बच्चों के जीवन को समृद्ध और प्रेरणादायक बना सकता है।

सचिन प्रसाद
कनिष्ठ अनुवादक

नोटिफिकेशन

मेरे मोबाइल में छह बजे का अलार्म है। यानी छह बजे से पहले नहीं उठना है। पाँच बजकर तीस मिनट के आस-पास मेरी नींद खुली। भारीपन की अनुभूति ने मुझे जगने पर मजबूर कर दिया। मैं उठा, बाथरुम गया, भारीपन की अनुभूति विसर्जित की और आकर लेट गया। आषाढ़ के बरसाती दिन की सुहानी सुबह, हल्की मनःस्थिति और सही समय पर अलार्म बजने की बेफिक्री- नींद गहरी आई।

छह बजे। अलार्म भी बजा होगा। कई अतिरिक्त दस मिनट बीते। अलार्म का कार्यकाल भी बीत गया। मेरी नींद नहीं खुली। नींद अलार्म से खुलती भी नहीं है- नींद टूटती है कर्तव्यबोध से, छोड़े काम पूरा करने की दुश्चिंता से, पीछे रह जाने के भय से।

लगभग साढ़े सात बजे, पौने आठ बजे मोबाइल से छोटी-सी, सहमी सी आवाज आई- 'टुन'। जैसे चोरी-छिपे कोई घर घुस आया हो और नीचे रखे चम्मच से टकरा गया हो। मैं अकचका कर उठ गया। उस नोटिफिकेशन के आवाज से मेरी नींद खुल गई। ऐसा होता है। कभी-कभार नहीं हर-बार। घनघनाती, चीखती-चिल्लाती, बार-बार खुद को दोहराती अलार्म की आवाज से आंख नहीं खुलती है पर सहसा एक सहमी-सी आवाज हमारा आंख खोल देती है। बहरहाल, कैलेंडर का नोटिफिकेशन था इग्नोर कर दिया।

देखा कि धूप कैलेंडर से उतरकर खिड़की के रास्ते जाने की तैयारी में थी। मुझे भी ऑफिस निकलना था। जल्दी-जल्दी झाड़ू लगाया और कचरे को एक काले पॉलिथीन में भरकर बालकनी से गिरा दिया। बालकनी में गया तो उधर लाउडस्पीकर की आवाज आ रही थी। उसी तरफ पुलिस की गाड़ी भी खड़ी दिखी। वही कमांडर। एक सिपाही पैर बाहर निकाल कर सीट पर बैठे-बैठे एक लाउडस्पीकर का माइक

मुंह में घुसेड़े रटे जा रहा था- "सर्वसामान्य को सूचित किया जाता है कि आज दिनांक तीन जुलाई दो हजार बाईस से सरकार द्वारा सिंगल यूस्ड पॉलिथीन पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया है। जो भी दुकानदार पॉलिथीन यानी 'चमकी' में सामान बेचते पकड़ा गया, उस पर भारी जुर्माना लगेगा तथा दंडात्मक कार्रवाई भी की जाएगी। इसके लिए दुकानदार को तीन माह का सश्रम कारावास, जुर्माना या दोनों हो सकता है। सौजन्य से- "सूचना एवं प्रसारण प्रसारण मंत्रालय, बिहार सरकार".... सर्वसामान्य को सूचित किया....।"

मैंने अभी-अभी अपना काला पॉलिथीन नीचे फेंक दिया था। मैं तुरन्त रसोईघर देखने गया कि कहीं कोई पॉलिथीन बची है या नहीं। मैं सोचने लगा, सामान लाने-ले जाने में भारी असुविधा हो जाएगी। आटा, चावल, दाल तो थैले में भी आ सकता है पर यात्रा के दौरान चप्पल-जूते बैग में डालकर कैसे ले जाऊंगा? भीगे, सूखे कपड़े को बैग में एक साथ मिलाकर तो नहीं रख सकता न और रोज-रोज गीला कचरा क्या पेपर में डालकर फेंकूंगा? फिर "गीला-कचरा-सूखा-कचरा" गीत का क्या होगा? एक भी पॉलिथीन नहीं बचा था। अब तो भारी असुविधा हो जाएगी। मेरा 'असुविधा-रुदन' रुकने का नाम नहीं ले रहा था। पर देर हो रही थी। मैं स्नान करने चला गया। बूंदा-बूंदी भी शुरू हो गई। अभी बारिश मद्धिम ही थी इसलिए जल्दी-जल्दी ऑफिस के लिए निकल गया। लाउडस्पीकर की आवाज धीमी होने लगी और वर्षा तेज। बाहर निकला तो देखा कि पुलिस की गाड़ी पास के एक किराना स्टोर की तरफ जा रही थी। मुझमें उत्सुकता और जिज्ञासा का एक साथ संचार हुआ। जूते की चट-चट आवाज के साथ उठने वाले मलिन छींटे की परवाह किए बगैर मैं झटकते हुए दुकान की तरफ बढ़ने लगा। मेरे कदमताल के साथ बारिश की बूंदें भी तीव्रतर होती गईं। पुलिस की बेपर्दा जीप में हाशिए पर बैठा बेचारा सिपाही भीगने लगा। लगभग तीन तरफ से खुली जीप में बैठा आदमी दिशाहीन बारिश में भी भीग ही जाता है। जीप से निकलकर एक सिपाही किराना दुकान में गया और बोला- "तनि दो चार गो चिमकी लाउ त। मोबाइल भीग जैते त दिक्कत होय जैते।" उसकी आवाज में पुलिसिया रौब नहीं था। वह रौब से बोलता भी क्यों? डरा-धमका कर कुछ झीटना थोड़ी था? दुकानदार से चमकी मानना तो एक सहज बात थी। वह भी पुलिस वाले के लिए। पर दुकानदार फटी और सहमी आंखों से उस सिपाही को घूरे जा रहा था। सिपाही हाथ आगे बढ़ाए आशान्वित था कि अब देगा, तब देगा। दुकानदार ने पहले आंखों से कहा, फिर आंगिक भंगिमाओं से। सिपाही समझ नहीं पाया। दुकानदार कुछ समय पश्चात लड़खड़ाती जुबान में बोला - "ना हयि।" सिपाही मुस्कुराते हुए बोला - "डर गैल्ही? चिन्ता के बात न हयि।" जब दुकानदार पूरी तरह आश्वस्त हो गया तो उसने फ्रीज में से निकाल कर एक चुटकी पॉलिथीन सिपाही को दे दिया। सिपाही तोंद में अपना मोबाइल पोछकर पॉलिथीन में लपेटने लगा। लपेटते लपेटते उसने कहा- "यह सब रुक पाएगा? हम तो 3 साल से लगातार यही कर रहे हैं। हर बार बंदी होता है पर बंद नहीं होता है। पता नहीं कौन बुड़बक भरखर बरसात में 'प्लास्टिक बैग फ्री डे' बना दिया है? जाड़ा-उड़ा में मनाता तो थोड़ा-बहुत सफलो होता। तु बेचो, बेचो, निफिकिर बेचो। खाली संभल के रहि।"

अरे, हां! आज इंटरनेशनल प्लास्टिक बैग फ्री डे है। सुबह उसी के नोटिफिकेशन ने तो मुझे जगाया था। क्या सचमुच जगाया था?

अंकित कुमार झा
लेखाकार

तारापीठ दर्शनः एक सुखद अनुभूति

मुझे धार्मिक जगहों की यात्रा बहुत पसंद है। जब भी छुट्टियाँ होती हैं या धार्मिक स्थल पर कोई विशेष दर्शन होता है तो मैं वहाँ जाने का प्रयास करती हूँ। वैसे भी कहा जाता है कि जब जहां से बुलावा आता है भक्त वहाँ दर्शन के लिए पहुँच जाता है। यहाँ कोलकाता में तो काली मंदिर, इस्कॉन मंदिर जैसे कई महत्वपूर्ण और दर्शनीय धार्मिक स्थल हैं जहां भक्त न केवल अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए बल्कि मन की शांति के लिए भी जाते हैं। मैं भी इन मंदिरों में प्रायः दर्शन के लिए जाती रहती हूँ।

अभी हाल-फिलहाल में मैं बीरभूमि जिले के रामपुर हाट क्षेत्र में स्थित तारापीठ मंदिर में दर्शन करने गई थी। यहाँ जाने का विचार मन में कई दिनों से आ रहा था लेकिन किसी न किसी कारण से मैं नहीं जा पाती थी। मैं कोलकाता में रहती हूँ। यहाँ से तारापीठ जाने के लिए कलकत्ता से कई बसें मिल जाती हैं। हावड़ा और सियालदह के साथ कोलकाता स्टेशन से कई ट्रेनें भी हैं जो रामपुर हाट तक पहुंचा देती हैं जहां से तारापीठ मंदिर की दूरी लगभग 10 किलोमीटर है। तारापीठ रोड भी एक स्टेशन है जहां से मंदिर तक जाया जा सकता है। तारापीठ मंदिर जाने के लिए रामपुर हाट स्टेशन से कई साधन उपलब्ध हैं जो कि मंदिर तक पहुंचा देते हैं। टैक्सी यहाँ आसानी से मिल जाती है।

तारापीठ मंदिर, द्वारका नामक छोटी सी नदी के किनारे तारापीठ नामक गाँव में स्थित है। यह मंदिर माँ तारा को समर्पित है जो कि तांत्रिक साधकों में बहुत महत्व रखती हैं। तांत्रिकों साधकों के अलावा सामान्य भक्तगण भी भक्तिभाव से यहाँ दर्शन करने आते हैं। यह मंदिर बहुत विशाल नहीं है लेकिन इसकी बनावट बंगाल के सामान्य मंदिरों जैसी ही है। मंदिर धार्मिक पर्यटकों में भी बहुत लोकप्रिय है।

मैंने इसी साल की सर्दी में पूरे परिवार के साथ तारापीठ मंदिर में माँ तारा के दर्शन करने का मन बनाया। शुक्रवार को

ऑफिस से छुट्टी के बाद घर पहुंचकर मैंने जरूरी तैयारी कर ली और पूरे परिवार के साथ टैक्सी से हावड़ा स्टेशन पहुँच गई। हमारी ट्रेन रात को दस बजकर चालीस मिनट पर खुलने वाली थी। लेकिन कोलकाता में भीड़भाड़ और ट्रैफिक अधिक होने के कारण आने-जाने में बहुत समय लग जाता है। कभी-कभी घंटों भी लग जाते हैं इसलिए हम 09:30 तक हावड़ा स्टेशन पहुँच गए। यहाँ भी भारी भीड़ होती है इसलिए जब ट्रेन प्लेटफ़ॉर्म पर आई तो हम सब आराम से अपनी सीट पर बैठ गए। यह एक सर्द रात थी और इस साल ठंड भी बहुत पड़ रही थी इसलिए गरम कपड़ों के साथ ओढ़ने के लिए साल भी सभी ने रखी थी।

हावड़ा से रामपुर हाट की दूरी लगभग 210 किलोमीटर है। ट्रेन ने रात को लगभग ढाई बजे हमें रामपुर हाट स्टेशन पर पहुंचा दिया। वहाँ से टैक्सी लेकर हम तड़के सुबह तारापीठ मंदिर परिसर में पहुँच गए। दर्शन का दिन शनिवार था और इस दिन यहाँ बहुत भीड़ होती है। आज भी बहुत भीड़ थी। ऐसे तो यहाँ प्रतिदिन सुबह छह बजे से लेकर नौ बजे रात तक मंदिर दर्शनार्थियों के लिए खुला रहता है लेकिन कभी-कभी भीड़ को संभालने के लिए दोपहर बारह बजे से तीन बजे तक मंदिर को बंद कर दिया जाता है। हमें एक लाइन में अपनी बारी का इंतजार करना पड़ा। हम लगभग चार घंटे लाइन में रहे और उसके बाद हमें माँ तारा के दर्शन का अवसर मिला। दर्शन से हम सभी के मन को बहुत शांति मिली। उसके बाद हमने प्रसाद लिया और मंदिर परिसर के शांत, भक्ति से भरे और खुले वातावरण का आनंद लिया। शहर की भागम-भाग से दूर गाँव का यह वातावरण बहुत सुकून देता है। खुले आसमान में धूप से सर्दी का भी अनुभव नहीं हुआ। मंदिर के पास की दुकान से कुछ खरीददारी करके हम सभी वापस कोलकाता के लिए ट्रेन पकड़ने के लिए रामपुर हाट पहुंचे। रात हो रही थी। लगभग सात बजे हमने हावड़ा के लिए ट्रेन पकड़ी और रात को नौ बजे तक हम हावड़ा पहुँच गए। लगभग ग्यारह बजे हम अपने घर पहुंचे। माँ तारा के इस दर्शन से सभी के मन को प्रसन्नता हुई और मेरे मन में भी शांति और भक्ति का भाव और गहरा हो गया।

सुनीता राउत
एमटीएस

चाह मुस्कुराहट की

आप दिल में हो मेरे
अपने दिल में बसाओगी क्या?
मैं जब भी हसूँ तेरा चेहरा देख
संग-संग तुम भी मुस्कुराओगी क्या?
वादा किया है खुद से, खुश रखने का तुम्हें
नाराज जब भी होगी, मुझे बताओगी क्या?
मैं जब भी हसूँ तेरा चेहरा देख
संग-संग तुम भी मुस्कुराओगी क्या?

निकल जाऊँ कभी जिंदगी की दौड़ में थोड़ा आगे
तुम खींच कर दामन मेरा, कदम से कदम मिलाओगी क्या?
मैं जब भी हसूँ तेरा चेहरा देख
संग-संग तुम भी मुस्कुराओगी क्या?
नहीं देख सकूँगा तुम्हें, कभी किसी तकलीफ में
अपने सारे गम मुझे बताओगी क्या?
मैं जब भी हसूँ तेरा चेहरा देख
संग-संग तुम भी मुस्कुराओगी क्या?

वादा है हमारा करेंगे मिलके,
हर ख्वाब जिंदगी के पूरे
तुम धीरे से मेरी आँखों में बस जाओगी क्या?
मैं जब भी हसूँ तेरा चेहरा देख
संग-संग तुम भी मुस्कुराओगी क्या?
अब बता नहीं सकता
किस हद तक प्यार है तुझसे
तुम जब भी महसूस करोगी तो मुझे बताओगी क्या?
मैं जब भी हसूँ तेरा चेहरा देख
संग-संग तुम भी मुस्कुराओगी क्या?

मैं कोई शायर तो नहीं पर लिख दिया हूँ यूं ही कुछ
अगर पसंद आया तुमको,
तो गले सबके सामने लगाओगी क्या?
मैं जब भी हसूँ तेरा चेहरा देख
संग-संग तुम भी मुस्कुराओगी क्या?

कौशल कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

जिंदगी का तो यही आलम है

जिंदगी का तो यही आलम है,
दर्द की चादर में सिमटे
इस टूटे दिल का साथ ही कायम है

ये दिल जो तेरा टूटा है,
साथ किसी से छूटा है
प्यार जो तेरा अधूरा है
तनहाई का साथ जो पूरा है
मुस्कान में छिपी एक गम की परछाई है
अल्फ़ाज़ों में रोती जिसकी गवाही है

तो बहुत हुई ये जिद्द, अब इस दर्द को जाम समझकर पी ले
वादा कर खुद से और असल जिंदगी को जी ले।
माना कुछ यादें मीठी हैं
पर जहर से कम न वो तीखी हैं

भले ही मोहब्बत जीतने में हारा है तू,
पर दिल जीतने में न नकारा है तू
जान देते हैं लोग जिस प्यार में,
जाने दे दिया तूने उन्हें इसके इकरार में

दुआ कर, मिले उन्हें कोई तुझसे भी ज्यादा चाहने वाला
साथ निभाए जो उनका जिंदगी भर सारा।
उनकी खुशी में ही खुद की खुशी को ढूंढ ले
उनका प्यार न सही, तो दुआ ही समेट ले

दर्द की जंजीरों को तोड़ अब बाहर निकल,
ख्वाबों को ख्वाहिशों में बदल
और लक्ष्य की ओर कूच कर
बंधन तो टूटने एक दिन सबसे है
आगे बढ़ना ही हमारे बस में है

खोया है तुमने जिसे, सोचा न था खोओगे कभी
तो पाओगे किसी ऐसे को, जिसे सोचा न हो कभी
तो ये रोज का रो-रो कर जीना
घुट-घुट कर मरना क्यूँ
हासिल कर कुछ ऊंचा, और जी ले जिंदगी कुछ यूं।

नए चेहरों से मिलना, मिलके बिछड़ना है
यादें बनाना और बना के मिटाना है
गिरना-संभलना, और फिर खड़े होना है
जिंदगी को जीने का आलम कुछ ऐसा ही है।

सत्यम कुमार
डीईओ

दो कविताएं

बेबस बाप

आता है 'बार' में बार-बार
वह बूढ़ा बैठकर कोने में पीता है,पिलाता है
और कहना चाहता है-
कि रहता है उसका इकलौता बेटा,
एकमात्र संतान ब्रिटेन में
भेजता है पैसा हर महीने
कमी नहीं है किसी बात की, मगर.....

यह खुशी बाहरी है सुनाने-दिखाने और
अपने मन को बहलाने के लिए
हकीकत तो यह है कि नहीं मिलता समय
उसके बेटे को
न उसकी ब्रितानी बहू को
आकर बाँट ले दुख-दर्द
मिलकर पूछ ले हाल-चाल
साल में एक बार।

बेबस बूढ़ा बाप क्या करे ?
वह पीता है अकेलेपन को बीयर में डुबोकर।
वह बस इतने से ही खुश है
कि रहता है उसका बेटा विदेश में..।

बड़े घर की चाय

आप बड़े हैं, आप आदरणीय हैं
हम जब भी आपके घर जाते हैं
आप हमें एक प्याली चाय पिलाते हैं
इसका मतलब यह नहीं कि
आप मेरा हित चाहते हैं..
एक प्याली चाय के साथ
आप भाषण भी बहुत पिलाते हैं
अपने मन की तुष्टि के लिए
अपना दर्शन भी पिलाते हैं
आप यह भी जताते हैं कि
आपका कद मुझसे बड़ा है
आपके पास ये है, वो है
आपने ये किया, वो किया
और मैं आपकी चाय के साथ
आपका 'ये' और 'वो' भी पी लेता हूँ
मुझे मालूम है कि जिस दिन
आपकी चाय के साथ आपका 'ये' और 'वो'
मुझे हजम नहीं होगा
आपका मैं प्रिय नहीं रहूँगा
आपको मालूम है
कि आप मेरा घर नहीं चलाते हैं
फिर हर बात पर आप
अपनी ही पतंग क्यों उड़ाते हैं?
अगर आप किसी को अपना मानते हैं
अपना बनाते हैं
तो उसे भौतिकता की आंच में
क्यों जलाते हैं..?

चंद्रशेखर भगत
पर्यवेक्षक

ये नववर्ष हमें स्वीकार नहीं

ये नववर्ष हमें स्वीकार नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं।
है अपनी ये तो रीत नहीं,
है अपना ये व्यवहार नहीं।

धरा ठिठुरती है सर्दी से,
आकाश में कोहरा गहरा है।
बाग, बाजारों की सरहद पर,
सर्द हवा का पहरा है।

सूना है प्रकृति का आँगन
कुछ रंग नहीं, उमंग नहीं।
हर कोई है घर में दुबका हुआ,
नववर्ष का ये कोई ढंग नहीं।

चंदमास अभी इंतजार करो,
निजमन में तनिक विचार करो।
नये साल नया कुछ हो तो सही,
क्यों नकल में सारी अक्ल बही।

उल्लास मंद है जन-मन का,
आयी है अभी बहार नहीं।
ये नववर्ष हमे स्वीकार नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं।

संध्या कुमारी
पत्नी:राजेश कुमार, डीईओ

वन्दे मातरम्

हिंदी पत्रिका वन्दे मातरम् प्रकाशित होगी इस बार,
निकला है आदेश कविता-कहानी-रचना
लिखकर जमा करने को इस बार
खाता कलम लेकर बैठ गया हूँ कुछ लिखने के लिए
क्या लिखूँ यह सोचते-सोचते बीत गया समय

सभी अपना मत लिख सकतें है अपनी भाषा में
मौलिक रचना होने पर ही प्रकाशित होगी पत्रिका में
रचनाएं हिंदी भाषा में होगी
इसमें मेरी सहायता करेगा हिंदी अनुभाग

सभी का प्रयास रहता है कुछ लिखें इस बार
हिंदी भाषा का हो विकास
यही चाहते हैं हमारे कार्यालय प्रमुख
पत्रिका की रचनाएं अधिक हों हर बार

पत्रिका प्रकाशन में जिनका सबसे ज्यादा है योगदान
हिंदी अनुभाग के अधिकारी
और कार्मिकों की बात न करने से होगी भूल
उनकी अनुप्रेरणा से, हृदय से यूँ ही निकलीं
सोचते-सोचते कब ये कुछ पंक्तियाँ लिख लीं
नववर्ष की शुभकामनाएं आप सब को
रचनाओं के नभ में नमस्कार सब को

तुषार बरन मारिक
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान महालेखाकार महोदय द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन, संबोधन और प्रशासन हिंदी सेल के अधिकारी एवं कार्मिकगण

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001